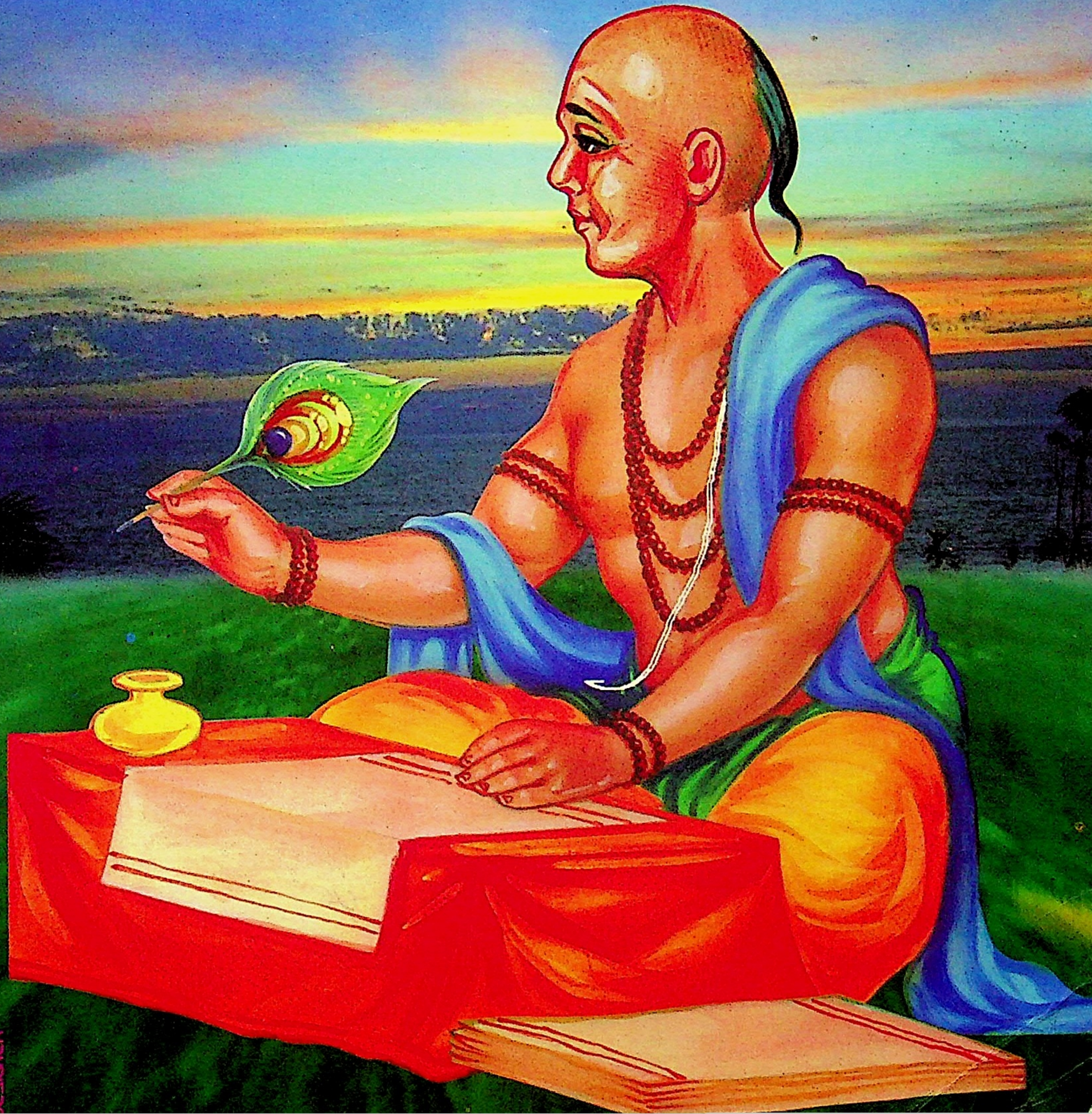
ब्राह्मण गोत्रावली



ब्राह्मण गोत्रावली

लेखक

इन्द्रमणि पाठक

पटखौली दक्षिण मनियर

बलिया

उ० प्र०

धार्मिक, ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र, टेक्निकल व इण्डस्ट्रियल पुस्तकों के प्रकाशक

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6

फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

प्रकाशक :
डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स .
110, चावड़ी बाजार,
चौक बड़शाहबुल्ला (दिल्ली)
दिल्ली-110006
फोन : 23273220, 23251630
9811648916-17

मूल्य : Rs. 120/-
(एक सौ बीस रुपये मात्र)

ब्राह्मण के विषय में स्मृतिकारों के विचार

ब्राह्मणस्यतुदेहोऽयं नोपभोगाय कल्पते।

ब्राह्मण का शरीर भोग-विलास के लिए नहीं है।

वशिष्ठ स्मृति

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

इस देश में उत्पन्न ब्राह्मणों से पृथ्वी के सारे मनुष्य अपने-अपने आचरण की शिक्षा प्राप्त करें।

मनुस्मृति

येषां सदा वै श्रुतिपूर्ण कर्णाः।
जितेन्द्रियाः प्राणिवधे निवृताः॥
प्रतिग्रहे संकुचिता गृहस्था-
-स्ते ब्राह्मणा स्तारयितुं समर्थाः॥

भगवान् कृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं कि हे राजा इन्द्रियजीत! अहिंसक तथा विद्वान् ब्राह्मण गृहस्थ होते हुए भी दूसरों को तारने में समर्थ होते हैं।

ब्राह्मण की पहचान

ब्राह्मण सो जो ब्रह्म पिछाने, बाहर जाता भीतर आनै।
पांचों बस करि झूठ न भाखै, आतम विद्या पढ़े पढ़ावे॥
परमातम में ध्यान लगावै, काम, क्रोध, मद, लोभ न होई
चरणदास कहै बाभन सोई॥

(2)

ब्राह्मणः साधवो शान्ता निस्संगा भूत वत्सलाः।
एकान्ताः भक्ता अस्मासु निरवैरः समदर्शिनः॥

भगवान् शिव मार्कण्डेयजी से कहते हैं कि ब्राह्मण स्वभाव से ही शान्तचित्त, परोपकारी और अनाशक्त होते हैं। वे समदर्शी होते हैं, दुखी व्यक्तियों को सुखी बनाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं तथा हमारे अनन्य भक्त होते हैं।

ब्राह्मण के 15 लक्षण

विभिन्न शास्त्रों में ब्राह्मण के 15 लक्षण उल्लिखित हैं—

1. मन से पाप (बुरे कर्मों) का चिन्तन न करना।
2. इन्द्रियों को बुरे आचरण से दूर रखना।
3. जितेन्द्रिय रहकर धर्मानुष्ठान करना।
4. सुख, दुःख, निन्दा, स्तुति आदि द्वन्द्वों से तटस्थ रहना।

5. कोमल स्वभाव
6. निरभिमानता
7. सरलता
8. ईश्वर बोध
9. धर्म बोध
10. विद्या
11. पुनर्जन्म का सिद्धान्त मानना
12. तप
13. अपने से बड़ों का सम्मान तथा अपने से छोटे के प्रति प्यार
14. सेवा धर्म में तत्पर रहना
15. समता (सभी मनुष्यों को अपने जैसा समझना)

प्रस्तावना

हमारे देश के पढ़े-लिखे ब्राह्मण युवकों को भी अपने गोत्र, वेद, उपवेद, शाखा-सूत्र आदि की पूरी जानकारी नहीं है।

कुछ अति प्रगतिशील ब्राह्मण युवक तो नहीं, किन्तु अधिकांश ब्राह्मण युवकों में यह जिज्ञासा है कि गोत्र, प्रवर, शाखा, सूत्र क्या हैं ? इसकी परम्परा क्यों और कैसे पड़ी ? हमारे पूर्वज पहले कहां रहते थे ? या हम किस स्थान के मूलवासी हैं ? इत्यादि बातें जानने की कभी-कभी इच्छा उत्पन्न हो जाती है। उन जिज्ञासु ब्राह्मण युवकों की जिज्ञासा को तृप्त करने के लिए डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स के प्रकाशक श्री अमित अग्रवालजी ने, ''**ब्राह्मण गोत्रावली**'' नाम से एक छोटी पुस्तक सरल एवं बोधगम्य भाषा में लिखने के लिए निवेदन किया।

पुराणकर्ताओं ने भारतवर्षीय ब्राह्मणों को विंध्योत्तरवासी और विंध्व दक्षिणवासी कहकर दो भागों में विभाजित कर दिया और उनका नाम गौड़ तथा द्रविड़ रखा। विंध्योत्तरवासी गौड़ और विंध्य दक्षिणवासी द्रविण। विभिन्न क्षेत्र विशेष में रहने के कारण दोनों के 5-5 भाग हो गये, जैसे—**गौड़ ब्राह्मणों में**—सरस्वती नदी के आसपास रहने वाले ब्राह्मण सारस्वत:, कन्नौज के आसपास के क्षेत्र में रहने वालों को कान्यकुब्ज, मिथिला में रहने वालों को मैथिल, अयोध्या के उत्तर सरयू नदी से पार रहने वाले सरयू पारीण, उड़ीसा में रहने वाले उत्कल तथा शेष भाग में रहने वाले गौड़ कहलाये।

इसी प्रकार द्रविण ब्राह्मणों को क्षेत्रीय आधार पर 5 भागों में विभक्त किया गया है, जैसे—कर्नाटक में रहने वाले कर्नाटक ब्राह्मण, आंध्रा में रहने वाले 'तैलंग ब्राह्मण', महाराष्ट्र में मराठी, गुजरात में रहने वाले गुर्जर ब्राह्मण तथा शेष भाग में रहने वाले द्रविण कहलाते हैं।

इस लघु पुस्तिका में केवल विंध्योत्तर वासी ब्राह्मणों, जैसे—गौड़, सारस्वत, मैथिल, कान्यकुब्ज, सरयू पारीण तथा उत्कल ब्राह्मणों के गोत्र, प्रवर, शाखा, सूत्र, शिखा, छन्द, उपवेद, आस्पद (उपाधियां) तथा मूल गांवों का संक्षेप में वर्णन किया गया है।

आशा है, जिज्ञासु ब्राह्मण युवकों की जिज्ञासा कुछ हद तक शान्त होगी, किन्तु ब्राह्मणों का ऋषि गोत्र एक सागर के समान है। उसमें से कुछ मोती ही चुनकर इस पुस्तक में रखने का प्रयास किया गया है।

कृपालु पाठकों से निवेदन है कि यदि किसी कुल के गोत्र प्रवर आदि के निर्णय में विसंगतियां दिखायी दें, जो उनकी परम्पराओं के विरुद्ध हों, तो कृपया हमें सूचित करें, जिससे अगले संस्करण में सुधार किया जा सके।

भवनिष्ठ

इन्द्रमणि पाठक

ग्रा० पटखौली दक्षिण

मनियर—बलिया

उ० प्र०

अनुक्रम



ॐ मंगल मूर्त्तये नमः

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंधयते गिरिम्।
यच्च कृपा तमऽहं वन्दे परमानन्द माधवम्॥

मनुस्मृति में मानव के लक्षण दिये हैं।

धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रहः।
धी विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥

जिस व्यक्ति में धैर्य, क्षमा, इन्द्रियों का निग्रह करने की क्षमता, चोरी न करने की प्रेरणा, पवित्रता, काम, क्रोधादि षडरिपुओं का दमन करने की शक्ति, विद्या, सत्य भाषण और अक्रोध (क्रोध पर नियन्त्रण हो) वह मनुष्य है; और इन लक्षणों से युक्त मनुष्य जिस व्यक्ति को अपना गुरु मान ले, वह 'ब्राह्मण' है।

ब्राह्मण कर्म से होता है या जन्म से

प्राचीनकाल से यह विवादास्पद रहा है कि ब्राह्मण जन्म से होता है या कर्म से। जो लोग ब्राह्मण को कर्म से होना मानते हैं, उनके पक्ष में पुराणों का प्रबल प्रमाण है, जैसे—

तपस्या से ब्रह्मर्षि होने वाले ऋषियों की सूची

1. शृंगी ऋषि हिरनी के गर्भ से पैदा हुए थे।
2. कौशीक ऋषि कुश के गुच्छे से।
3. महर्षि वशिष्ठ वेश्या से।
4. गौतम ऋषि शशकी से।
5. वेदव्यासजी कुंवारी कन्या से।
6. पाराशरजी चाण्डाली से।
7. विश्वामित्र क्षत्राणी से।
8. नारदजी दासी से।
9. मातंग ऋषि हथिनी से पैदा हुए थे।

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्त्तण्ड)

ये ऋषिगण ब्राह्मण और ब्राह्मणी के रज वीर्य से नहीं पैदा हुए थे, किन्तु अपनी तपस्या से लोक में ब्रह्मर्षि कहलाये।

किन्तु विद्वानों का एक प्रबल पक्ष ऐसा भी है, जो ब्राह्मण होने के लिए ब्राह्मण कुल में जन्म को अनिवार्य मानता है। हमारे देश के ब्राह्मण परिवार और पूरा देश भी इस द्वितीय पक्ष को ही मान्यता देता है, जबकि उपरोक्त अधिकांश ऋषियों के गोत्र आज भी प्रचलित हैं, जिनकी कुलीनता पर किसी

की अंगुली नहीं उठ सकती। इन ऋषियों को भी जन्मना ब्राह्मण होना ही समाज ने मान लिया है। हमारा लक्ष्य भी निरर्थक उपरोक्त विवाद में जाने का नहीं है। वर्तमान में जो गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, सूत्र आदि प्रचलित हैं, उसे ही आम ब्राह्मण समुदाय की सेवा में प्रस्तुत करना है।

ब्राह्मण समाज का हर व्यक्ति किसी-न-किसी गोत्र से सम्बन्धित है। तो आइये, इन गोत्र, शाखा, सूत्र आदि पर विचार करें।

गोत्र

किसी वंश के मूल व्यक्ति की वंश परम्परा जहां से प्रारम्भ होती है, उस वंश का गोत्र उसी के नाम से प्रचलित हो जाता है। सारा ब्राह्मण समाज किसी-न-किसी ऋषि की ही औलाद है। इस प्रकार जो समाज जिस ऋषि से प्रारम्भ हुआ है, वह ऋषि उस समाज का गोत्र कहलाता है।

जैसे महर्षि वशिष्ठ से जो वंश परम्परा चली, वे अपना गोत्र वशिष्ठ बतलाते हैं।

(2)

गोत्र का एक दूसरा भी अर्थ होता है—गो कहते हैं गाय को; 'त्र' कहते हैं, रक्षा करने को। पहले ऋषियों के आश्रमों में गायें होती थीं। उनकी रक्षा का पूरा भार उस आश्रम में रहने वाले विद्यार्थियों पर होता था। वे विद्यार्थी जहां कहीं जाते थे, वहां अपने को अपने गुरु या उस आश्रम के प्रमुख ऋषि के गोत्र का बतलाते थे। बाद में उनके वंशधरों में अपने को उसी गोत्र का बताने की परम्परा पड़ गयी।

यह विचारधारा संस्कृत के प्रख्यात विदेशी विद्वान् **मैक्समूलर** की है।

गोत्रों की उत्पत्ति सर्वप्रथम ब्राह्मण वर्ग में हुई। जब इस वर्ग का विस्तार हुआ, तो अपनी पहचान बनाने के लिए उन्होंने अपने आदि पुरुष के नाम पर गोत्र धारण कर लिये।

डॉ० पुरुषोत्तम लाल भार्गव का मत है कि आज के ब्राह्मणों का गोत्र वैदिककाल के सप्तर्षियों के वंशों या मूल गोत्रों से सम्बन्धित है। ये वंश थे—

आंगिरस, भार्गव, आत्रेय, काश्यप, वशिष्ठ, अगस्त्य तथा कौशिक।

इन गोत्रों के मूल ऋषि हैं—

अंगिरा, भृगु, अत्रि, कश्यप, वशिष्ठ, आगस्त्य और कुशिक।

प्रवर

गोत्रों का प्रवर से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए गोत्रों का प्रचलन होने के साथ-ही-साथ उनका **प्रवर** सम्बन्ध जोड़ दिया गया।

प्रवर का अर्थ होता है—"श्रेष्ठ"। प्रवर उन ऋषियों को कहते हैं, जो गोत्रकारों के पूर्वज और महान् थे।

गोत्र और प्रवर का अन्तर बताते हुए श्री पाण्डुरंग वामन शास्त्री कहते हैं कि गोत्र उन आर्वाचीन ऋषियों के नाम से हैं, जो परम्परा द्वारा किसी व्यक्ति या वंश के पूर्वज माने जाते हैं।

किन्तु डॉ० राजबली पाण्डेय का कथन है कि "प्रवर शब्द उतना पुराना नहीं है, जितना गोत्र।" यह कथन पुराणों और स्मृतियों से भी सिद्ध होता है, जैसे—असित देवल आदि कश्यप ऋषि के वंशज भी हैं और कश्यप गोत्र के प्रवर भी हैं।

इस प्रकार गोत्र प्रवर्तक मूल ऋषि के बाद में होने वाले व्यक्तियों में जो महान् हो गये, वे उस गोत्र के 'प्रवर' कहे जाते हैं।

गण

जिन ऋषि परिवारों को विवाह के सन्दर्भ में एक इकाई मान लिया गया है, जिसमें वे विवाह नहीं कर सकते, वे सब एक गण माने जाते हैं। एक गण का व्यक्ति दूसरे गण में ही विवाह करेगा।

पक्ष

गण का ही विकसित रूप पक्ष है। इसके विस्तार से शाखाएं निर्मित होती हैं।

वेद

वेद अपौरुषेय है। ईश्वर की कृपा से ऋषियों के अन्तःकरण में इसकी रचनाएं प्रकट हुई थीं। इनकी संख्या चार है। हर व्यक्ति के लिए चारों वेदों—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—का सांगोपांग अध्ययन करना कठिन हो गया, तो गोत्र विशेष के ऋषियों ने किसी एक वेद के अध्ययन की परम्परा डाली; क्योंकि उस समय लेखन कला का आविष्कार नहीं हुआ था। इसलिए 'वेद' मन्त्रों को सुनकर ही पढ़ा या याद रखा जा सकता था।

उपवेद

प्रत्येक वेद का एक-एक उपवेद भी होता है। ये उपवेद व्यवहारिक हैं। इनसे मानव की सेवा करने का अवसर मिलता है। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद, यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद, सामवेद का उपवेद गान्धर्व वेद और अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्य वेद है।

ये उपवेद जीविकोपार्जन में सहायक होते हैं।

शाखा

जब किसी एक गोत्र का व्यक्ति उस गोत्र के लिए निर्धारित 'वेद' का पूर्णरूपेण अध्ययन करने में असमर्थ होने लगा, तो ऋषियों ने वैदिक परम्परा को जीवित रखने के लिए शाखाओं का निर्माण किया। इस प्रकार प्रत्येक गोत्र के लिए अपने वेद की किसी शाखा विशेष का अध्ययन अनिवार्य कर दिया गया।

सूत्र

सूत्र शाखाओं से भी सूक्ष्म होते हैं। जब गोत्रानुयायियों के लिए शाखाएं भी भारी पड़ने लगीं, तो परवर्ती ऋषियों ने उन शाखाओं के भाव को सूत्र रूप में परिणित कर दिया। इस प्रकार प्रत्येक गोत्रावलम्बी को अपने सूत्र की जानकारी परमावश्यक है।

शिखा

अपनी पहचान बनाये रखने के लिए शिखा (चोटी) बायें और दायें से घुमाकर बांधने की परम्परा डाली गयी। किसी के गोत्र में दाहिने से गांठ लगाई जाती है और किसी में बायें से।

पाद

यह भी अपनी परम्परा की पहचान बनाये रखने वाली एक विधि है। किसी गोत्र वाले पहले दाहिना पांव धोते हैं, तो किसी गोत्र की परम्परा है, बायां पांव धोने की।

देवता

प्रत्येक वेद या शाखा का पठन-पाठन करने वाले किसी खास देवता की आराधना करते हैं। वही उनका कुल देवता है।

छन्द

जिस गोत्र के लिए जो वेद पढ़ना अनिवार्य है, वह वेद जिस छन्द में गाया जाता है, वही उस गोत्र का छन्द होता है।

मूल स्थान

गोत्रकारों ने जिस मूल स्थान पर रहकर अपना वंश चलाया, वह उनका आदि स्थान या शासन कहलाता है।

दिशा या द्वार

यज्ञ मण्डप में अध्वर्यु जिस दिशा से प्रवेश करता है या जिस दिशा में बैठता है, वही उस गोत्र वाले की दिशा या द्वार होता है।

आस्पद

जिन नामों या स्थान के नाम से जिन वंशों की प्रसिद्धि होती है, उसे आस्पद कहा जाता है; जैसे—मामखोर के शुक्ल आदि।



ब्राह्मण और उनके भेद

शास्त्रों के अनुसार ब्रह्माजी ने एक मनुष्य की रचना की। उसको अपने मुख से उन्होंने 'ब्राह्मण' कहा। तब से यह मान लिया गया कि ब्राह्मण, ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुआ है।

उक्त ब्रह्मर्षि के दो पुत्र हुए। एक का नाम 'गौड़' और दूसरे का नाम 'द्रविण' रखा गया। गौड़ को विंध्य पर्वत के उत्तर का भू-भाग और द्रविड़ को विंध्याचल के दक्षिण का भू-भाग दिया गया। बाद में द्रविड़ के भी पांच पुत्र हुए और गौड़ के भी पांच पुत्र हुए। इस प्रकार इनकी संख्या दस हो गयी।

द्रविड़ के पुत्रों के नाम तैलंग, महाराष्ट्र, गुर्जर, द्राविड़ और कर्नाटिका रखे गये।

गौड़ के पुत्रों के नाम—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल रखे गये। आगे चलकर इनकी संख्या चौरासी हुई। इस समय एक सौ पन्द्रह है। यह संख्या इनके कुलों की है।

देवगुरु बृहस्पति विंध्योत्तर भाग में और दैत्य गुरु शुक्राचार्य विंध्य दक्षिण भाग, यानी द्रविड़ क्षेत्र में रहने लगे।

उत्तर भारतीय ब्राह्मणों की विभिन्न उपाधियां

गुजरात में सरस्वती नदी के तट पर एक पाटल नामक नगर था। उसके राजा का नाम 'मूल' था। अपने राज्य के सिद्धिपुर क्षेत्र में उन्होंने एक यज्ञ का आयोजन किया। उनके गुरु ने उत्तर भारतीय विद्वान् ब्राह्मणों को देवता तुल्य बताकर उन्हें यज्ञ में आमन्त्रित करने की सलाह दी।

विंध्योत्तर भाग के ब्राह्मण आमन्त्रित हुए। वे अपने शिष्यों के साथ चल दिये, जिनकी संख्या निम्नलिखित थी—

क्षेत्र	ब्राह्मणों की संख्या
प्रयाग क्षेत्र के च्यवन ऋषि आश्रम से	105
सरयू नदी किनारे से	100
कान्यकुब्ज देश से	200
काशी से	100
कुरुक्षेत्र से	179
तिरहुत से	132
नैमिसारण्य से	200
अन्य क्षेत्र से	78
योग	1096

इस प्रकार यज्ञ में कुल एक हज़ार छियानवे ब्राह्मण पहुंचे।

राजा ने इनका बड़ा सम्मान किया और धन, रत्न, गाय, हाथी, घोड़े आदि देने चाहे, किन्तु ब्राह्मणों ने कहा, ''राजन्! हम तुम्हारे यज्ञ में शामिल होने के लिए तो आये ही थे, किन्तु हमारा मुख्य उद्देश्य सिद्धिपुर तीर्थ देखने का था। हमें हाथी व घोड़े से कोई प्रयोजन नहीं है। तुम इनसे प्रजा का पालन करो।'' राजा बहुत प्रसन्न हुआ और वस्त्रादि से उनका सम्मान कर, उन्हें निम्नलिखित उपाधियां प्रदान कीं।

कर्म के अनुसार ब्राह्मणों की उपाधियां

कार्य क्षेत्र	उपाधियां
जो अध्यापन का कार्य करते थे	उपाध्याय
जो ज्योतिष का कार्य करते थे	जोशी
जो यज्ञ कराते थे	याज्ञिक
शासन में भागीदारी रखने वाले को	ठाकुर
तीनों वेदों का अध्ययन करने वाले को	त्रिवेदी
तीनों समय वेद पढ़ने वाले को	त्रिपाठी
दीक्षा देने वाले को	दीक्षित
शास्त्र पढ़ाने वाले को	पाण्डेय
सरकारी काम करने वाले को	महन्त
उपजीविका करने वाले को	शुक्ल
दो वेदों का पाठ करने वाले को	द्विवेदी
चारों वेदों का पाठ करने वाले को	चतुर्वेदी
हवन करने वाले को	अग्निहोत्री
कई विषयों के ज्ञाता को	मिश्र
स्वाध्यायी को	पाठक

□□

गौड़ ब्राह्मणों के क्षेत्र

गौड़ ब्राह्मण

गौड़ ब्राह्मण जिस भूखण्ड में रहते हैं, उसको गौड़ देश कहा जाता है। उसमें निम्नलिखित आते हैं–

1–दिल्ली, 2–सोनीपत, 3–करनाल, 4–कुरुक्षेत्र, 5–कैथल, 6–यमुनातट के क्षेत्र, 7–हस्तिनापुर, 8–मारवाड़, 9–झूनझूनू, 10–पुष्कर, 11–शेखावटी, 12–फतेहपुर, 13–मत्स्य, 14–विराट, 15–भिवानी आदि।

उपरोक्त स्थानों में गौड़ ब्राह्मणों के निवास के सन्दर्भ में ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड में एक कथा लिखी हुई है–

हस्तिनापुर में महाराजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय राज्य करते थे। उन्होंने एक महायज्ञ किया। उसमें 1444 ऋषि-मुनि अपने शिष्यों के साथ सम्मिलित हुए थे।

अवभृथ स्नान के बाद राजा जनमेजय महर्षि वटेश्वर को बुलाकर दक्षिणा देने लगे। महर्षि ने राजा का प्रतिग्रह स्वीकार नहीं किया और उन्हें आशीर्वाद देकर जाने लगे। तब राजा ने पान के बीड़े में एक-एक ग्राम का दान पत्र लिखकर महर्षि के शिष्यों को दे दिया। शिष्यगण ने प्रसन्न होकर बीड़ा स्वीकार कर लिया। उन ऋषि-मुनियों को पानी पर स्थल-जैसे खड़ाऊं पहनकर चलने की सिद्धि थी।

उन लोगों ने जब नदी पार करने के लिए नदी में प्रवेश किया, तो उनके पांव डूबने लगे। तब उन्होंने विचार किया कि हमारी सिद्धि नष्ट कैसे हो गयी ? वे अपने-अपने पान के बीड़े खोलकर देखने लगे, तो उसमें ग्राम दान का पत्र मिला। उन्हें लगा राजा का प्रतिग्रह लेने से सिद्धि नष्ट हो गयी। वे लौटकर राजा के पास आये और कहा, ''तुमने ऐसा क्यों किया ?''

राजा ने बहुत अनुनय-विनय करके अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहा, ''बिना दक्षिणा दिये यज्ञ सफल भी तो नहीं होता है, इसीलिए मैंने ऐसा किया।'' ऐसा कहकर सभी ब्राह्मणों को अपने यहां गौड़ देश में रख लिया। तब से ये ब्राह्मण आदि-गौड़ कहलाये।

इनमें भोजन आचार की कमी है। ये बाजार तक का पक्का भोजन खा लेते हैं। छुआछूत का दोष कम मानते हैं। इनमें अधिकांश लोग शुक्ल यजुर्वेदी और माध्यन्दिन शाखा के हैं। सामवेदी भी हैं।

गौड़ ब्राह्मणों के भेद

इस क्षेत्र में रहने वाले गौड़ ब्राह्मणों के दो भेद हैं–

1. देशवाली 2. पछादे

इनमें परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं होते। देशवासियों में मिश्र, तिवारी, पूठिया, चौमोहरिया, गौतम और दूबे आदि होते हैं।

□□

आदि-गौड़ की शाखाएं

आदि-गौड़ ब्राह्मण वंश की 15 शाखाएं हैं।

1. माण्डव्य—ये माण्डव्य ऋषि के कुलोत्पन्न हैं। कहीं-कहीं इन्हें मालव्य भी कहते हैं।

2. लम्भित—ये भी माण्डव्य गोत्रीय ही हैं, किन्तु लम्भित नगर में बसने के कारण इन्हें लम्भित कहते हैं।

3. माथुर—मथुरा में रहने वाले गौड़ माथुर कहलाते हैं।

4. सूर्यध्वज—सौरभेश्वर के पास सूर्य ऋषि का आश्रम था, उनके वंशजों को सूर्यध्वज कहते हैं।

5. भट्टकेश्वर—भट्ट ऋषि के वंशधर भट्टकेश्वर कहलाते हैं।

6. सुखसैन—हंस ऋषि के वंशधर सुखसैन कहलाते हैं।

7. दालभ्य—दालभ्य ऋषि के वंशधर दालभ्य कहलाते हैं।

8. सौरभ—ये सौरभ क्षेत्र में रहने से सौरभ गौड़ कहलाते हैं।

9. वशिष्ठ—वशिष्ठ गोत्रीय वशिष्ठ कहलाते हैं।

10. नैगम—ये चित्रगुप्त के वंशज हैं। इस वंश में निगम नाम के प्रसिद्ध महात्मा हुए। इनके वंशज अपने को नैगम कहते हैं।

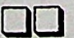
11. गौतम—गौतम ऋषि के वंशज अपने को गौतम कहते हैं।

12. हर्ष—सरयू के तट पर रहने वाले कुछ ब्राह्मण अपने को हर्ष गोत्रीय बताते हैं।

13. गंगापुत्र—हर्ष गोत्रीय कुछ ब्राह्मण गंगातट वासी हो गये, ये अपने को गंगापुत्र कहने लगे।

14. हरियाणा गौड़—हारित ऋषि का आश्रम हरियाणा में था, उनके वंशज अपने को हरियाणा गौड़ कहते हैं।

15. वाल्मीकि गौड़—आबूगढ़ के पास वाल्मीकिजी का आश्रम है। उनके मतानुयायी अपने को वाल्मीकि गौड़ कहते हैं।



गौड़ ब्राह्मणों के गोत्र-उपगोत्र

सम्पूर्ण गौड़ ब्राह्मण वंश के केवल 24 ऋषि गोत्र हैं। इन ऋषियों के वंश में महत्त्वपूर्ण ऋषि हुए, उनके नाम से भी गोत्र चल पड़े। उक्त ऋषि सन्तानों की संख्या, जिनके नाम से गोत्र प्रचलित हैं, 115 हैं।

ऋषि नामावली

क्र०सं०	ऋषिनाम
1.	अत्रि गोत्र
2.	भृगु गोत्र
3.	आंगिरस गोत्र
4.	मुद्गल गोत्र
5.	पातंजलि गोत्र
6.	कौशिक गोत्र
7.	मरीच गोत्र
8.	च्यवन गोत्र
9.	पुलह गोत्र
10.	आष्टिषेण गोत्र
11.	उत्पत्ति शाखा
12.	गौतम गोत्र
13.	वशिष्ठ और सन्तान
	(क) पर वशिष्ठ गोत्र
	(ख) अपर वशिष्ठ गोत्र
	(ग) उत्तर वशिष्ठ गोत्र
	(घ) पूर्व वशिष्ठ गोत्र
	(ङ) दिवा वशिष्ठ गोत्र
14.	वात्स्यायन गोत्र
15.	बुधायन गोत्र
16.	माध्यन्दिनी गोत्र
17.	अज गोत्र
18.	वामदेव गोत्र

क्र०सं०	ऋषिनाम
19.	शांकृत्य गोत्र
20.	आप्लवान गोत्र
21.	सौकालीन गोत्र
22.	सोपायन गोत्र
23.	गर्ग गोत्र
24.	सोपर्णि गोत्र
25.	शाखा
26.	मैत्रेय गोत्र
27.	पराशर गोत्र
28.	अंगिरा गोत्र
29.	क्रतु गोत्र
30.	अधमर्षण गोत्र
31.	बुधायन गोत्र
32.	आष्टायन कौशिक गोत्र
33.	अग्निवेष भारद्वाज
34.	कौडिन्य
35.	मित्रवरुण गोत्र
36.	कपिल गोत्र
37.	शक्ति गोत्र
38.	पौलस्त्य गोत्र
39.	दक्ष गोत्र
40.	सांख्यायन कौशिक गोत्र
41.	जमदग्नि गोत्र

क्र०सं०	ऋषिनाम
42.	कृष्णात्रेय गोत्र
43.	भार्गव गोत्र
44.	हारीत गोत्र
45.	धनंजय गोत्र
46.	पाराशर गोत्र
47.	आत्रेय गोत्र
48.	पुलस्त्य गोत्र
49.	भारद्वाज गोत्र
50.	कुत्स गोत्र
51.	शांडिल्य गोत्र
52.	भरद्वाज गोत्र
53.	कौत्स गोत्र
54.	कर्दम गोत्र
55.	पाणिनि गोत्र
56.	वत्स गोत्र
57.	विश्वामित्र गोत्र
58.	अगस्त्य गोत्र
59.	कुश गोत्र
60.	जमदग्नि कौशिक गोत्र
61.	कुशिक गोत्र
62.	देवराज गोत्र
63.	धृत कौशिक गोत्र
64.	किंण्डव गोत्र
65.	कर्ण गोत्र
66.	जातुकर्ण्य
67.	काश्यप गोत्र
68.	गोभिल गोत्र
69.	कश्यप गोत्र
70.	सुनक गोत्र
71.	शाखाएं
72.	कल्पिष गोत्र
73.	मनु गोत्र

क्र०सं०	ऋषिनाम
74.	माण्डव्य गोत्र
75.	अम्बरीष गोत्र
76.	उपलभ्य गोत्र
77.	व्याघ्रपाद गोत्र
78.	जावाल गोत्र
79.	धौम्य गोत्र
80.	यागवल्क्य गोत्र
81.	और्व गोत्र
82.	दृढ़ गोत्र
83.	उद्वाह गोत्र
84.	रोहित गोत्र
85.	सुपर्ण गोत्र
86.	गालिब गोत्र
87.	वशिष्ठ गोत्र
88.	मार्कण्डेय गोत्र
89.	अनावृक गोत्र
90.	आपस्तम्ब गोत्र
91.	उत्पत्ति शाखा
92.	यास्क गोत्र
93.	वीतहव्य गोत्र
94.	वासुकि गोत्र
95.	दालभ्य गोत्र
96.	आयास्य गोत्र
97.	लौंगाक्षि गोत्र
98.	चित्र गोत्र
99.	विष्णु गोत्र
100.	शौनक गोत्र
101.	पंचशाखा
102.	सावर्णि गोत्र
103.	कात्यायन गोत्र
104.	कञ्चन गोत्र
105.	अलम्पायन गोत्र

क्र०सं०	ऋषिनाम	क्र०सं०	ऋषिनाम
106.	अव्यय गोत्र	111.	उपमन्यु गोत्र
107.	विल्च गोत्र	112.	उतथ्य गोत्र
108.	शांकल्य गोत्र	113.	आसुरि गोत्र
109.	उद्दालक गोत्र	114.	अनूप गोत्र
110.	जैमिनी गोत्र	115.	आश्वलायन गोत्र

कुल संख्या 108 है। इनकी छोटी-छोटी 7 शाखा और हुई हैं। कुल संख्या 115 है।

नोट—यज्ञ में दूर-दूर से आये हुए विद्वान् ब्राह्मणों की संख्या 1444 थी। राजा जनमेजय ने सबको गांव देकर बसाया। ये गांव शासन कहे जाते हैं।



ऋषि-गोत्रीय गांव

वशिष्ठ गोत्रीय गांव

1. गौड़पुरिया, 2. सत्य पुरिया, 3. पूजाचार्य, 4. शुक्लाचार्य, 5. वटवालिया, 6. शिरोहवाल, 7. ब्रह्मपुरिया, 8. स्यामपुरिया, 9. निर्वाणपदिया, 10. धर्मपालिया, 11. वृतपाल आचार्य, 12. झर्मरिया, 13. यज्ञपलिया, 14. वृद्धाचार्या, 15. विपुनगरिया, 16. जटिल प्रधान, 17. कमलपुरिया, 18. स्वामीपुरिया, 19. शान्तिपुरिया, 20. सत्यपालिया, 21. विश्वपालिया, 22. वेदधराव्यास, 23. धर्मोपदेशक, 24. झर्मरपुरिया, 25. वेदपुरिया, 26. कुरुक्षेत्रीया, 27. कनरवलिया, 28. गंगस्थलिया, 29. माधवप्रस्थिया, 30. विष्णुपुरिया, 31. गंगावासी, 32. पिंडारा, 33. व्याघ्रप्रस्थ्यिा, 34. कसूरिया, 35. उदयपुरिया, 36. विज्ञानिया, 37. चींकरा 38. हामुरिया, 39. गोरवाल, 40. बबरेवाल, 41. वसुंधरिया, 42. कांकरोलिया, 43. धरवालिया, 44. मुनिस्थलिया, 45. कस्थलिया, 46. कोषवाल, 47. झगड़ोलिया, 48. कुलतड़िया, 49. चूरवाल, 50. ज्ञानोपदेशक, 51. उद्गातास्वामी, 52. ब्रह्मक्षेत्रीया, 53. पुष्करिया, 54. हरिप्रस्थिया, 55. शिवप्रस्थिया, 56. शक्तिपुरिया, 57. प्रयागवासी, 58. दिलवालिये, 59. सफीदमियां, 60. कुशस्थलिया, 61. ईकड़ीवाल, 62. भोपवाल, 63. वगसरिया, 64. सीकरिया, 65. स्यमलपुरिया, 66. श्रीवाल, 67. बरोलिया, 68. अनवरिया, 69. तैतिल, 70. करवालिया, 71. कोटवाल डोहरवाल, 72. बुढ़ाड़िया, 73. बयालिया, 74. रोहीवाल, 75. वड़वरिया, 76. व्योमवाल, 77. अमरावतिया, 78. खोलवाल, 79. श्रीवाल, 80. रातवाल, 81. श्रीनगरिया, 82. नागवाल, 83. बृद्धस्थलिया, 84. व्याघ्रस्थलिया, 85. सुरीरपुरिया, 86. घटाणिया, 87. पड़कलिया, 88. थपतड़िया, 89. काशीपुरिया, 90. कनरवलिया, 91. चन्द्रपुरिया, 92. शिलाकरा, 93. शुक्रप्रस्थिया, 94. कल्याणपुरिया, 95. मुरथलिया, 96. गणवारिया, 97. चुल्काड़िया, 98. व्यास, 99. हरवाल, 100. सारोलिया, 101. बहादुरगड़िया, 102. ब्रह्मक्षेत्री, 103. गौड़पुरिया, 104. कौख, 105. नरवाणिया, 106. राममठिया, 107. करनालिया, 108. पिड़तारिया, 109. पृथदकिया, 110. स्वर्णपाद, 111. प्रस्थिया निर्मला, 112. सातोरिया, 113. रिठालिया, 114. बल्लभगढ़िया, 115. मामडोलिया, 116. वशिष्ठ स्थलिया, 117. राईवाल, 118. प्रतापवाल, 119. करोलिया, 120. पाराशरप्रस्थिया, 121. थनेसरिया, 122. भटाणिया, 123. बुढ़ाड़िया, 124. मोलाया, 125. हरसेलिया, 126. ऐलमवाल, 127. कुलताडिया, 128. मगरोलिया, 129. हरप्रसूथिया, 130. मुक्तपुरिया, 131. हरितवाल, 132. बंगड़हढ, 133. गिल्लाणि, 134. मिरालिया, 135. धमाणिया, 136. उग्रपुरिया, 137. कर्णपुरिया, 138. माथुरा, 139. गुलावटिया, 140. वेहरिया भट्टपुरिया, 141. मंकवाल, 142. कवाड़िया, 143. धोहरवाल, 144. अंगनिया, 145. श्रीधरा, 146. चीकर, 147. नीतिवाल, 148. पहरावरिया, 149. गन्धर्व, 150. उसरिया, 151. भसौलिया, 152. वरवालिया, 153. अरकवाल, 154. भड़कलिया,

155. दशावाल, 156. जसड़वाल रामपुरिया, 157. ज्वालापुरिया, 158. सारोलिया, 159. गंगोलिया, 160. नरपालिया, 161. नालोड़िया, 162. वारोठिया, 163. हर्ष नगरिया, 164. माधवपुरिया, 165. चूरोल्या, 166. महमिया, 167. गंगा तटिया, 168. भुटाड़िया, 169. कपिस्थलिया, 170. शुक्रस्थलिया, 171. पाठयाण, 172. कृष्णपुरिया, 173. सोणपतिया, 174. धनपतिया, 175. नरेलिया, 176. परवती, 177. केड़ेलिया, 178. गौड़ग्रामिया, 179. पुष्करिया, 180. इन्द्रपुरिया, 181. शोभाश्रमी, 182. नगरवाल, 183. चौराणिया, 184. पानीपतिया, 185. केमाश्रमी, 186. गनवरिया, 187. शक्तिपुरिया, 188. भोकरिया, 189. धामाणिया, 190. शाकवान, 191. भागलपुरिया, 192. करनालिया, 193. इन्दोरिया, 194. नीदिया, 195. सिरसोलिया, 196. फटवाड़िया, 197. गौधड़िया, 198. शिवप्रस्थिया, 199. पूठिया, 200. नरहणा, 201. घमणिया, 202. ब्रह्मवेदिया, 203. धर्माश्रमी, 204. चांदीवाल, 205. चौढ़ाड़िया।

शक्ति गोत्रीय गांव

1. ब्रह्माश्रमी, 2. व्यासीश्रमी, 3. वशिष्ठाश्रमी, 4. तपोलिया, 5. कपिलाश्रमी, 6. शुक्रस्थलिया, 7. शक्तिपुरिया, 8. रसाहरी, 9. दुवे, 10. गयावाल, 11. गौड़स्थली।

पाराशर गोत्रीय गांव

1. मुनिस्थलिया, 2. इन्दोरिया, 3. बड़ोतिया, 4. पावटिया, 5. तिलपतिया, 6. सिहोलिया, 7. मुशलट, 8. व्यासस्थली, 9. रघुपुरिया, 10. बुधवाल, 11. रसोदवाल, 12. नरेहड़वाल, 13. भोजपुरिया, 14. कड़ेलिया, 15. खेड़ीवाल, 16. फरीदावादिया, 17. पाराशरप्रस्थिया, 18. कुरुक्षेत्री, 19. श्यामतीर्थिया, 20. संगवाल, 21. खिरवाल, 22. दायवाल, 23. सोंतीपाड़े, 24. दुंदुवीवाल, 25. डसनिया, 26. जालोनिया।

पराशर गोत्रीय गांव

1. विष्णु स्थलिया, 2. व्यासनगरिया, 3. उज्जैननगरिया, 4. धर्मप्रस्थिया, 5. पराशरप्रस्थिया, 6. चिरंजिया, 7. मूदड्ट, 8. करनालिया, 9. वशिष्ठस्थलिया, 10. श्रोत्रिय, 11. ब्रह्मनगरिया, 12. नरेशवाल, 13. हाईवाल, 14. ववणिया, 15. सोमप्रस्थिया, 16. समसेरिया, 17. होड़लिया, 18.वयाल, 19. पंचोली, 20. शोभापुरिया, 21. बड़ोहतिया, 22. शुकपुरिया, 23. धारवाल, 24. दशालिया, 25. वेदवाल, 26. गुरुस्थली, 27. विचारप्रस्थया, 28. ववाड़िया, 29. असोंधिया, 30. कटवालिया, 31. सूरजपुरिया, 32. सोंमपानिया, 33. बल्लभगढ़िया।

अत्रि गोत्रीय गांव

1. अत्रिस्थलिया, 2. गौड़पुरिया, 3. कोथलिया, 4. दण्डपाड़ि, 5. नवलगड़िया, 6. मोटालिया, 7. वड़ीवाल, 8. पवनाहरी, 9. ब्रह्मप्रस्थिया, 10. विश्वम्भरा, 11. धर्मपालिया, 12. मामडोलिया, 13. डिडवाडिया, 14. शुक्लप्रधान, 15. सोमपुरिया, 16. गोलवाल, 17. खेड़वाल, 18. जुलासिया, 19. सरधानिया, 20. दुर्गपाणि, 21. तपोधरा, 22. हिसारिया, 23. छपारिया, 24. परीक्षतगढ़िया, 25. करस्थलिया, 26. धनोलिया, 27. कर्णयां, 28. करंडिया, 29. तुसामणिया, 30. परीक्षतगढ़िया, 31. फुलेरिया, 32. खेड़वाल, 33. ओसवाल, 34. तिवाड़िया, 35. कपिस्थलिया, 36. रामस्थलिया,

37. कैथलिया।

आत्रेय गोत्रीय गांव

1. ऋतम्भरा, 2. आत्रस, 3. पातरस, 4. सत्यधरा, 5. अतरस, 6. भिक्षुकरा, 7. शिक्षिका, 8. उच्छला, 9. मुक्तनगरिया, 10. कंचनपुरिया, 11. अमृतपानिया।

कृष्णात्रि गोत्रीय गांव

1. खरड़वाल, 2. वड़ीवाल, 3. विप्रप्रस्थिया, 4. वसूड़वाल, 5. बबेरवाल, 6. ददरेडिया, 7. ब्रह्मवेदिया, 8. सामोदरा, 9. सिरसापत्तनिया, 10. पर्णसिया, 11. माधोपुरिया, 12. विजनोरिया, 13. रेबलिया, 14. करपालिया, 15. अतराणिया।

अंगिरा गोत्रीय गांव

1. गौड़पुरिया, 2. शिवस्थलिया, 3. धर्मपुरिया, 4. ब्रह्मस्थलिया, 5. पिन्डारिया, 6. पतड़िया, 7. चुल्हीवाल, 8. देवाचार्य, 9. देवप्रधान, 10. ऋषिस्थलिया, 11. वेदप्रधान, 12. वटुवाल, 13. मिश्रस्थलिया, 14. भद्रवाल, 15. देवगुरु, 16. वरदानिया।

आंगिरस गोत्रीय गांव

1. अंगिराश्रमी, 2. देवाश्रमी, 3. नरहारिया, 4. नेमवाल, 5. सप्तकुंभिया, 6. गुरुस्थलिया, 7. यज्ञस्थलिया, 8. डाभड़ा, 9. उपदेशलिया, 10. रामहूदिया, 11. हरिपुरिया, 12. सिरमेड़िया, 13. पानीपतिया, 14. पिंडरा, 15. धनाडिया, 16. बृहस्पतिप्रस्थलिया, 17. थनेसरिया, 18. कल्याणनगरिया, 19. शुभ्रवाल।

कृष्णात्रेय गोत्रीय गांव

1. कैलवाल, 2. वड़वाल, 3. धरीनगरिया, 4. प्रथदकिया, 5. मोटिया, 6. कुशंधरा, 7. किठोरिया, 8. वीरपुरिया, 9. कलातिया।

भृगु गोत्रीय गांव

1. दैत्याचार्य, 2. कर्मप्रधान, 3. दीक्षित, 4. भींडा, 5. गयाथलिया, 6. वीरहठ, 7. दैत्यपाल, 8. अभिचारक, 9. नोरंडे, 10. मघपुरिया, 11. भट्टपुरिया, 12. नीतिपाल, 13. धनारिया, 14. बिबरिया, 15. ब्रह्माश्रमी।

भार्गव गोत्रीय गांव

1. भृगुस्थली, 2. च्यवनश्रमी, 3. च्यवनिया, 4. वगदोड़िया, 5. त्रवणिया, 6. बड़कलिया, 7. इन्द्रप्रस्थिया, 8. बगड़वाल, 9. कांचवाल, 10. चींकादनुगुरावा, 11. रामपुरिया।

पुलस्त्य गोत्रीय गांव

1. गोपालिया, 2. घोरतया, 3. तंतरिया, 4. तुण्डवाल, 5. महोदयपुरिया, 6. चन्दनपुरिया, 7. शिवाश्रमी, 8. मंत्रावाल, 9. लंकापुरिया, 10. सेंनिया, 11. पौलिया, 12. सांडलिया, 13. यंत्री, 14. सांवर्ण, 15. विजनोरिया।

पोलस्त्य गोत्रीय गांव

1. पर्णासिया, 2. विजयपुरिया, 3. मुनिप्रधान, 4. लंकपुरिया, 5. वारीवाल, 6. चाखल्याणि।

पुलह गोत्रीय गांव

1. शंकरवाल, 2. शंकाहारी, 3. कर्मकरा, 4. सेतुवाल, 5. उच्छंधरा, 6. सिद्धिवाल, 7. पलवाल, 8. चोबेप्रधान, 9. जीवनवाल, 10. ांतिपुरिया, 11. पलवाल, 12. ब्रह्माणिया।

पुलह गोत्रीय गांव

1. पुलहाश्रमी, 2. चन्डीपूजक, 3. डामरिया, 4. कामरूपांडे, 5. धर्मक्षेत्री।

दक्ष गोत्रीय गांव

1. दक्षपुरिया, 2. शिलहरी, 3. कनरवलिया, 4. योगस्थली, 5. जादूगरिया।

मरीच गोत्रीय गांव

1. मिरचू, 2. शंखवाल, 3. निगमबोधिया, 4. वरोदिया, 5. अर्णपाड़िया, 6. अनूपनगरिया, 7. निर्भयपादिया, 8. मरवाड़ा, 9. गरनावटिया, 10. छत्रवाल, 11. भूवलिया।

क्रतु गोत्रीय गांव

1. ऋद्धिवाल, 2. दुर्वाहारी, 3. चुल्काड़िया, 4. मुनिपुरिया, 5. ढूसवाल, 6. कुरुक्षेत्री, 7. वत्सवाल, 8. थनेसरिया, 9. वरवाल, 10. सापुरिया, 11. ज्ञानस्थलिया।

भारद्वाज गोत्रीय गांव

1. करनालिया, 2. पवांलिया, 3. प्रयागस्थलिया, 4. खेड़ीवाल, 5. नारनोलिया, 6. अड़ीचवाल, 7. डोहरवाल, 8. शंकरोड़िया, 9. खेलवाल, 10. सहलूदिया, 11. दुलीणहट, 12. हसनगड़िया, 13. मंडावरिया, 14. मैलूया, 15. बहूड़वाल, 16. कटवालिया, 17. टरवालिया, 18. कस्थलिया, 19. ललाणिया, 20. बिसरकिया, 21. गुरुलिया, 22. वरदोलिया, 23. सलमोरवरिया, 24. उपास्य, 25. उपरस, 26. झुंझदिया, 27. डोडरावता, 28. दांतोलिया, 29. अमटोला, 30. औदड़िया, 31. सांकला, 32. साकोलिया, 33. कोटवाल, 34. गीझवाल, 35. भटाणिया, 36. ऊधराणि, 37. बबारिया, 38. निगमस्थलिया, 39. खैरवाल, 40. नीदला, 41. सांणवाल, 42. अजमेरिया, 43. महरावणा, 44. डभोलिया, 45. वहलिया, 46. मठीरिया, 47. नवरंगिया, 48. विजोलिया, 49. विश्वामित्रस्थलिया, 50. खुर्जवाल, 51. स्वालकोरिया, 52. वकड़वाल, 53. दहेणिया, 54. विहड़वाल, 55. दीक्षितव्यास, 56. बाबलिया, 57. उटवाल, 58. सिंडोलिया, 59. न्यायतवाल, 60. डिगथलिया, 61. धीमरिया, 62. वोहरिया, 63. वलमिया, 64. मामडोलिया, 65. कोनोडिया, 66. रामपुरिया, 67. आभटोला, 68. समड़वाल, 69. बुढ़ालिया, 70. जावाल, 71. दनकोरिया, 72. हरियाणिया, 73. लवानिया, 74. गढ़मुक्तेश्वरिया, 75. पल्हेड़िया, 76. हस्तपुरिया, 77. सकरपुरिया, 78. सरधानिया, 79. बदरीपुरिया, 80. गेढ़ेलिया, 81. कायतवाल, 82. बधोतिया, 83. अधोपिया।

अग्निवेष गोत्रीय गांव

1. दिगम्बरा, 2. मरुस्थलिया, 3. अग्निपाल, 4. लीलाणिया, 5. समाजरीतिया, 6. भिन्डोलिया, 7. अग्निवाल, 8. लढ़ोरिया, 9. गोकर्णिया, 10. वंशावलिया, 11. नोहरवाल, 12. सोंनलवाल,

13. बबेरवाल, 14. गंगोलिया, 15. धनस्थलिया, 16. धरोडिया, 17. मुराड़िया, 18. पाणानप्रस्थिया, 19. न्यायपुरिया, 20. ऋषिपुरिया, 21. मायापुरिया।

भरद्वाज गोत्रीय गांव

1. भातराणिया, 2. सोंथिया, 3. सरेया, 4. कथूरवाल, 5. वाघडालिया, 6. नाभ्रडिया, 7. नावालिया, 8. बगदोड़िया, 9. नरहणावाल, 10. पिल्हाट, 11. जाणोलिया, 12. अरड़िया, 13. अहमिया, 14. जारुयेवाल, 15. कंकरिया, 16. पाटड़िया, 17. मुखाड़िया, 18. त्रिगुणायत, 19. रोहितवावल, 20. वांवसणिया, 21. तिगड़ारिया, 22. तिवाड़िया, 23. मंड़ोलिया इन्द्रपस्थिया, 24. कोल्हूवाड़, 25. आप्टोलिया, 26. नूड़ीवाल, 27. बबेलिया, 28. नोंहरिया, 29. संभलिया, 30. डुसावत, 31. गोरखवाल, 32. पावड़ा गड़ीलवाल, 33. महरावल, 34. पातडिया, 35. लाल्यारिया, 36. बबनालिया, 37. शिशानिया, 38. संमढ़वाल, 39. धरवाल, 40. शिलोठिया, 41. ग्रामड़ीवाल, 42. कोटड़िया, 43. रामगड़िया, 44. पपरोलिया, 45. निदाणिया, 46. मोईवाल, 47. कलोटिया, 48. गांणरवाल, 49. सेहीवाल, 50. ठरवाल. 51. सांकड़ोथिया, 52. अनूपवाल, 53. संगेलवाल, 54. अंगूठया, 55. सिरसापटनिया, 56. रिटोलिया, 57. कांकरोलिया, 58. चूड़ोदिया, 59. ढ़िचोलिया, 60. विरहड़वाल, 61. रणोलिया, 62. सेवालिया, 63. मुजेड़ऋवाल, 64. महरावरे, 65. वसाखिया, 66. कलातिया, 67. व्योहालिया, 68. सन्निहितिया, 69. राजपुरिया, 70. वनप्रस्थिया, 71. मगरोलिया, 72. पशवाड़ा मोवाल, 73. लहड़रिया, 74. महरोलिया, 75. भषावाल, 76. कलोखरवाल, 77. ओलीनिया, 78. पोसरिया, 79. भवरिया, 80. शिशोलिया, 81. तिलोकड़िया, 82. जैवाल्य, 83. ढ़ाचवाल, 84. सेखूपुरिया, 85. भगवानपुरिया, 86. यावड़े मुघरिया, 87. खेड़वाल, 88. पूठिया, 89. देवलिया, 90. सांतोरिया, 91. गोस्वामिया, 92. मुसकेसरिया, 93. पुरवाल, 94. पलोंडिया, 95. दोघटिया, 96. भोंडवाल, 97. वाकप्रस्थिया, 98. मोटावलीवाल, 99. चूलहटिया, 100. राईवाल, 101. शामलिया, 102. जींदराणि, 103. किलोकड़िया, 104. धरेड़, 105. श्यामपुरिया, 106. खारवाल, 107. किस्तोलिया, 108. डवोधिया, 109. मरवड़िया, 110. वयोरवाल, 111. हरियाणिया, 112. मेंडवाल, 113. गोधड़िया, 114. गीझवाल, 115. मल्हाणिया, 116. नीमराणिया, 117. पहाड़ीरसिया, 118. बुढ़ाड़िया, 119. पोरवाल, 120. तेहनगरिया, 121. खिड़वालिया, 122. पंडायाणि, 123. फटवाड़िया, 124. कसेरवाल, 125. चाकलाण, 126. ओवाल, 127. बांकनेरिया, 128. द्रोंणपुरिया, 129. दिलवाल, 130. वादवाल, 131. भीतेलिया, 132. दोहलिया, 133. गोरनिया, 134. लालपुरिया, 135. बटानिया, 136. बोधलिया, 137. संसारिया, 138. ढ़ाच्योल्या, 139. अड़ीगवाल, 140. तोसावड़, 141. नीमरिया, 142. दुहे, 143. मैलूमिश्र, 144. सुजानिया, 145. हरसरणि, 146. मलकपुरिया, 147. यवलिया, 148. चौमिया, 149. भटयानिया, 150. काकनोरिया, 151. महरावरिया, 152. डोडरावत, 153. आमटोलिया, 154. बबेलिया गलीणं, 155. मवानिया, 156. उगडोलिया, 157. कोंशलिया, 158. ओदिया, 159. वामोलिया, 160. एखोंदिया, 161. नरथालिया, 162. महवने, 163. सारगपुरिया, 164. झगीरिया, 165. खैरवाल, 166. नावावाल, 167. गुलावटिया, 168. डसनवाल, 169. मोनिया, 170. कैरवाल, 171. वड़ेवाल, 172. वोहरिया, 173. सोंकरिया, 174. भटेलिया,

175. डुहरिया, 176. भैंआ, 177. कौख, 178. अमरथलिया, 179. शिरसोलिया, 180. लाढ़नू, 181. हावड़ीवाल।

कुश गोत्रीय गांव

1. महमिया, 2. चंदेलीवाल, 3. सफीदमिया, 4. परधानिया, 5. नीदिया, 6. कुशवाल, 7. टाकरिया, 8. नाथलागड़िया, 9. बीजपुरिया, 10. मेहरावल, 11. कोथलिया, 12. इन्द्रप्रस्थिया, 13. महोदिया, 14. घोलिया।

कुशिक गोत्रीय गांव

1. श्रीकरिया, 2. धरमपालिया, 3. अमरपुरिया, 4. सीकरिया, 5. फोकरिया, 6. दिवाच, 7. सत्यधरा, 8. घुड़वाल।

धृत कौशिक गोत्रीय गांव

1. ऋतुम्भरा, 2. तपोधरा, 3. सहोदरिया, 4. मिगड़ायत, 5. कामिया, 6. न्यानिया, 7. अग्नाणि, 8. हरिणांक्षिया, 9. बुढ़ानिया, 10. काशीपुरिया।

कौशिक गोत्रीय गांव

1. मढ़ोलिया, 2. कुरुक्षेत्री, 3. मंडोरवाल, 4. सूकरथलिया, 5. विभीषवाल, 6. फटवाड़िया, 7. मुंडेलिया, 8. विसकरिया, 9. दीयल, 10. पंचौली, 11. विजयचाणि, 12. कांकरिया, 13. नेतवाल, 14. भटांनिया, 15. टोकरवाल, 16. पल्लीवाल, 17. लाकड़े हरियाणिया, 18. इन्दोरिया, 19. बहरवाल, 20. सारल, 21. खदरिया, 22. उषराणि, 23. चन्द्रपुरिया, 24. नागलिया, 25. भटसाड़िया, 26. जोहणिया, 27. कंकरवाल, 28. ईगरवाल, 29. विश्वामित्रप्रस्थिया, 30. पल्हेड़िया, 31. मिरचे, 32. अज्ञाणिया, 33. झीमरिया, 34. बांकोयि, 35. कसूपुरिया, 36. फत्तहणिया, 37. डोहरवाल, 38. नेथलिया, 39. छारेया, 40. प्रतापवाल, 41. बसवाणिया, 42. जीवतवाल, 43. बड़विदिया, 44. रोहटवाल, 45. कविपालिया, 46. खिसणिया, 47. घसेणिया, 48. मुंडलाड़िया, 49. सिवाल, 50. साठकिया, 51. भोगलिया, 52. मालचिया, 53. धुलाड़िया, 54. सागवाल, 55. कुवादवाल, 56. भरटिया, 57. समालिया, 58. गोधड़िया, 59. कलोरिया, 60. चौणाणिया, 61. तिगरायत, 62. मढ़ावाल, 63. गोमतिया, 64. सूर्यपुरिया, 65. हरथाणिया, 66. वामोलिया, 67. महेशराणि, 68. असोधिया, 69. कसेरिया, 70. हापुड़िया, 71. महरग, 72. गौड़वालिया, 73. चौराणिया, 74. अस्त्रेणिया, 75. विवाड़िया, 76. धरवाल, 77. मढ़ावाल, 78. भिवाड़िया, 79. प्रहरावरिया, 80. मैंदिया, 81. पिलखवाल, 82. डिडवाणिया, 83. कटेसरिया, 84. कड़खेरिया, 85. महरारा, 86. बेरीवाल, 87. भूमिवाल, 88. गोधड़िया, 89. मजाकवाल, 90. पिस्पोलिया, 91. मीरपुरिया, 92. लाटवाल, 93. लोधाड़िया, 94. पिलखवाल, 95. विजयवाड़, 96. तपस्विया, 97. कसनिया, 98. पटोधवाल, 99. पहरवाल, 100. बिजनोरिया, 101. लाहोरिया, 102. वरनेया, 103. झाड़ोलिया, 104. दिवाचिया, 105. कर्णवाल, 106. कलावड़िया निरहट।

अष्टायन कौशिक गोत्रीय गांव

1. थनेसरिया, 2. समालिया, 3. दशाहट, 4. सफीदमिया, 5. महरोलिया, 6. मंढ़ेलिया,

7. अष्टालिया, 8. वाधपतिया, 9. धमाणिया, 10. टंटपुरिया, 11. पहोवरिया, 12. जीदिया, 13. मरवड़िया, 14. रुधसाड़िया, 15. रामहदिया, 16. गढ़वालिया।

कुत्स गोत्रीय गांव

1. देवयज्ञिया, 2. कटारिया, 3. कुन्डेवाल, 4. अग्निहोत्रीया, 5. टराटिया, 6. धींगड़िया, 7. मंडारिया, 8. रगड़या।

कौत्स गोत्रीय गांव

1. अमरपुरिया, 2. भटाणिया, 3. पथरवाल, 4. सफीदमिया, 5. कंकरिया, 6. झगरहट, 7. लाटास्वामी, 8. नीदिया, 9. सकुलवाल, 10. ओडम्बरिया।

सांख्यायन गोत्रीय गांव

1. मिहरवाल, 2. कंकरवाल, 3. पुरवाल, 4. लोचवडाग, 5. मंगूरवाल, 6. मेरठिया, 7. टोहरीवाल, 8. सिरसवाल, 9. संख्यायन, 10. मुंडहालवाल, 11. त्रवड़ीवाल।

जमदग्नि गोत्रीय गांव

1. भदूरा, 2. कंकरवाल, 3. छारैया, 4. अजमेरियां, 5. सिंगवाल, 6. खंडवाल, 7. खेलनिया, 8. जोहरिया, 9. फल्गुवाल, 10. करारा, 11. महदीपुरिया।

वत्स गोत्रीय गांव

1. थमोड़िया, 2. झामरिया, 3. झाडोदिया, 4. कन्होरिया, 5. कांणोडिया, 6. सांडोलिया, 7. खरवाल, 8. रिटोलिया, 9. भोलाणि, 10. वेरवाल, 11. डाभड़ा, 12. कांकरिया, 13. धोलपुरिया, 14. कतेड़वाल, 15. जाड़ोतिया, 16. रिठालिया, 17. घाघसांणि, 18. विरेचना, 19. खेड़वाल, 20. खैरवाल, 21. टटोलिया, 22. सनोटिया, 23. बदलवाल, 24. निसविषय, 25. बुढ़ाड़िया, 26. लजवाड़िया, 27. त्रयणवाल, 28. ववेरवाल, 29. सांतोरिया, 30. किठोड़िया, 31. शिवपुरिया, 32. डिड़ोलिया, 33. नागरिया, 34. कड़ालिया, 35. गोरखपुरिया, 36. सूंड़याणि, 37. वगसरिया, 38. धड़ेल, 39. रूपवाल, 40. इन्द्रप्रस्थया, 41. समचाड़िया, 42. तिलोकड़िया, 43. हरवाणियां, 44. व्यासआश्रमी, 45. वदरवाल, 46. हरसवाल, 47. पतड़िया, 48. रिटोलिया, 49. कांड़ोदिया, 50. निमोठिया, 51. गढ़वालिया, 52. मामडोलिया, 53. ठाकराणि, 54. गरवालिया, 55. कामीवाल, 56. जानोलिया, 57. हरियाणिया, 58. इकनोलिया, 59. चौरवाल, 60. वारिकपुरिया, 61. त्रवड़ि या, 62. विजनहट, 63. मुनिस्थलिया, 64. वदरवाल भाष्यकरा, 65. पाठनिया, 66. देहरिया, 67. वहणालिया, 68. छपरोलिया, 69. कांणोलिया, 70. भटोलिया, 71. भटयाणिया, 72. भेंनवाल, 73. कनोखरिया, 74. नारनोलिया।

वत्सायन गोत्रीय गांव

1. व्यासाश्रमी, 2. शिवपुरिया, 3. भाष्यकरा, 4. मुनिस्थलिया, 5. मथुराणि।

शाण्डिल्य गोत्रीय गांव

1. ढ़ाचोला, 2. निग्रहवाल, 3. चुल्हीवाल, 4. ववरवाल, 5. शाण्डिल्य गोत्री शासन, 6. भट्टवलिया, 7. हिसारिया, 8. डिडवाड़िया, 9. राजपुरिया, 10. रोहितवाल, 11. बुढ़ाड़िया, 12. पुरवाल,

13. रखोतिया, 14. मंगलोरिया, 15. चन्द्रपुरिया, 16. नीदवाल, 17. कारविया, 18. वाहड़े, 19. वाझड़े, 20. धर्मपुरिया, 21. भूमिवाल, 22. मन्त्रवाल, 23. डाभला, 24. राजवतिया, 25. रेबलिया, 26. परतापुरिया, 27. बगड़ाट, 28. लजवाड़िया, 29. वंशवाल, 30. सहारनपुरिया, 31. खेकड़िया कलहोरिया।

मौदगल्य गोत्रीय गांव

1. कांकड़ोदिया, 2. बहादुरगड़िया, 3. मकड़ोलिया, 4. परधानिया, 5. थनेसरिया, 6. नैडाणिया, 7. पालिया, 8. सफीदमिया, 9. गुराणिया, 10. रोहणिया, 11. हावड़िया, 12. काकराणि, 13. भूपतिया, 14. विसरिवया, 15. श्यामपुरिया, 16. सिद्धिपुरिया, 17. रामपुरिया, 18. सेंनवाल, 19. दूणहट, 20. मवणिया, 21. सिखायण, 22. चरोलिया।

अगस्त्य गोत्रीय गांव

1. शुक्लपुरिया, 2. कुरुक्षेत्री, 3. म्याणिया, 4. विद्याधर, 5. तपोधरा, 6. तन्त्रवाल, 7. उंच्छला, 8. हरिभजिवाल, 9. जनपोषिया, 10. सागरवाल, 11. जोधपुरिया, 12. लंबोदरा, 13. वायुभखिया, 14. म्राजवाल, 15. सिंधुवाल।

जमदग्नि गोत्रीय गांव

1. जमदग्नि, 2. डाभड़ा, 3. पुरवाल, 4. जामिनिया, 5. स्थानप्रस्थिया, 6. गुसवाल, 7. रामपुरिया, 8. रतेलवाल, 9. परशुरामस्थलिया, 10. गुसवाल, 11. रामस्थलिया, 12. सनेमई, 13. अग्निपाल।

अघमर्षण गोत्रीय गांव

1. शुक्लपुरिया, 2. सितावरिया, 3. धोलिया, 4. पपाध्ना, 5. अघमर्षण।

विश्वामित्र गोत्रीय गांव

1. विश्वामित्रस्थलिया, 2. राजपुरिया, 3. भूधरा, 4. धुनुर्वाल, 5. रजोधरा, 6. शास्त्रधरा, 7. शंकरा, 8. रिसभरा, 9. तपोधरा।

हारीत गोत्रीय गांव

1. गरुणिया, 2. पुरवाल, 3. महमिया, 4. क़ाणुड़िया, 5. गंगतटिता, 6. संभलिया, 7. चंभलिया, 8. चुआल, 9. व्यासस्थलिया, 10. जीदवाल, 11. चुवाल, 12. जैवाल, 13. भीमवाल, 14. दुर्बला, 15. खोलवाल, 16. चौहान, 17. वासटवाल, 18. घनोरवाल, 19. गुणगामिया, 20. रिटोलिया, 21. बड़ेवाल, 22. चौह्लेवाल, 23. चौभाल, 24. रिमेलिया।

कपिल गोत्रीय गांव

1. साख्यशास्त्रिया, 2. शुक्लपुरिया, 3. सढ़ोलिया, 4. कपिलस्थलिया, 5. सिंधुतटिया।

दालभ्य गोत्रीय गांव

1. हरियाणिया, 2. मलापुरिया, 3. मकटवाल, 4. अरनावलिया, 5. कलापुरिया, 6. पूठिया, 7. हरनवालिया, 8. गौड़स्थलिया, 9. अमरपुरिया, 10. जलाशया, 11. अरनावलिया, 12. दिगम्बरिया।

कश्यप गोत्रीय गांव

1. कल्याणपुरिया, 2. सत्यबोला, 3. योगपुरिया, 4. गढ़ेलिया, 5. शिलाकरिया, 6. महोधरा,

7. ब्रह्मपुरिया, 8. आकरिया, 9. योगधरा, 10. अधोरिया, 11. स्वामीपुरिया, 12. डीडवाल, 13. वटाणिया, 14. ढ़ेरवाल, 15. बड़ोदिया, 16. घटवाल, 17. रोहितवाल, 18. लटानिया, 19. हमीरपुरिया, 20. जीवनवस, 21. इन्दोरिया, 22. अरण्डवाल, 23. प्रजावित्त, 24. उपाहणिया।

सांकृत्य गोत्रीय गांव

1. ब्रह्मक्षेत्रीया, 2. मथनपुरिया, 3. विदरवाल, 4. चुल्हीवाल, 5. मायापुरिया।

काश्यप गोत्रीय गांव

1. नन्दग्रामिया, 2. धर्मक्षेत्री, 3. अघोरिया, 4. ज्वालापुरिया, 5. गुणग्रामिया, 6. हिसारिया, 7. गोंगाड़िया, 8. गिरिराजिया, 9. भरतपुरिया।

कण्डव गोत्रीय गांव

1. पाशोरिया, 2. धीरपुरिया, 3. तुसारिया, 4. पहासोरिया, 5. पातड़ा, 6. चुनकटिका, 7. धरमपालिया, 8. यहोसोरिया, 9. भरोजेरिया, 10. लोकसरिया।

गौतम गोत्रीय गांव

1. शिशुलिया, 2. सिसाड़िया, 3. बिजनोरिया, 4. नोडोलिया, 5. इन्दोरिया, 6. धनाड़िया, 7. मांमडोलिया, 8. दोहलिया, 9. पटोधिया, 10. कबीरपुरिया, 11. सफीदमिया, 12. लजवाड़िया, 13. अग्निवाल, 14. डोहलिया, 15. बड़ोदिया, 16. बीकानेरिया, 17. गढ़ीवाल, 18. खेड़ीवाल, 19. वरवालिया, 20. वपनवाल, 21. तुमिरिया, 22. भोपवाल, 23. मगलोरिया, 24. सारवड़िया, 25. भिलाड़िया, 26. बराहिया, 27. भालड़िया, 28. कुरुक्षेत्रिया, 29. नोताड़िया, 30. खड़वाल, 31. सुरोलिया, 32. रोहटिया, 33. चन्द्रपुरिया, 34. पत्रवाल, 35. ननेरिया, 36. दोहलिया, 37. मुन्डनवाल, 38. अभदवाल, 39. कलातिया, 40 नाभवाल।

मैत्रेय गोत्रीय गांव

1. मित्रवाल, 2. ब्रह्मस्थली कुठारिया, 3. वलेणिया, 4. वैरवाल, 5. किरवाल, 6. वहरवाल, 7. चहणिया, 8. मेरठिया, 9. भद्रकरा, 10. भयहरा।

गर्ग गोत्रीय गांव

1. गर्गाश्रमी, 2. विसाणिया, 3. वैद्यकिया, 4. मधुपुरिया, 5. योगवाल, 6. सांकमिया, 7. कृष्णपुरिया, 8. पालीवाल, 9. जोधपुरिया, 10. ऐवरिया, 11. ऐंचवाल, 12. वैणवाल, 13. टंडोलिया, 14. मधुपुरिया, 15. गोपियां, 16. निरालिया, 17. वसूरमिया, 18. झुपरिया।

कौडिन्य गोत्रीय गांव

1. महोदयपुरिया, 2. सूत्रधार, 3. अनन्तनिया, 4. थनेसरिया, 5. बुबाणीवाल, 6. मगलोरिया, 7. बोहणिया, 8. पेहावाल, 9. महमिया, 10. मढ़ीवाल, 11. पत्थरवाल, 12. जीदिया, 13. डाहरवाल, 14. भलोदिया, 15. सूत्रवाल, 16. पांचलीवाल, 17. डीरवाल, 18. डोरीवाल।

जैमिन गोत्रीय गांव

1. विठूरिया, 2. दृढ़वृत्तिया, 3. वसंडवाल, 4. धर्मपुरिया, 5. मीमासक।

सुवर्ण गोत्रीय गांव

1. गरुणस्थलिया, 2. ओचन्दवाल, 3. विष्णुस्थलिया, 4. संसारिया, 5. गढ़वाल।

सौपर्ण गोत्रीय गांव

1. प्रभाकर, 2. नगरवाल, 3. जीदवाल, 4. गारडू 5. विषहरा।

सावर्णि गोत्रीय गांव

1. ज्योतिसिया, 2. पाटणिया, 3. जयपुरिया, 4. बगड़हट, 5. हरणिया, 6. जोधपुरिया।

सुनक गोत्रीय गांव

1. मिश्रकिया, 2. निभिषेक्षेत्रिया, 3. पुराणिया।

शोनक गोत्रीय गांव

1. नेंमिसारिया, 2. कथकड़ा, 3. व्योहनिया, 4. टीडवाल, 5. वंशिया।

शांकल्य गोत्रीय गांव

1. जनकपुरिया, 2. भंगवाल, 3. दुर्वेश, 4. गंगोलियां, 5. वंगवाल, 6. विगरवाल, 7. दुर्वेधर, 8. दुर्वला, 9. दोहटवाल, 10. दिलवाल।

कात्यायन गोत्रीय गांव

1. मधुपुरिया, 2. मांदकोरिया, 3. कमलिया, 4. विमोलिया, 5. सोंनिया, 6. गलहलिया, 7. मेरठिया, 8. शिविकराणि, 9. बुढ़ाणिया, 10. ब्रिजवासनिया।

आलम्पायन गोत्रीय गांव

1. रम्बा, 2. थनेसरिया, 3. जटाधरा, 4. त्रवड़िया, 5. बुढ़ानिया, 6. कामिया, 7. पतड़िया।

गालिब गोत्रीय गांव

1. मूणीवाल, 2. जेवनवाल, 3. काठा, 4. काछड़, 5. लोचिव, 6. वाबलिया।

विल्च गोत्रीय गांव

1. दूधाधारी, 2. भीड़ा, 3. जीदिया, 4. व्याघ्रपदिया, 5. पर्वतिया, 6. मैढ़िया।

विष्णु गोत्रीय गांव

1. वृद्धापन, 2. श्रीकरिया, 3. गौडवाल, 4. भेड़िया, 5. द्विजाड़िया, 6. कसेरवाल।

उपलभ्य गोत्रीय गांव

1. सूत्रकारिया, 2. संखवाल, 3. उपलवाल, 4. कलाहरी, 5. भरटिया, 6. पटोलिया, 7. संडरवाल, 8. चिकित्सका।

अव्यय गोत्रीय गांव

1. चोंधराणिया, 2. सूरवाल, 3. भुवारिया, 4. जयवाल, 5. भूवाल।

उपमन्यु गोत्रीय गांव

1. शुक्रस्थलिया, 2. कपिस्थलियां, 3. विश्वंभरा, 4. सांपला, 5. कोटिवाल, 6. जटाधरिया, 7. शरटिला, 8. बुढ़ाड़िया, 9. सर्पस्थलिया, 10. पाईवाल।

कल्पिष गोत्रीय गांव

1. लालपुरिया, 2. मरुस्थलिया, 3. रामगढ़िया, 4. भुजक्कड़ा, 5. चूरवाल।

जावाल गोत्रीय गांव

1. सहारनपुरिया, 2. करवाटिया, 3. धोलिया, 4. मूसेपुरिया, 5. उठोलिया।

कंचन गोत्रीय गांव

1. कंचनपुरिया, 2. सुनारिया, 3. सोमपुरिया, 4. कंचनगरिया, 5. गोरखिया, 6. चूरवाल, 7. श्यामपाड़िया, 8. मरुस्थलिया।

वामदेव गोत्रीय गांव

1. अम्बरीषस्थलिया, 2. राशिया, 3. वारिकपुरिया, 4. नायका, 5. विरजवा।

अनावृक गोत्रीय गांव

1. पावकिया, 2. मनाणिया, 3. कराणिया, 4. चुल्काणिया, 5. शालवाल।

सौपायन गोत्रीय गांव

1. लालसरेया, 2. कुलंधरा, 3. अजस्थलिया, 4. वोधड़ा, 5. भंगवाल।

धोम्य गोत्रीय गांव

1. सहारनपुरिया, 2. गजपुरिया, 3. कमलगिरिया, 4. मुक्तनगरिया, 5. भीष्मस्थलिया, 6. ढ़ाड़वाल, 7. परीक्षतगड़िया।

दूढ़ गोत्रीय गांव

1. गुड़पुरिया, 2. हिसारिया, 3. धोरजिया, 4. दाढ़र्युच्यत, 5. द्रढ़ब्रतिया, 6. गुडपुरिया, 7. अर्नावटिका।

चित्र गोत्रीय गांव

1. चित्रमोड़ा, 2. शंकरवाल, 3. ग्रहकरा, 4. मोरवरिया, 5. चतेरिया।

व्याघ्रपाद गोत्रीय गांव

1. वाघ्रपतिया, 2. बघेरिया, 3. अन्तरवेदिया, 4. कसारिया, 5. जमनिया।

वीतहन्ब्य गोत्रीय गांव

1. वंशरीवाल, 2. बीतरागिया, 3. बहुरागिया, 4. हव्यस्थलिया, 5. सत्रस्थलिया।

मित्रावरूण गोत्रीय गांव

1. ब्रह्मपुरिया, 2. सर्पदमिया, 3. महोदिया, 4. सौतिया, 5. स्वर्गिया।

अजगोत्र गोत्रीय गांव

1. अजमेरिया, 2. बड़ग्रामिया, 3. बगड़वाल, 4. अजमीढ़िया।

अनावृक गोत्रीय गांव

1. बकस्थलिया, 2. शरभिया, 3. बकोदरा, 4. वीरासना, 5. शस्त्रधारिया।

यज्ञवल्क्य गोत्रीय गांव

1. यज्ञपालस्थिया, 2. वणावाल, 3. मेहरवाल, 4. जनकस्थलिया, 5. महलवाल, 6. जीतिया, 7. निर्भया।

वासुक गोत्रीय गांव

1. धरवाल, 2. सर्पदमना, 3. चित्यावना, 4. बिहारिया, 5. उज्वलग्रामिया।

पाणिन गोत्रीय गांव

1. पाणिनप्रस्थिया, 2. पाढ़िया, 3. पानीपतिया, 4. सढ़िया।

माण्डव्य गोत्रीय गांव

1. पाठकिया, 2. गौधूमिया, 3. शूरपुरिया, 4. शरटिया, 5. तंडूलवाल।

मार्कण्डेय गोत्रीय गांव

1. मार्कण्डेयस्थलिया, 2. झावड़ा, 3. तिरईया, 4. पोराणिकिया, 5. ओघड़िया।

वौधायन गोत्रीय गांव

1. वोधपुरिया, 2. धावड़िया, 3. महताणिया, 4. अधहरा, 5. पुष्पदन्ता।

यास्क गोत्रीय गांव

1. यशकरा, 2. पाकवाल, 3. ग्वालिया, 4. करमिया, 5. दुधवाल।

माध्यन्दिनी गोत्रीय गांव

1. मध्यान्दनी, 2. बाजसनईया, 3. शाखाधारी, 4. उज्वला, 5. घोखया।

लौगाज्ञ गोत्रीय गांव

1. अन्नवाल, 2. भ्रमहरा, 3. कोटवाल, 4. कौंणापिया, 5. अक्षिपाल।

कर्ण गोत्रीय गांव

1. कुरुक्षेत्री, 2. कानपुरिया, 3. कलारिया, 4. करनालिया, 5. कर्णप्रस्थिया।

कर्दम गोत्रीय गांव

1. कर्दमस्थलिया, 2. कपिलाश्रमी, 3. झिंझिटिया, 4. सांख्यपाल, 5. गरपालिया।

उतथ्य गोत्रीय गांव

1. उतथ्यग्रामिया, 2. कौड़िया, 3. शकूरपुरिया, 4. विषहरिया।

आपस्तम्ब गोत्रीय गांव

1. श्रापस्थम्बिया, 2. भटनिया, 3. जलतईया, 4. शिवकरा, 5. वनवासिया।

गृत्समद गोत्रीय गांव

1. भिन्डपालिया, 2. करारा, 3. गमनिया, 4. मदनग्रसिया, 5. हुकारिया।

आष्टिषेणा गोत्रीय गांव

1. अरिष्टहरा, 2. कर्णवाल, 3. धुरैया, 4. परपक्षिया।

गोभिल गोत्रीय गांव

1. गोभिया, 2. ओषधिवाल, 3. लाभवाल, 4. सुखकरा, 5. रोगहरा।

अश्वलायन गोत्रीय गांव

1. अश्वपुरिया, 2. शुभ्रस्थलिया, 3. घुड़सालिया, 4. कुंकड़िया।

च्यवन गोत्रीय गांव

1. च्यवनश्रमी, 2. कुन्डलिया, 3. कल्याणिया, 4. ढूसिया।

और्व गोत्रीय गांव

1. लंवनिया, 2. स्वर्णप्रस्थिया, 3. मनाणिया, 4. तनमारा, 5. जंघपालिया।

देवरात गोत्रीय गांव

1. देवपुरिया, 2. अमरिया, 3. छड़वाल, 4. सोमनगरिया, 5. दोसवाल, 6. भलवाल, 7. धूसरा, 8. कुन्डिया, 9. च्यवनिया, 10. भारगू।

धनंजय गोत्रीय गांव

1. धनपतिया, 2. शलाधरिया, 3. पानवाल, 4. द्रव्यवालिया, 5. व्यापारिया।

उद्दालक गोत्रीय गांव

1. उदलपुरिया, 2. सुगंधिया, 3. गुणिया, 4. अष्टांगिया, 5. निरोधिया।

पातंजली गोत्रीय गांव

1. भाष्यकरा, 2. योगधरा, 3. गुणिया, 4. अष्टांगिया, 5. निरोधिया।

उद्वाह गोत्रीय गांव

1. गुणवाल, 2. करपाणिया, 3. पुष्यवाल, 4. घाटिया, 5. वाहकारिया।

रोहित गोत्रीय गांव

1. धनपालिया, 2. यज्ञवाल, 3. शंखवाल, 4. गोपालिया, 5. रोहितवाल।

अयास्य गोत्रीय गांव

1. शंखिया, 2. जूटिया, 3. अटोरिया, 4. लवणपुरिया, 5. घोरनादिया।

सौ कालीन गोत्रीय गांव

1. अनंगपालिया, 2. न्यायवाल, 3. सकोलपुरिया, 4. अग्निहुतिया।

आप्लावान गोत्रीय गांव

1. पापालिया, 2. शूरपुरिया, 3. आप्लश्रषिया, 4. जड़ीवाल, 5. करमेदिया।

आसुरि गोत्रीय गांव

1. भलाणिया, 2. भलैया, 3. अभिचारिया, 4. पांचालिया।

अनूप गोत्रीय गांव

1. अनूपनगरिया, 2. कुसुमपुरिया, 3. पारसिया, 4. गंगस्थलिया।

जातूकर्ण्य गोत्रीय गांव

1. भापड़ोदिया, 2. इन्द्रप्रस्थिया, 3. कर्मपुरिया, 4. आदिनगरिया, 5. सोधिया, 6. वसोंदिया, 7. भीषमपुरिया, 8. धरनालिया, 9. सोंदिया, 10. कधरिया।

राजा जनमेजय ने जिस ऋषि को जो गांव दिया था, उस गांव में कालान्तर में उनके रिश्तेदार भी आकर बस गये, जिससे आज बहुत सारे गांव बहुगोत्रीय हो गये हैं।

□□

सारस्वत ब्राह्मण

सारस्वत ब्राह्मणों की उत्पत्ति

विभिन्न पुराणों में सारस्वत ब्राह्मणों की उत्पत्ति की विविध कथाएं मिलती हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

(1)

महर्षि दधीचि का आश्रम सरस्वती नदी के तट पर था। उनकी पत्नी गर्भवती थी। एक दिन वह स्नान करने के लिए गयी। सरस्वती के तट पर उसे प्रसव पीड़ा हुई, वहीं पुत्र पैदा हो गया। महर्षि दधीचि ने उस बच्चे का नाम सारस्वत रखा।

(2)

महर्षि दुर्वासा ब्रह्मलोक गये थे। वहां उनके मुख से कोई अशुद्ध शब्द निकल गया। माता सरस्वती वहीं थीं। उन्हें हंसी आ गयी। महाक्रोधी दुर्वासा ने शाप दे दिया—जाओ मर्त्यलोक में मानुषी बनो। सरस्वती को जन्म लेना पड़ा और उनका विवाह महर्षि दधीचि के साथ हुआ। उनकी सन्तान सारस्वत कहलायी।

(3)

भगवान् राम लंका विजय करके लौट रहे थे। जब वे चित्रकूट के पास आये, तो हुनमानजी से कहा, "हनुमानजी! मैंने ऐसा निश्चय किया था कि हिंगुला माता का दर्शन करके अयोध्या में पांव रखूंगा।" हुनमानजी ने कहा, "प्रभो! चलें, मां हिंगुला का दर्शन कर लिया जाये।" भगवान् सदल बल चल दिये। रास्ते में एक साधु सोया हुआ मिला। हनुमानजी ने उसे जगाया। वह भगवान् राम को देखकर अति प्रसन्न हुआ, उनका स्वागत किया, दर्शन से अपने को धन्य मान लिया।

भगवान् राम ने उसका परिचय पूछा, उस सिद्ध सन्त ने भगवान् से कहा, "मैं साधु हूं, हिंगुला देवी के आश्रम के पास हमारा भी आश्रम है। मैं बहुत दिन जगने के बाद यहां सोया था।"

भगवान् राम ने साधु से हिंगुला मां का दर्शन कराने का आग्रह किया।

साधु सभी को पहले अपने आश्रम में ले गया और भोजन के लिए निवेदन किया। भगवान् राम ने कहा, "मैं बिना ब्राह्मणों को भोजन कराये और यथेष्ट दक्षिणा दिये भोजन नहीं करूंगा। इस गहन वन से ब्राह्मण चले गये हैं, उनका मिलना असम्भव है, इसलिए आज भोजन करूंगा ही नहीं।"

साधु ने कहा, "प्रभो! मैं अभी ब्राह्मणों का दर्शन कराता हूं।" इतने में भगवती सरस्वती वहां प्रकट हो गयीं। राम से कहने लगीं, "हे राम! अपना इच्छित वर हमसे मांगो।" राम ने कहा, "मां! मैं ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहता हूं।" देवी ने अपनी हथेली जमीन पर घिसी और वहां से अग्नि के समान तेजस्वी 1296 ब्राह्मण उत्पन्न हो गये।

वे ब्राह्मण सरस्वती से उत्पन्न होने के कारण सारस्वत कहलाये।

सारस्वत कुलों की उपाधि आदि का वर्णन

पंच जाति (अढ़ाई घर)

1. **कुमड़िये गोत्र**—जमदग्नि, भार्गव, च्यवन, वत्स, आप्लवान, और्व, जामदग्न्य।
   वेद—यजुर्वेद
   उपास्यदेव—कुमार (कार्तिकेय)
2. **झिंगड़ गोत्र**—भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य, झंगड़।
3. **जेतली**—गौतम, वत्स्य, अंगिरस, ओसनस, जैत।
4. **तिक्खे**—पराशर, वशिष्ठ, शक्ति, तुत्सृ, पराशर।
5. **मोहले**—सोमस्तम्भ, काश्यप, अवत्सार, नैध्रुव, मुशल।

चार-घर

उपरोक्त कुमड़िये, जेतली, झिंगड़, तिक्खे और मोहले को चार घर भी कहते हैं।

तीसरी श्रेणी

उपरोक्त ढाई घर या चार घर का ही नाम बदलकर तीसरी श्रेणी (उपरोक्त से कुछ न्यून कर दिया गया है) जैसे—

1. तुमड़िये (कुमड़िये) 2. पेतली (जेटली) 3. पिंगड़ (झिंगड़)
4. पिक्खे (तिक्खे) 5. वोहले (मोहले)

उपरोक्त ढाई कुल ब्राह्मणों की उत्पत्ति

कुमड़िये

ये भृगुवंशीय महर्षि जमदग्नि के वंशज हैं। इनके इष्ट देवता कुमार कार्तिकेय हैं। इसलिए इनको 'कुमारोपासक' या 'कुमारीय' कहा जाने लगा। यही 'कुमारीय' शब्द विकृत होकर 'कुमड़िये' हो गया।

इनका **गोत्र**—वत्स्य है।

महर्षि बौधायन ने इनके 5 प्रवर लिखे हैं—

1. भार्गव 2. च्यवन 3. आप्लवान 4. और्व 5. जामदग्न्य

वेद—शुक्ल यजुर्वेद, **शाखा**—माध्यन्दिनी, **उपवेद**—धनुर्वेद और **सूत्र**—कात्यायन है।

जेतली

महर्षि अंगिरा के 3 पुत्र हुए—1. उतथ्य, 2. बृहस्पति, 3. संवर्त।

महर्षि उतथ्य का ही नाम उशिज भी है। इनकी स्त्री का नाम ममता था। इनके पुत्र प्रसिद्ध गौतम ऋषि हुए।

ये जेतली सारस्वत, गौतम वंशीय हैं। इनकी शाखा औशनस है। इनके उपास्य देवता नहील रुद्र हैं। मथुरा के गोकर्णेश्वर मन्दिर में इनकी मूर्ति है।

गोत्र—गौतम, वत्स्य

प्रवर—अंगिरस, गौतम, औशनस

वेद—शुक्ल यजुर्वेद

शाखा—माध्यन्दिनीय

सूत्र—कात्यायन

देश—मधुपुरी के पास जैतलपुर

नदी—यमुना

वृक्ष—शमी (शमी को ही जैत कहते हैं, यह इनका कुल वृक्ष है।)

जैतलियों में श्री पुण्य पाल के तीन पुत्रों—1. चांडा, 2. कुल्ला, 3. रूपा से स्तम्भ चलते हैं।

झिंगण

अंगिरा ऋषि के द्वितीय पुत्र देव गुरु बृहस्पति के औरस पुत्र भारद्वाज के कुल में उत्पन्न हुए हैं, इसलिए इनका गोत्र भारद्वाज है।

गोत्र—भारद्वाज

प्रवर—अंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज

मेदिनी कोश में ''झ'' का प्रयोग बृहस्पति के लिए हुआ है। इसलिए 'झगण' भरद्वाज कहलाये। कालान्तर में यही 'झगण', 'झंगण' हो गया फिर 'झिंगण' हो गया।

वेद—शुक्ल यजुर्वेद

शाखा—माध्यन्दिनीय, **उपवेद**—धनुर्वेद

सूत्र—कात्यायन

कुलदेवी—भटियानी चण्डिका भवानी

देश—सारस्वत—इसी से इनका निकास मुलतान के आगे 'सतीदी' को भी लोग कहते हैं।

इन झिंगण भरद्वाजों में बाबा पैड़ा के थंभे अत्तू पोत्रे, नत्थु पोत्रे और गौतम पोत्रे की तीन प्रधान शाखा है।

गुंसाई, बाबे और व्यास की उपाधि से इन्हीं के तीनों थंभे प्रसिद्ध हैं।

तिक्खे

तिक्खे सारस्वत महर्षि वशिष्ठ के वंश में हैं। ऋग्वेद में इन वशिष्ठ वंशजों को तृत्सु कहा गया है। इस तृत्सु शब्द का ही अपभ्रंश त्रिक्खा या तिक्खा है।

गोत्र—पराशर

प्रवर—वशिष्ठ, शक्ति, पराशर

वेद—यजुर्वेद

शाखा—माध्यन्दिनीय, **उपवेद**—धनुर्वेद

सूत्र—कात्यायन

शिखा—दक्षिण

मोहले

सारस्वतों की पंच जाति से किन्हीं कारणों से पम्बुओं को निष्कासित कर दिया गया था। सारस्वतों

के पंच जाति की पंचायत यह विचार करने के लिए बैठी कि इस पंच जाति में अब किसको शामिल किया जाये। इसी बीच छत से एक चूहा (मूषक) पंचायत में गिर गया। पंचायत ने इसको दैवी संकेत समझकर मोहलों को अपनी पंचायत में सम्मिलित कर लिया; क्योंकि पंजाबी भाषा में 'चूहे' को 'मोहला' कहते हैं।

गोत्र—सोमस्तम्भ

प्रवर—काश्यप, अवत्सार, नैध्रुव

शाखा—माध्यन्दिनीय, **वेद**—यजुर्वेद

सूत्र—कात्यायन

ये द्रामुष्यायण हैं। यह पुत्री के पुत्र हैं। इनका गोत्र स्तम्भ या स्तम्ब हैं।

मोहल्ले सारस्वतों की कुल देवी चण्डिका है और इनके यजमान शैगल क्षत्रिय प्रसिद्ध हैं।



सारस्वत ब्राह्मणों के भेद

ये लोग उत्तरी भारत (पंजाब) में सर्वत्र पाये जाते हैं। ये सम्पूर्ण ब्राह्मणों में प्राचीन हैं। इनके दो भेद हैं—

1. वनजाई, वावनजाई, वामनजाई, वौंजाई
2. मोहाल

वामनजाई—यह शब्द संस्कृत के ब्राह्मण जयी शब्द से बिगड़कर बना है।

इस सन्दर्भ में एक इतिहास प्रसिद्ध है—सं० 1348 विक्रमी में अलाउद्दीन दिल्ली का शासक था। उस समय ब्राह्मण क्षत्रीय आदि उच्च जातियों में विधवा विवाह या पुनर्भू विवाह वर्जित था।

अलाउद्दीन ने राजाज्ञा प्रसारित किया कि "ब्राह्मण क्षत्रीय तथा दूसरे उच्च वर्ण के लोगों को विधवा विवाह करना पड़ेगा। जो नहीं करेगा, उसे दण्डित किया जायेगा।"

इस आज्ञा का विरोध 52 क्षत्रियों के कुलों ने किया और विजयी हुए। तब से उन क्षत्रिय वंशों की "बावनजई" संज्ञा हुई। इसका विकृत रूप वावनजाई या वामनजाई या वनजाई है। खत्रियों में अब तक 'वौंजाई' शब्द प्रचलित है।

जिन सारस्वत ब्राह्मणों ने अपने यजमान क्षत्रियों के साथ मिलकर उक्त धर्म विरुद्ध आदेश को अस्वीकार किया, वे ब्राह्मण जयी या वामनजई कहलाये।

ये खत्रियों के यहां पहले भी कच्ची रसोई खाते थे, अब भी खाते हैं। अलाउद्दीन के जमाने में सब एक साथ रहते थे, इसलिए दोनों कुलों का नाम वामनजई हो गया।

किन्तु बौंजाई का शुद्ध शब्द बाहुजई है, अर्थात् वे क्षत्रिय, जिन्होंने अपने बाहुबल से अलाउद्दीन के धर्म विरुद्ध आदेश पर विजय प्राप्त की, वे 'वौजाई' खत्री कहलाये।

(1) कांगड़ा के सारस्वत ब्राह्मण (अन्य उत्तम श्रेणी)

1. वग्गे
2. प्रभाकर
3. परदूल
4. श्यामपोतरे
5. भटूरिये
6. दत्त
7. चूर्ण
8. भोजेपोतरे
9. कालिये
10. झिब्बर
11. अर्ण
12. धन्न
13. धन्नपोतरे
14. मालिये
15. वाली
16. सरदल
17. शेतपाल
18. कपूरिये
19. वैद्य (वारी)
20. खेतुपोतरे
21. नेवले
22. लव
23. कालिये
24. सिन्धुपोतरे
25. रावड़े
26. मुह्यल
27. प्रभाकर

28. वदेपोतरे
29. चूनीवालंम्व
30. मोहन लखनपाल
31. द्रवड़े
32. सर्वलिये मुह्यल
33. वद्रेपोतरे
34. ऐरी
35. गैधर
36. पंढ़ित
37. पण्डित्त
38. वखतलाड़िली
39. (1) अष्ठवंश
40. पाठक
41. मन्नन
42. थामादासी
43. (2) संढ़
44. ठन्ड़े
45. भवी
46. पुश्रत
47. (3) पाठक
48. गड्रूरेपत्ती
49. भारद्वाजी
50. (4) कुरल
51. ढ़ोकच
52. चित्तचोर
53. काठपाल
54. (5) भरद्वाजी
55. छकड़े
56. शारद
57. घोरके
58. (6) जोशी
59. अजपोत
60. पुषणि
61. (7) शोरी
62. सन्नरेपुन्न
63. मनोत
64. सिन्धुपाल
65. (8) तोवाड़ी वन्दू
66. (9) मरुढ़
67. न्यासी

वामनजाई
'अन्य उत्तम श्रेणी'

1. अग्निहोत्री
2. अग्रफक्क
3. आचारन
4. अल
5. अंगल
6. आरी
7. ईसर
8. ईसराज
9. ऋषि
10. ऐरे
11. ओगे
12. कपाल
13. कुन्दि
14. कलन्द
15. कुसरिति
16. कपाले
17. कुण्ड
18. कण्डचारे
19. कलि
20. काई
21. पल्हण
22. कर्दम
23. करडम
24. कुसरित
25. किरार
26. कुतवाल
27. कुरुरपाल
28. कलस
29. कुच्छी
30. केजर
31. कोटपाल
32. कारडगे
33. काठपाल
34. खटवंश
35. खती
36. खोरे
37. खिन्दडिये
38. गंगाहर
39. गांदर
40. गांधे
41. गजेसू
42. गन्दे
43. गांधी
44. गुटरे
45. घोटके
46. चनन
47. चित्तचोर
48. चुनी

49. थकपालिये
50. चब्भे
51. चितचोट़
52. चन्दन
53. चूड़ामन
54. जालप
55. चूनी
56. चूखन
57. छिब्बे
58. जालपोत
59. जोतशी
60. जल्की
61. जेठके
62. जयचन्द
63. जोति
64. जलप
65. जसक
66. डिडूडि
67. जठरे
68. जचरे
69. जचरे
69. झमाण
70. वेले
71. टाढ़
72. टगले
73. टनिक
74. तिवाड़
75. डगले
76. डंगवाल
77. ठन्डे
78. तिवाड़ी
79. त्रिपाणों
80. तेजपाल
81. तिनूनी
82. तल्लण
83. तोले
84. तोते
85. तिनमणी
86. दंगवल
87. तगाले
88. दगाले
89. तंगणवते
90. धायी
91. पारशर
92. नाद
93. नाभ
94. दवेसर
95. द्धवारे
96. धम्मी
97. पांघे
98. पंजन
99. पाल
100. पुंज
101. पाधि
102. पलतू
103. पुजे
104. पट्टू
105. परींजे
106. पंढ़े
107. पाड़े
108. पिपर
109. पन्च
110. पठल्ल
111. पठरू
112. पुच्छतन
113. ब्रह्मी
114. वाहोये
115. ब्रह्मसुकुल
116. वटूरे
117. विजराये
118. विवढ़े
119. बन्दू
120. भाखरखोरे
121. भारखारी
122. भारद्वाजी
123. भारधे
124. भिन्डे
125. भूत
126. भणोत
127. भटरे
128. भाजी
129. भम्बी
130. भोग
131. भागी
132. भटेर
133. मज्जू
134. मोहन
135. मकावर
136. गन्दार
137. मरुद
138. मसोदरे
139. मन्दहर
140. मैत्र
141. मदरखम्म
142. मेडू
143. मेहद
144. मच्छ
145. महे
146. मुसतल

147. मण्डहर
148. मधरे
149. यम्य
150. रतनपाल
151. रूपाल
152. रनदेह
153. रति
154. रमताल
155. रतनिये
156. रुथड़े
157. रांगड़े
158. लखनपाल
159. लालडिये
160. लक्कड़फाड़
161. लालीबचे
162. लुद्र
163. लट्टू
164. लाहद
165. लुघ
166. विनायक
167. वासदेव
168. वशिष्ठ
169. विरद
170. व्यास
171. वटेपोतरे
172. विरार
173. श्रीखर
174. श्रीडट्ठे वासदेव
175. शेतपाल
176. शालवाहन
177. सीढ़ी
178. संगद
179. संधि
180. सूरन
181. सहजपाल
182. सनखोतरे
183. सोयरी
184. सणावल
185. सैली
186. संगर
187. सांग
188. सुन्दर
189. सट्टीय या सेठी
190. हरद
191. हांसिले
192. सधीर
193. हरिये
194. हरी
195. हंसतीर

नोट—हुशियारपुर जिले में एक गांव है। लगभग 400 वर्ष पहले जुए में यह गांव जीता गया था। इसलिए इसका नाम ज़्वार पड़ा। इस समय उस गांव का नाम रामट्टवाली है। इस गांव के सारस्वत ब्राह्मण ज्वार शतक वंश के कहलाते हैं।

ये लोग लाहौर, अमृतसर, गुरुदासपुर, बटाला, जालन्धर, मुलतान, लुधियाना, उच्च, झंग और शाहपुर में निवास करते हैं।

दत्तापुर, हुशियारपुर के सारस्वतों की उत्तम श्रेणी

1. खजूरिये 2. दुवे 3. डोंगरे, 4. पांघे, 5. घोहसनिये 6. खिदड़िये 7. ढ़ोलवालवैये 8. पाघेददिये 9. लखनपाल 10. सरमायी।

'दूसरी श्रेणी'

1. अल 2. कमाहटिये 3. कुटल्लेडिये 4. कालिये 5. गदोत्तरे 6. चपड़ोहिये 7. चिवमे 8. चंधियल 9. चिरणोल 10. छकोत्तर 11. जलरैये 12. जुआल 13. झुम्मुटियार 14. झौल 15. स्वाहिये 16. डोसे 17. ताक 18. ताड़ी 19. थानिक 20. दगड़ 21. दल्लोहल्लिये 22. पटडू 23. पन्याल 24. पण्डित 25. वाधले 26. भरधियाल 27. भटोल 28. भसूल 29. भदोये 30. भटोहये 31. रजोहद 32. लाहद 33. लाठ 34. लई 35. वंटडे 36. शारद 37. समनोल 38. सेल 39. संड 40. ढ़प्पे 41. भगोतरे 42. वंभवाल 43. सपोलिये पांधे 44. केसर 45. दवे 46. मोहन 47. खजूरे 48. नाध 49. लव

50. छिव्वर 51. वढ़याल 52. लट 53. वैद्य 54. वालिये 55. अम्बूआल पण्डित 56. प्रोहित 57. भटर 58. मकड़े 59. मुचले 60. मदोदे 61. मिश्र 62. मैते 63. मिरट 64. भुकाती 65. श्रीधर।

'मध्य श्रेणी'

1. अधोत्रे 2. पाराशर 3. मिश्र 4. सपनोत्रे 5. कटोत्रे 6. वड 7. मलोत्रे 8. सुध्रालिये 9. कश्मीरी 10. पण्डित वनालपाधे 11. रेणो 12. सुदालिये 13. केर्णिये 14. पण्डित 15. वनगोत्रे 16. ललोत्रे 17. पन्धोत्रे 18. डगोत्रे 19. भगोत्रे 20. विल्हानोच 21. महिते 22. भरेड 23. सतोत्रे 24. पुरोच।

'तृतीय श्रेणी'

1. उपाधे 2. गराडिये 3. धरिओच 4. भरंगोल 5. उदिहल 6. घोड़े 7. धमानिये 8. भलौंच 9. उत्रियाल 10. धम्मे 11. नभोत्रे 12. भैंनखरे 13. कलंपरी 14. चरगांट 15. पटल 16. भूरिये 17. किरले 18. चन्दन 19. पिन्घड 20. भूत 21. कुन्दन 22. चकोत्रे 23. पृथ्वीपाल 24. मुण्डे 25. कीड़े 26. छछियाले 27. पलाधू 28. मरोधे 29. कमनिये 30. जलोत्रे 31. पंगे 32. मगडोल 33. कम्बो 34. जखोत्रे 35. फनकड़ 36. मनसोत्रे 37. कुडिदव्य 38. जरडवगनाछाल 39. मगदियालिये 40. कर्नाठिये 41. महीजिये 42. वसमोत्रे 43. माथर 44. कठियालू 45. जड 46. वरात 47. महीजिये 48. कानूनगो 49. जम्बे 50. षडकुलिये 51. मधोत्रे 52. कालिये 53. ऊनगोत्रे 54. वाल्ली 55. मखोत्र 56. कफनखो 57. झिन्घड 58. वनोत्रे 59. मच्छर 60. खरोत्रे 61. झल 62. ब्रहमिये 63. यन्त्रधारी 64. खगोत्रे 65. झावडू 66. वरगोत्रे 67. रजूलिये 68. खिदड़िये 69. पाधेझवाडू 70. वच्छल 71. रजूनिये 72. गौड़पुरोहित 73. ठकुरेपु 74. वाटियालिये 75. रतनपाल 76. मशोच 77. डडोरिच 78. यवनोत्रे 79. विसगोत्रे 80. मुहलिये 81. तिरपद 82. वहल 83. रेडाधिये 84. गुड्डे 85. यवनोत्रे 86. विसगोत्रे 87. लाढ़श्चन 88. गोकुलिये 89. थनमथ 90. वुधार 91. लम्वनपाल 92. गल्हन 93. दव्व 94. बड़दोलवादो 95. ग़न्दरघाल 96. टुहल 97. भूरे 98. लभोत्रे 99. शशगोत्रे 100. सागड़े 101. सशेच 102. सेनहसन 103. सूदन 104. सुनचाल 105. सरमाई सुहण्डिये 106. सुक्ले 107. सिरखडिया 108. सुथड़े 109. सोल्हे 110. संगडोल 111. सलूर्ण 112. सिघाड 113. सागुडिये 114. साणद्दोच।

'कांगड़े के पहाड़ी सारस्वतों की प्रथम श्रेणी'

1. आचारिये 2. ओषदी 3. कसटु 4. दीक्षित 5. नाग 6. पण्डित 7. कश्मीरी 8. पंचकर्ण 9. मिश्र कश्मीरी 10. मदिहारी 11. राड्णो 12. सोत्रि 13. वेदवे, चुणामणी।

'द्वितीय श्रेणी'

1. खजूरे 2. सुरबध 3. गलबढ़ 4. गुटरे 5. चिथू 6. चलिवाले 7. छुववन 8. डुमरे 9. डींगमार 10. डेहेड़ी 11. धामुड़ 12. पनयालू 13. पम्बर 14. पोतअड टोटरोटिये 15. पाधे सरोज 16. पाधेरबजूबू 17. पाधेमहिते 18. मनवाल 19. मगरूडिये 20. मैते 21. रक्खे 22. रम्बे 23. विष्टप्रोत।

□□

सनाढ्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति

भगवान् राम लंका विजय करके जब अयोध्या लौटे, तो विचार किया कि रावण एक विद्वान् और कुलीन ब्राह्मण था। उसकी हत्या से हमारे ऊपर 'ब्रह्म हत्या' का दोष जरूर लगा होगा, इसलिए ब्रह्म हत्या दोष निवारक यज्ञ कराना चाहिए। यह सोचकर देश के मूर्धन्य विद्वानों को आमन्त्रित किया गया और एक महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञान्त में भगवान् याज्ञिक ऋषियों को दक्षिणा में गौ, रत्न, धन आदि देने लगे, तो ब्राह्मणों ने प्रतिग्रह लेने से इनकार कर दिया। भगवान् राम ने ब्राह्मणों से बहुत अनुनय-विनय किया, किन्तु उन्होंने उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। इस पर भगवान् राम उदास हो गये। उनको उदास देखकर कुछ विद्वानों का चित्त द्रवित हो गया और उन्होंने प्रतिग्रह लेना स्वीकार कर लिया। यज्ञ में दान स्वीकार करने वाले ब्राह्मणों की संख्या 1001 थी। इनमें 251 कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और 750 अन्य कुलों के विद्वान् ब्राह्मण थे।

भगवान् राम ने प्रसन्नतापूर्वक उक्त ब्राह्मणों को गौ, रत्न तथा धनादि देकर सम्मान किया और कहा, ''आप लोगों ने धर्म की रक्षा की है, संसार में हमारी लाज रखी है, इसलिए मैं आप लोगों को विशेष सम्मान के साथ, 'सनाढ्य ब्राह्मण' की उपाधि से अलंकृत करता हूं। सनाढ्य ब्राह्मण वंश की कीर्ति चारों दिशाओं में प्रकाशित होगी।'' यह कहकर उन्हें 750 गांवों में बसाया, जो गंगा-यमुना के मैदानी भाग में स्थित हैं। साढ़े दस गांव 251 कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को अयोध्या के दक्षिण भाग में दिये और उन्हें कान्यकुब्ज कहकर सम्मानित किया। सनाढ्य ब्राह्मणों का शादी सम्बन्ध सनाढ्यों में होते हैं। इसी प्रकार कान्यकुब्ज का भी शादी सम्बन्ध कान्यकुब्ज में ही होता है।

'सनाढ्य ब्राह्मण वंश का क्षेत्र प्रवास'

श्रीरामचन्द्र ने अपने राज्य के अन्तर्गत 750 गांव, जो सनाढ्य ब्राह्मण वंश की संज्ञा देकर दान में दिये, वे गंगा-यमुना के मध्य क्षेत्र के आठ जिलों में इस वर्तमान युग में भी मौजूद हैं। ये हैं—1. मथुरा 2. एटा 3. अलीगढ़ 4. बुलन्दशहर 5. मेरठ 6. बदांयू 7. मैनपुरी 8. आगरा जिला आदि।

सनाढ्य ब्राह्मणों के गोत्रादि

सनाढ्यों के दस ऋषि गोत्र होते हैं तथा सात शाखा कुल 17 की संख्या है।

1. वशिष्ठ 2. पाराशर 3. अगस्त 4. वत्स 5. शाण्डिल्य 6. भारद्वाज 7. कृष्णात्रेय 8. च्यवन 9. काश्यप 10. उपमन्यु। अन्य 7 शाखा भेद हैं। इसी प्रकार ऋषि गोत्र संख्या 17 हैं।

सनाढ्य ब्राह्मणों की उपाधियां

1. शंखधार 2. मिश्र 3. त्रिवेदी 4. जोशी 5. पचौरी 6. पंडा या पंडया 7. चौबे 8. दीक्षित 9. त्रिपाठी 10. पुरोहित 11. दुबे 12. उपाध्याय।

सनाढ्य ब्राह्मणों के गोत्रादि

सं०	गोत्र	प्रवर	वेद	उपाधि	देव	वंश
1.	वशिष्ठ	3	शुक्लयजुर्वेदी	तिवारी	गौरी	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
2.	भारद्वाज	3	शुक्लयजुर्वेदी	पाठक	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
3.	कश्यप	3	शुक्ल यजु०	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
4.	कात्यायन	3	शुक्ल यजु०	दीक्षित	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
5.	गौतम	5	सामवेद	रावत	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
6.	गार्ग्य	5	सामवेद	शर्मा	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
7.	कौशिक	5	सामवेद	शर्मा	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
8.	पाराशर	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
9.	विष्णुवृद्धि	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
10.	कौडिन्य	3	शुक्लयजुर्वेदी	तिवारी	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
11.	कृष्णात्रेय	3	शुक्लयजुर्वेदी	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
12.	सांकृत	3	शुक्लयजुर्वेदी	दीक्षित	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
13.	उपमन्यु	3	सामवेद	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
14.	धनंजय	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
15.	कुशिक	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
16.	वत्स	5	सामवेद	पाठक	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
17.	ब्रह्म	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित

सनाढ्य ब्राह्मणों के मूल ग्राम एवं वंश भेद

सं०	कुरीग्राम	सं०	कुरीग्राम	सं०	कुरीग्राम	सं०	कुरीग्राम
1.	पचोरिया	12.	कंजोलिया	23.	बुधेलिया	34.	करैया
2.	वैदले	13.	पटसारिया	24.	सरहेया	35.	कर्तिया
3.	करसोलिया	14.	परवारिया	25.	जनू	36.	लहरिया
4.	दुगरोरिया	15.	वछगैजा	26.	रेहरिया	37.	अक्खे
5.	भिरथरे	16.	मुचोतिया	27.	आस्थेलिया	38.	सावर्ण
6.	कुमार	17.	भुसोरिया	28.	जरोलिया	39.	रावत
7.	गिरदोलिया	18.	नरोलिया	29.	उदेलिया	40.	भत्सना
8.	चुरारी	19.	कांकरोलिया	30.	मेरहा	41.	ठमेले
9.	गोवरेले	20.	दुगरोलिया	31.	अण्डोलिया	42.	उपाध्याय
10.	हरेले	21.	दुगोलिया	32.	टेहगरिया	43.	टांकु
11.	ठमोले	22.	गांगरोलिया	33.	समरिया	44.	पांडे

45.	चन्दू	78.	दन्डोतिया	111.	समाधिया	144.	घटोलिया
46.	जगनवंशी	79.	टैया	112.	करहेरिया	145.	नैजसिया
47.	वरनारिया	80.	भगोलिया	113.	सुक्ल	146.	घरवासिया
48.	व्यास	81.	आधुनिया	114.	कतरैनिया	147.	विपर्या
49.	अवोले	82.	भगोसा	115.	महामोजी	148.	कीरतिया
50.	दोरियाकांकरा	83.	धुरेले	116.	करोलिया	149.	नसोंचा
51.	बबेरवाल	84.	वेदसार	117.	करसोलिया	150.	चौथरिया
52.	राजोरिया	85.	जोमसी	118.	कोवादिया	151.	नगाइचा
53.	वदोले	86.	विवरीलिया	119.	उच्छित	152.	चौरासिया
54.	त्रिगुणाई	87.	रीलोवा	120.	कुकरेलिया	153.	नैनेरिया
55.	वैशंधरे	88.	विवरैया	121.	हुच्छिता	154.	चरोलिया
56.	उदेनिया	89.	आगरोवा	122.	केलारिया	155.	नोंनहरिया
57.	मेहरे	90.	कमईया	123.	उटगारिया	156.	चौवे
58.	सेठिया	91.	कानौरिया	124.	कुम्भवारिया	157.	विदाहारिया
59.	कुसवा	92.	कुसोलिया	125.	उचेनिया	158.	चरोरिया
60.	चौवे	93.	औरईया	126.	कांकोलिया	159.	कोईकेदीक्षित
61.	कर्मस्वाहा	94.	करोर	127.	हुचवारिया	160.	चन्द्रोठिया
62.	दीक्षित	95.	सेमरिया	128.	कामकर्या	161.	कोईकेउघारिया
63.	गुवरेले	96.	कांकरा	129.	कमरिया	162.	चलैया
64.	मिश्र	97.	षटनावलि	130.	अरेलिया	163.	घेरिया
65.	पायक	98.	कुलवान	131.	वरवनिया	164.	चांदसोरिया
66.	कोतवाल	99.	सोंती	132.	होविया	165.	जमोलिया
67.	वरुण	100.	कुलवानी	133.	औदगा	166.	स्यारहिया
68.	त्रिपाठी	101.	सावर्णिमा	134.	अगनैया	167.	तुटोतिया
69.	विनतेरे	102.	कपरैला	135.	नाहिला	168.	विवनगा
70.	पुरोहित	103.	साक्रोलिया	136.	सुरोतिया	169.	मुखरैया
71.	वालकीव्यास	104.	करनियां	137.	विनहेरिया	170.	चुंगला
72.	वरूआ	105.	साजोलिया	138.	सुरोटिया	171.	महलोनिया
73.	पटोलिया	106.	कोई	139.	विवहेरी	172.	मरयो
74.	दुर्वार	107.	कहेनिया	140.	सूरजिया	173.	वेवारबाल
75.	हरेनिया	108.	काशिप	141.	नवग्रहेया	174.	अवरैया
76.	ओरेय	109.	सहोनिया	142.	नामनिया	175.	निर्खिया
77.	डुगरिया	110.	धापक	143.	नवासिया	176.	कोईकेमुद्‌गल

177.	इन्द्रा	210.	वदेनिया	243.	तैहरिया	276.	ह्रदेनिया
178.	कोईकुमुड़ेनिये	211.	प्रगासिया	244.	आइया	277.	भटेले
179.	झासेनिया	212.	वसेटिया	245.	त्रिशूलिया	278.	दुगोलिया
180.	मुखैया	213.	खिड़पासिया	246.	चौंधिया	279.	नदनंगिया
181.	धारिया	214.	गिलोडिया	247.	रोरिवलिया	280.	धामोंटिया
182.	मुदरैया	215.	बुधोलिया	248.	षटकर्मिया	281.	तिहोनगुरिया
183.	रावत	216.	चनगीया	249.	झुरठिया	282.	डचेलिया
184.	सिसेंदिया	217.	दुबे (कृष्णात्रेय)	250.	देखईया	283.	सैनवैया
185.	डुगरोलिया	218.	ओरगिरिया	251.	गारिया	284.	तामोलिया
186.	सिरोतिया	219.	श्रीयाधानिया	252.	पीचुनिया	285.	अतैया
187.	ठमोले	220.	बुधकैया	253.	परसैइया	286.	तैहुरिया
188.	वारोलिया	221.	गुणोचिया	254.	वदईया	287.	तिगुनाई
189.	वरनैया	222.	अवस्थी	255.	विरहरुपिया	288.	चटसालिया
190.	वरोलिया	223.	परवैया	256.	विरहेरिया	289.	तपरैया
191.	वरनैया	224.	हाऋषिया	257.	वुटोलिया	290.	रौरहिया
192.	उड़ोचिया	225.	भामेलिया	258.	गंगालिया	291.	साजोलिया
193.	भारिया	226.	दांता	259.	सहटामिया	292.	ठोठानिया
194.	तुरोलिया	227.	भारग्रामिया	260.	द्विधागुधनिया	293.	तैहरैया
195.	ढ़कारिया	228.	हर्रवैया	261.	खोईया	294.	ढ़ादू
196.	उभैया	229.	दुसेठिया	262.	खेमरिया	295.	डुगवारा
197.	झगरिया	230.	भचोड़िया	263.	स्वाहरैया	296.	दीधरा
198.	ठझेलिया	231.	भिरहरिया	264.	डालवाडिया	297.	साजोलिया
199.	हेरिया	232.	धर्मध्वजिया	265.	पेखड़े	298.	राजगीया
200.	चलैया	233.	तिरवंतिया	266.	सुअसिया	299.	डुगवांणा
201.	चाहिया	234.	दुरवारा	267.	पैरवड़े त्रिवंग	300.	ठुठिया
202.	इरवरिया	235.	लवानिया	268.	चिरंजिया	301.	तोहिया
203.	पिपरोलिया	236.	सतरंगिया	269.	बुधोलिया	302.	दुन्डिया
204.	निहारिया	237.	तलैया	270.	गुलपारिया	303.	डुगवारिया
205.	सवारिया	238.	तिहोनपालिया	271.	हरसानिया	304.	अष्टक
206.	हरिया	239.	तीखे	272.	पाथानिया	305.	स्नेहिया
207.	डीलवारिया	240.	विधिभेदिया	273.	वसैया	306.	नरहेरिया
208.	पंचगैया	241.	सुफलफलिया	274.	भेलेमिनिया	307.	आरोलिया
209.	गिरसैया	242.	रैवरा	275.	धनहेरिया	308.	मीतरोलया

309. भाईभेड़ी
310. रक्षपालिया
311. थपईया
312. आदिया
313. सतसैया
314. मसेनिया
315. हरदोनिया
316. वालोठिया
317. गुननाथी
318. सुजसीथा
319. गुड़विया
320. वीरिहेरिया
321. गड़ेंविया
322. दुर्हारिया
323. दौसता
324. वसड़ा
325. लावार
326. खैमईया
327. अरगया
328. खोईया
329. नवनीया
330. मांगोलिया
331. गौरसैया
332. गांगोलिया
333. विरहेरियका
334. डीलेवारियका
335. वदैया
336. दोषपिया
337. सवारिया
338. पिपरोलिया
339. निखरैया
340. ब्रह्मेमैत्रिया
341. घुसेठिया
342. वहोलपालिया
343. विप्रिया
344. दारवारिया
345. टंकारिया
346. दुवारक
347. दाछरा
348. छलीया
349. सारवीसीपुरिया
350. खरोटिया
351. ललीया
352. खरेरिया
353. हुचुगिरिया
354. ठाकोलिया
355. भमालिया
356. भटवालिया
357. सीहरा
358. नन्दवैया
359. डेहरेवारे
360. दुहार
361. वाइसा
362. वरेखरहरिया
363. मधेसिया
364. गांठोलिया
365. कीटमाया
366. द्रारवेनिया
367. हुरगरिया
368. वरवरोरिया
369. धानेरिया
370. दुवोल्या
371. राठैठिया
372. गंगुप्रिय
373. तामोठिया
374. निहोनगिरिया
375. पंचगद्या
376. संत्रगिया
377. नवेदिया
378. रत्तंगिया
379. खुजोलिया
380. ससष्ठिया
381. पूर्वनिया
382. गीलोठिया
383. सौरैया
384. बुधकैया
385. विरहेरूवका
386. बुठोलिया
387. वालोठिया
388. दुनेनिया
389. त्रादीया
390. बुलोठिया
391. सीरहठिया
392. गुलपारिया
393. गिलोठिया
394. वाचेडिया
395. षंडासिया
396. मुधोलिया
397. दुरसारिया
398. मानिया
399. सानसैया
400. चिरंजिया
401. थूनिया
402. असतानिया
403. चरनावलिया
404. वैसीडिया
405. हरसानियका
406. मटंले
407. दोजेनिया
408. गैहनैया
409. भमरेले
410. हरदेनिया
411. रघुनाथिया
412. झासेनिया
413. अड़वीया
414. गुलपारिया
415. भारिया
416. शांडिया
417. ववेसिया
418. चीथे
419. ठंठोलिया
420. चांदोरिया
421. पिपरोलिया
422. मुखरैया
423. शांडिल
424. पुरहरिया
425. थापाकिया
426. गोले
427. हथनीया
428. कवैया
429. वरोरिया
430. तैहेलना
431. गठवारा
432. वाम्वरीया
433. चादोरिया
434. पपरोलिया
435. पुरहरिया
436. डडोचिया
437. गोहले

मैथिल ब्राह्मणोत्पत्ति

कण्डकी नदी के किनारे पूर्व चाम्पारण्य के अन्त तक विदेह भूमि कही जाती है। इसे ही तिरहुत या मिथिला कहते हैं।

इक्ष्वाकु वंशीय राजा निमि

राजा निमि नैपाल (निमिपाल) के शासक थे। ये मोक्ष प्राप्ति के निमित्त एक यज्ञ कर रहे थे। यज्ञ पूर्ण होने से पूर्व ही उनकी मृत्यु हो गयी। यज्ञ में नियुक्त विद्वान् ब्राह्मणों को बड़ी चिन्ता हुई। यज्ञ समाप्ति के पूर्व ही यजमान का अन्त हो जाना यज्ञ में भयानक विघ्न है! इसलिए उन्होंने अपनी मन्त्र शक्ति से निमि के शव का मंथन करके एक अत्यन्त तेजस्वी पुरुष उत्पन्न किया। मंथन से उसका प्राकट्य हुआ था, इसलिए उसका नाम मिथि पड़ा। यज्ञ मण्डप में उत्पन्न हुआ, इसलिए उसका नाम जनक पड़ा। यज्ञ की विधिवत् पूर्णाहुति हुई और यज्ञ सम्पन्न हुआ।

जनक उदभट्ट विद्वान् एवं ब्रह्मज्ञानी थे। वे आत्मचिन्तन करते-करते, अपने शरीर का बोध भूल जाते थे, इसलिए लोग उनको विदेह कहते थे।

एक बार महाराज जनक ने विद्वानों की एक बहुत बड़ी सभा बुलायी। 100 अच्छी नस्ल की गायों के सिंग में सोना और खुर में चांदी मढ़वाकर उन्हें सभास्थल पर उपस्थित किया। सभा मण्डप में घोषणा की कि ''देश के मूर्धन्य विद्वान् महर्षि, आप महानुभावों का स्वागत। मेरी यह कामना है कि इस सभा में उपस्थित विद्वानों में जो सर्वश्रेष्ठ हो, वह स्वर्ण एवं रजत से विभूषित एक शत घटोघ्रि गायों को ले जाये।''

महर्षियों में थोड़ी देर के लिए स्तब्धता छा गयी। कुछ देर बाद महर्षि याज्ञवल्क्यजी ने अपने शिष्यों को गायों को ले चलने के लिए आदेश दिया। सारे महर्षिगण याज्ञवल्क्यजी को शास्त्रार्थ के लिए ललकारने लगे। शास्त्रार्थ हुआ, महर्षि याज्ञवल्क्य विजयी हुए।

राजा जनक ने महर्षि याज्ञवल्क्य के शिष्यों को नाना प्रकार के रत्न और धन के साथ ग्राम दान देकर अपने राज्य में बसा लिया। जितने भूखण्ड पर जनक का राज्य था, उसे मिथिला क्षेत्र कहते हैं। इस भूखण्ड पर बसने के कारण वे ब्राह्मण मैथिल ब्राह्मण कहलाये।

सम्पूर्ण भारत वर्ष में मात्र 28 ऋषि ही मूल गोत्र कर्त्ता हैं। इनमें से 15 ऋषि मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र कर्त्ता हैं।

1. शाण्डिल्य, 2. वत्स, 3. कश्यप, 4. पराशर, 5. भारद्वाज, 6. कात्यायन, 7. गौतम, 8. कौशिक, 9. कृष्णात्रेय, 10. गार्ग्य, 11. विष्णुवृद्धि, 12. सावर्णि, 13. वशिष्ठ, 14. कौण्डिन्य, 15. मौदगल।

समस्त मैथिल ब्राह्मण वंश के 6 कुल भेद हैं—1. श्रोत्रिय, 2. जोग्य, 3. पौंज, 4. गृहस्थ, 5. वंश, 6. गरीब।

मैथिल ब्राह्मण वंश के छह आस्पद हैं—

1. झा, 2. पाठक, 3. ठाकुर, 4. मिश्र, 5. सिंह, 6. चौधरी।

मैथिल ब्राह्मणों के गोत्रों के प्रवर आदि

क्र.	गोत्र	प्रवर सं०	नाम प्रवर	वेद
1.	शाण्डिल्य	त्रि प्रवर	शाण्डिल्य, असित, देवल	
2.	वत्स	पंच प्रवर	और्व, च्यवन, भार्गव, जमदग्नि, आप्लवान	सामवेद
3.	काश्यप	त्रि प्रवर	काश्यप, वत्स, नैध्रुव	सामवेद
4.	पाराशर	त्रि प्रवर	पाराशर, शक्ति, वसिष्ठ	सामवेद
5.	भारद्वाज	त्रि प्रवर	भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद
6.	कात्यायन	त्रि प्रवर	कात्यायन, विष्णु, अंगिरस	यजुर्वेद
7.	गौतम	त्रि प्रवर	अंगिरा, वसिष्ठ, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद
8.	कृष्णात्रेय	त्रि प्रवर	कृष्णात्रेय, आप्लवान, सारस्वत	यजुर्वेद
9.	गार्ग्य	पंच प्रवर	गार्ग्य, धृतकौशिक, मांडव्य, अथर्व, वैशम्पायन	यजुर्वेद
10.	विष्णुवृद्धि	त्रि प्रवर	विष्णुवृद्धि, च्यवन, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद
11.	सावर्णि	पंच प्रवर	और्व, च्यवन, भार्गव, जमदग्नि, आप्लवान	यजुर्वेद
12.	कौशिक	त्रि प्रवर	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि	सामवेद
13.	वसिष्ठ	त्रि प्रवर	वसिष्ठ, अत्रि, सांकृति	यजुर्वेद
14.	कौण्डिन्य	त्रि प्रवर	कौण्डिन्य, आस्तीक, कौशिक	यजुर्वेद
15.	मौदगल	त्रि प्रवर	मौदगल, अंगरिस, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद

मैथिल ब्राह्मणों के मूल गांव को खेड़ा कहते हैं।

क्र०सं०	खेड़ा	ग्राम	तहसील	जिला
1.	अरौठिया	अरौठा	सादाबाद	मथुरा
2.	अकोसिया	अकोस	सादाबाद	मथुरा
3.	इसोदिया	इसोंदा	सादाबाद	मथुरा
4.	आरतीवार	आरती	सादाबाद	मथुरा
5.	उघईवार	ऊघई	सादाबाद	मथुरा
6.	कचनाडय	कचनऊ	सादाबाद	मथुरा
7.	खमिनोवार	खामिनी	मथुरा	मथुरा
8.	गुपालियावार	गुपालिया	मांट	मथुरा
9.	गुडेरावार	गुडेरा	मांट	मथुरा
10.	जारुयेवार	जारऊ	सादाबाद	मथुरा
11.	तेहरावार	तेहरा	मथुरा	मथुरा

12.	ककरौलिया	ककरौली	सादाबाद	मथुरा
13.	दुनैटियावार	दुनेटिया	मांट	मथुरा
14.	घनौलिया	घनैली	सादाबाद	मथुरा
15.	विसाउलीवार	विसाउली	मांट	मथुरा
16.	वरामईवार	वरामई	सादाबाद	मथुरा
17.	वरसानिया	वरसाना	छाता	मथुरा
18.	वछरौलिया	वछगांव	मथुरा	मथुरा
19.	विलरइया	वरलई	मथुरा	मथुरा
20.	वामौलिया	वामौली	मथुरा	मथुरा
21.	विरौनावार	विरोना	सादाबाद	मथुरा
22.	वरोंदिया	वरौदा	मथुरा	मथुरा
23.	वेलवनिया	वेलवन	मथुरा	मथुरा
24.	भालईवार	भालई	मांट	मथुरा
25.	भाडीलवरिया	भाडीलवन	मांट	मथुरा
26.	महावनिया	महावन	सादाबाद	मथुरा
27.	मांगरौलिया	मांगरौली	छाता	मथुरा
28.	मुदावलीवार	मुदावली	छाता	मथुरा
29.	मांटवार	मांट	मांट	मथुरा
30.	रसगमावार	रसगमां	सादाबाद	मथुरा
31.	लोहवार	लोहवारी	छाता	मथुरा
32.	लोहवनिया	लोहवन	मांट	मथुरा
33.	सिहोरिया	सिहोरा	मांट	मथुरा
34.	सुसानिया	सुसाइन	सादाबाद	मथुरा
35.	सेकरीवार	सकराया	मथुरा	मथुरा
36.	सैपऊवार	सैपऊ	सादाबाद	मथुरा
37.	सोंनवार	सोन	मथुरा	मथुरा
38.	सेहीवार	सेही	छाता	मथुरा
39.	सतोहेवार	सतोहा	मथुरा	मथुरा
40.	हुसैनीवार	हुसैनी	छाता	मथुरा
41.	हिन्डोलिया	हिन्डोल	मांट	मथुरा
42.	असौलिया	असैला	बाह	आगरा
43.	अगवारिया	अगवार	एत्यादपुर	आगरा
44.	उदसेया	उदैना	खेड़ागढ़	आगरा

45.	उदावलीवार	उदयकर	वाह	आगरा
46.	उसरमूला	ऊसर	फतेहाबाद	आगरा
47.	ककथरिया	ककथरा	किरावली	आगरा
48.	जखोदिया	जखोंदा	आगरा	आगरा
49.	पोपालिया	पलिया	फतेहाबाद	आगरा
50.	वमानिया	वमान	एत्यादपुर	आगरा
51.	विलौमिया	विलोंनी	फतेहाबाद	आगरा
52.	लोधईवार	लोधई	आगरा	आगरा
53.	लुहेटावार	लुहेटा	फतेहाबाद	आगरा
54.	सदरवनिया	सदरवन	आगरा	आगरा
55.	अगरईवार	अगराना	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
56.	उसयेवार	उसयौ (सासन)	हाथरस	अलीगढ़
57.	कसेरऊवार	कसेरु	खैर	अलीगढ़
58.	किसनपुरिया	किसनपुर	इगलास	अलीगढ़
59.	खामईवार	खैमगढ़ी	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
60.	गुरेटावार	गुरेटा	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
61.	टिकरीवार	टिकारी	हाथरस	अलीगढ़
62.	तुर्रावार	अतुरा	इगलास	अलीगढ़
63.	तुरसैनिया	तुरसैन	हाथरस	अलीगढ़
64.	पचौरीवार	पचौरा	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
65.	वरमानिया	वरमाना	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
66.	वकैनिया	वकाइन	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
67.	वांधनूवार	वांधनू	हाथरस	अलीगढ़
68.	विसावनिया	विसावन	कोल	अलीगढ़
69.	भवनखेरिया	भवनखेड़ा	कोल	अलीगढ़
70.	भेमोलिया	भमोली	अतरौली	अलीगढ़
71.	भगोसिया	भगोसा	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
72.	भदोईवार	भदरोई	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
73.	रहनिया	रहना	हाथरस	अलीगढ़
74.	राइटवार	रायट	खैर	अलीगढ़
75.	सुनामईवार	सुनामई	कोल	अलीगढ़
76.	सिरोईवार	सिरोई	अतरौली	अलीगढ़
77.	हसोंनावार	हसोना	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़

78.	चुरसैनिया	चुरसैन	हाथरस	अलीगढ़
79.	अमरोहिया	आमोरा	शिकोहाबाद	मैनपुरी
80.	अर्सोधावार	असौधा	जसराना	मैनपुरी
81.	उदेसरिया	उदेसर	जसराना	मैनपुरी
82.	कोंडरीवार	कोंडरी	जसराना	मैनपुरी
83.	घुरुघुरावर	घाघरु	जसराना	मैनपुरी
84.	पेंड़तिया	पेड़त	जसराना	मैनपुरी
85.	पाढ़यवार	पाढ़या	जसराना	मैनपुरी
86.	पिलखुआ	पिलखुआ	जसराना	मैनपुरी
87.	विधौरवार	विधरई	जसराना	मैनपुरी
88.	वैजुआवार	वैजुआ	शिकोहाबाद	मैनपुरी
89.	भांडरीवार	भांडरी	जसराना	मैनपुरी
90.	राजौरिया	राजौर	शिकोहाबाद	मैनपुरी
91.	सूरवार	सुराया	जसराना	मैनपुरी
92.	जलेसरिया	जलेसर	जलेसर	एटा
93.	पहोड़िया	पहोड़	एटा	एटा
94.	पेसईवार	पेसई	एटा	एटा
95.	विसूदरिया	वसुन्दधरा	एटा	एटा
96.	वावसेवार	वावस	एटा	एटा
97.	वादौरिया	वदरिया	कासगंज	एटा
98.	वमनोइया	वमनोई	एटा	एटा
99.	महावरिया	महावर (सेवर)	कासगंज	एटा
100.	पालीवार	पाली	छाता	मथुरा
101.	विंसाउलीवार	विलारा	सादाबाद	मथुरा
102.	वरौलिया	वरौली	छाता	मथुरा
103.	प्राइटनौरिया			
104.	मानईवार			
105.	जनकपुरिया			
106.	तिरहुतिया			
107.	सौराष्ठिया			
108.	विलौचेवार			
109.	विलगइया			
110.	वांदरेवार			

□□

मैथिल ब्राह्मणों का व्रज में आगमन

सन् 1381/82 में बंगाल और बिहार में गयासुद्दीन का शासन था। मिथिला के राजा का नाम हरिसिंह था। महाराज हरिसिंह विद्वान् और धार्मिक राजा थे। वे विद्वानों का सम्मान करते थे तथा ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में लगे ब्राह्मणों की वृत्ति की व्यवस्था भी राजदरबार से ही होती थी, जिससे मिथलाञ्चल विद्वानों का क्षेत्र समझा जाता था।

मिथिला पर गयासुद्दीन का हमला हो गया और महाराजा हरिसिंहजी पराजित हो गये। इन शान्तिप्रिय, ज्ञान-विज्ञान के शोध में लगे हुए विद्वानों को लगा कि यह मुसलमान बादशाह हम लोगों की जीविका—जो राज खजाने से चलती थी—तो बन्द ही कर देगा, धर्म पर भी हमला करेगा। इस भय से 9 गोत्रों के 75 मैथिल ब्राह्मण तीर्थ का बहाना करके व्रज क्षेत्र में भागकर आ गये और मथुरा जिला में राया के पास विसौली नामक गांव में बस गये।

फिर दुबारा 1556/57 में मिथिला के विद्वान् ब्राह्मण अकबर बादशाह के सुशासन और धर्मनिरपेक्षता से प्रभावित होकर व्रज के विभिन्न नगरों में आकर बस गये। इनमें धर्मशास्त्र, नीति शास्त्र, दर्शन, न्याय, व्याकरण, ज्योतिष, तन्त्र, संगीत आदि के उद्‌भट्ट विद्वान् थे। अकबर बादशाह बहुत पढ़ा-लिखा तो नहीं था, परन्तु विद्वानों का बहुत सम्मान करता था। वह हिन्दू-मुसलमानों में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं रखता था। हिन्दू देवी-देवताओं के आदर के साथ-साथ हिन्दू सन्त-महात्माओं का नित्य सत्संग भी करता था। उसके दरबार के निम्नलिखित विद्वान् नवरत्न के रूप में प्रसिद्ध हैं—

1. अब्दुल फलज (फैजी), 2. टोडरमल. 3. बीरबल, 4. तानसेन, 5. रघुनन्दन झा, 6. देवी मिश्र, 7. पुरुषोत्तम झा, 8. जीवनाथ झा और 9. शिवराम झा।

कहा जाता है कि एक बार अकबर बादशाह पटना में रुके हुए थे। उन्होंने पटना में धर्म सम्मेलन कराया, जिसमें मिथिलाञ्चल के विद्वानों ने खुलकर भाग लिया। उनमें से 3 विद्वानों को बादशाह ने पुरस्कृत किया और अपने साथ आगरा लाये। वे थे—1. पण्डित रघुनन्दन झा, 2. पण्डित जीवनाथ झा और 3. पण्डित शिवराम झा।

इन सब कारणों से मैथिल ब्राह्मण व्रज क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में बिखर गये। कालान्तर में वे अपनी सारी गरिमा को धीरे-धीरे भूल भी गये।

सन् 2002 में मिथिलाञ्चल के दो विद्वान् पं० देवचन्द्र मिश्र और पं० गोविन्द मिश्र सौराठ सभा पयोखरोनी, जिला मधुबनी राज दरभंगर ने व्रज क्षेत्र में अपने भूले-भटके बन्धुओं की खोज की। इस कार्य में जगद्‌गुरु श्री राधेश्याम शरण देवाचार्यजी महाराज (जिनका आश्रम मिथिला कुञ्ज वृन्दावन में है) के सहयोग से निम्नलिखित जनपदों एवं गावों के मैथिल ब्राह्मणों को पंजीकृत किया गया।

व्रज में रहने वाले मैथिल ब्राह्मणों के मूल गांव, गोत्र आदि का विवरण

शाण्डिल्य गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — महेश झा
मूलग्राम — महुए संग्राम
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — कमलापति झा
मूलग्राम — सोन्दर पुरिये (सुन्दर)
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 असित, देवल, शाण्डिल्य
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(3)

बीजी पुरुष — महादेव झा
मूलग्राम — सोंदर पुरिये—हंसोली
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3—शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(4)

बीजी पुरुष — श्यामदत्त झा
मूलग्राम — पगुल बार
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(5)

बीजी पुरुष — जानकी ठाकुर
मूलग्राम — मद्य बार, मछली गांव
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(6)

बीजी पुरुष — गोपीनाथ मिश्र

ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(7)

बीजी पुरुष — सचिदेव झा
मूलग्राम — अनरिये, लमुनिया
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(8)

बीजी पुरुष — गोपाल झा
मूलग्राम — गंगुलवार, सकुरी
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(9)

बीजी पुरुष — श्यामसुन्दर मिश्र
मूलग्राम — दीघवे, कुकिलवार
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(10)

बीजी पुरुष — सत्यदेव मिश्र
मूलग्राम — सौन्दर पुरिये, वाली
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(11)

बीजी पुरुष — राघवेन्द्र झा
मूलग्राम — परिसदे—नरोच
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी

चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(12)

बीजी पुरुष — नरदेव मिश्र
मूलग्राम — दिघने, कुकिलवार
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(13)

बीजी पुरुष — नारायण मिश्र
मूलग्राम — दिगोन
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(14)

बीजी पुरुष — गोविन्द झा
मूलग्राम — मिलेवार—ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(15)

बीजी पुरुष — नृपति मिश्र
मूलग्राम — सोदरपुरिये, दिगोन
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(16)

बीजी पुरुष — गोवर्धन झा
मूलग्राम — सिंहासव
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(17)

बीजी पुरुष — गोपीनाथ मिश्र
मूलग्राम — तिलहनपुर—तिलहे

ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(18)

बीजी पुरुष — जगन्नाथ झा
मूलग्राम — पगुलवार—भड़ियांव
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(19)

बीजी पुरुष — सज्जन मिश्र
मूलग्राम — सौदर पुरिये—सरिसव
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(20)

बीजी पुरुष — जानकी झा
मूलग्राम — गगुलवार—डूमरा
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(21)

बीजी पुरुष — फूलमणि ठाकुर
मूलग्राम — खड़ोरे गौर
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(22)

बीजी पुरुष — अरुणदत्त झा
मूलग्राम — ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी

चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(23)

बीजी पुरुष — रमाकान्त झा
मूलग्राम — भड़ियांव
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(24)

बीजी पुरुष — धर्मदेव मिश्र
मूलग्राम — वाली
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(25)

बीजी पुरुष — विद्याधर झा
मूलग्राम — पगुलवार—राजे
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(26)

बीजी पुरुष — महादेव झा
मूलग्राम — पगुलवार सकरी
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(27)

बीजी पुरुष — जमुनाशंकर पाठक
मूलग्राम — पगुलवार राजे
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — पाठक

(28)

बीजी पुरुष — माघवानन्द झा
मूलग्राम — यजुवाड़ो उदनपुर

ऋषि गोत्र	—	शाण्डिल्य
प्रवर	—	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा	—	कौथुमी
सूत्र	—	गोभिल
वेद	—	सामवेद
देवता	—	महालक्ष्मी
चरण	—	वाम
शिखा	—	वाम
आस्पद	—	झा

(29)

बीजी पुरुष	—	जानकीनन्दन झा
मूलग्राम	—	ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र	—	शाण्डिल्य
प्रवर	—	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा	—	कौथुमी
सूत्र	—	गोभिल
वेद	—	सामवेद
देवता	—	महालक्ष्मी
चरण	—	वाम
शिखा	—	वाम
आस्पद	—	झा

(30)

बीजी पुरुष	—	गोपाल झा
मूलग्राम	—	महवारे—माहब
ऋषि गोत्र	—	शाण्डिल्य
प्रवर	—	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा	—	कौथुमी
सूत्र	—	गोभिल
वेद	—	सामवेद
देवता	—	महालक्ष्मी
चरण	—	वाम
शिखा	—	वाम
आस्पद	—	झा

(31)

बीजी पुरुष	—	मणिजय मिश्र
मूलग्राम	—	दिगोन
ऋषि गोत्र	—	शाण्डिल्य
प्रवर	—	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा	—	कौथुमी
सूत्र	—	गोभिल
वेद	—	सामवेद
देवता	—	महालक्ष्मी
चरण	—	वाम
शिखा	—	वाम
आस्पद	—	मिश्र

(32)

बीजी पुरुष	—	रमणदेव झा
मूलग्राम	—	उदनपुर
ऋषि गोत्र	—	शाण्डिल्य
प्रवर	—	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा	—	कौथुमी
सूत्र	—	गोभिल
वेद	—	सामवेद
देवता	—	महालक्ष्मी
चरण	—	वाम
शिखा	—	वाम
आस्पद	—	झा

(33)

बीजी पुरुष	—	ललजी झा
मूलग्राम	—	हसोली
ऋषि गोत्र	—	शाण्डिल्य
प्रवर	—	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा	—	कौथुमी
सूत्र	—	गोभिल
वेद	—	सामवेद
देवता	—	महालक्ष्मी

चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(34)

बीजी पुरुष — श्रीकान्त झा
मूलग्राम — दिगोन
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(35)

बीजी पुरुष — श्रवण देव झा
मूलग्राम — पचही
ऋषि गोत्र — शाण्डिल्य
प्रवर — 3 शाण्डिल्य, असित, देवल
शाखा — कौथुमी
सूत्र — गोभिल
वेद — सामवेद
देवता — महालक्ष्मी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

वत्स गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — माधव झा
मूलग्राम — तरोनी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — चन्द्रदेव झा
मूलग्राम — तरोनी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(3)

बीजी पुरुष — विद्यापति झा
मूलग्राम — तरोनी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा

चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(4)

बीजी पुरुष — राघव झा
मूलग्राम — तरोनी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(5)

बीजी पुरुष — जानकी ठाकुर
मूलग्राम — जालो
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(6)

बीजी पुरुष — मोहन झा
मूलग्राम — ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(7)

बीजी पुरुष — वासुदेव झा
मूलग्राम — तरोनी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(8)

बीजी पुरुष — विद्याधर झा
मूलग्राम — महिषी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम

शिखा — वाम
आस्पद — झा

(9)

बीजी पुरुष — जगदीश झा
मूलग्राम — जरेल
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(10)

बीजी पुरुष — मोहन झा
मूलग्राम — जाले
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(11)

बीजी पुरुष — कपिलेश्वर झा
मूलग्राम — वेलेन
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(12)

बीजी पुरुष — रघुदेव झा
मूलग्राम — महिषी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(13)

बीजी पुरुष — महिरेव झा
मूलग्राम — हाटी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम

आस्पद — झा

(14)

बीजी पुरुष — राघव झा
मूलग्राम — जाले
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(15)

बीजी पुरुष — कमलाकान्त झा
मूलग्राम — तरोनी
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(16)

बीजी पुरुष -- इन्द्रकान्त झा
मूलग्राम — हरिपुर
ऋषि गोत्र — वत्स
प्रवर — 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

कश्यप गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — कमलपाणि मिश्र
मूलग्राम — सहसराम
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(2)

बीजी पुरुष — ज्ञानदेव पाठक
मूलग्राम — सकरी
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — पाठक

(3)

बीजी पुरुष — अरुणादत्त झा
मूलग्राम — भिगोली
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(4)

बीजी पुरुष — सूर्यकान्त मिश्र
मूलग्राम — डीह
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(5)

बीजी पुरुष — शिवपाणि झा
मूलग्राम — वाड़ी
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(6)

बीजी पुरुष — गोविन्द झा
मूलग्राम — महेन्द्रो
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(7)

बीजी पुरुष — मणिकान्त मिश्र
मूलग्राम — ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(8)

बीजी पुरुष — राघवेन्द्र झा
मूलग्राम — तेल
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय

सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(9)

बीजी पुरुष — रघुनन्दन झा
मूलग्राम — बल्हा
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(10)

बीजी पुरुष — नन्दन झा
मूलग्राम — कटइया
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(11)

बीजी पुरुष — नरसिंह झा
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(12)

बीजी पुरुष — राघव झा
मूलग्राम — राजनपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(13)

बीजी पुरुष — उमापति मिश्र
मूलग्राम — नरसाम
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(14)

बीजी पुरुष — देवदत्त पाठक
मूलग्राम — सकरी
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार; नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — पाठक

(15)

बीजी पुरुष — श्यामजी झा
मूलग्राम — रामपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(16)

बीजी पुरुष — बलराम झा
मूलग्राम — महेन्द्रो
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(17)

बीजी पुरुष — महीदेव ठाकुर
मूलग्राम — ओदूनी
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(18)

बीजी पुरुष — मण्डन झा
मूलग्राम — राजनपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार; नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(19)

बीजी पुरुष — कमलाकान्त झा
मूलग्राम — धनोजी
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय

सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(20)

बीजी पुरुष — मदन ठाकुर
मूलग्राम — नानपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(21)

बीजी पुरुष — उदयाकर झा
मूलग्राम — राजनपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(22)

बीजी पुरुष — मुकुन्द मिश्र
मूलग्राम — नुतवार
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(23)

बीजी पुरुष — शिवदत्त झा
मूलग्राम — राजनपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(24)

बीजी पुरुष — गौरीशंकर झा
मूलग्राम — ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(25)

बीजी पुरुष — केशवदत्त ठाकुर
मूलग्राम — गोर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(26)

बीजी पुरुष — शिवपाणि झा
मूलग्राम — रजोड़ा
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(27)

बीजी पुरुष — श्रीकण्ठ झा
मूलग्राम — राजनपुर
ऋषि गोत्र — कश्यप
प्रवर — 3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

सावर्ण गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — गोविन्द मिश्र
मूलग्राम — ददरी
ऋषि गोत्र — सावर्ण
प्रवर — 5 सावर्ण, और्वच्य, भार्गव, जमदाग्नि, आप्लवान
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — सिद्धेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — श्यामदत्त झा
मूलग्राम — भीट्टी
ऋषि गोत्र — सावर्ण
प्रवर — 5 सावर्ण, और्वच्य, भार्गव, जमदाग्नि, आप्लवान
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — सिद्धेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(3)

बीजी पुरुष — राधारमण पाठक
मूलग्राम — झडुंआ
ऋषि गोत्र — सावर्ण
प्रवर — 5 सावर्ण, और्वच्य, भार्गव, जमदाग्नि, आप्लवान
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — सिद्धेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — पाठक

भारद्वाज गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — चिन्तामणि झा
मूलग्राम — सुदई
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — वेदराम मिश्र
मूलग्राम — सुदई
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

(3)

बीजी पुरुष — अक्रूर झा
मूलग्राम — रुतवार
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(4)

बीजी पुरुष — देवानन्द झा
मूलग्राम — रुतवार
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(5)

बीजी पुरुष – हरिकान्त झा
मूलग्राम – सुदई
ऋषि गोत्र – भारद्वाज
प्रवर – 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा – माध्यन्दिनीय
सूत्र – कात्यायन
वेद – यजुर्वेद
देवता – गौरी
चरण – वाम
शिखा – वाम
आस्पद – झा

(6)

बीजी पुरुष – वंशीधर झा
मूलग्राम – सुदई
ऋषि गोत्र – भारद्वाज
प्रवर – 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा – माध्यन्दिनीय
सूत्र – कात्यायन
वेद – यजुर्वेद
देवता – गौरी
चरण – वाम
शिखा – वाम
आस्पद – झा

(7)

बीजी पुरुष – मणिधर झा
मूलग्राम – सुदई
ऋषि गोत्र – भारद्वाज
प्रवर – 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा – माध्यन्दिनीय
सूत्र – कात्यायन
वेद – यजुर्वेद
देवता – गौरी
चरण – वाम
शिखा – वाम
आस्पद – झा

(8)

बीजी पुरुष – रघुनन्दन झा
मूलग्राम – ओझोल
ऋषि गोत्र – भारद्वाज
प्रवर – 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा – माध्यन्दिनीय
सूत्र – कात्यायन
वेद – यजुर्वेद
देवता – गौरी
चरण – वाम
शिखा – वाम
आस्पद – झा

(9)

बीजी पुरुष – रमाकान्त झा
मूलग्राम – ओझोल
ऋषि गोत्र – भारद्वाज
प्रवर – 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा – माध्यन्दिनीय
सूत्र – कात्यायन
वेद – यजुर्वेद
देवता – गौरी
चरण – वाम
शिखा – वाम
आस्पद – झा

(10)

बीजी पुरुष – रत्ती झा
मूलग्राम – सुदई
ऋषि गोत्र – भारद्वाज
प्रवर – 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा – माध्यन्दिनीय

सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(11)

बीजी पुरुष — कमलाकान्त झा
मूलग्राम — सुदई
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(12)

बीजी पुरुष — जगन्नाथ झा
मूलग्राम — कलिग्राम
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(13)

बीजी पुरुष — सारुणदत्त झा
मूलग्राम — काली गांव
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(14)

बीजी पुरुष — मधुसुदन झा
मूलग्राम — कन्होली
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(15)

बीजी पुरुष — उदित पाठक
मूलग्राम — सुदई
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — पाठक

(16)

बीजी पुरुष — जगन्नाथ झा
मूलग्राम — काको
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(17)

बीजी पुरुष — देवानन्द झा
मूलग्राम — सुदई
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(18)

बीजी पुरुष — माधवानन्द झा
मूलग्राम — कल्होली
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(19)

बीजी पुरुष — लहरदार झा
मूलग्राम — सुदई
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(20)

बीजी पुरुष — झमर झा
मूलग्राम — सुदई
ऋषि गोत्र — भारद्वाज
प्रवर — 3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

गार्ग्य गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — देवदत्त झा
मूलग्राम — वसेह वसांव
ऋषि गोत्र — गार्ग्य
प्रवर — 5 गार्ग्य, धृत, कौशिक, माण्डव्य, वैशम्पायन
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — राघवेन्द्र झा
मूलग्राम — वसेह वसांव
ऋषि गोत्र — गार्ग्य
प्रवर — 5 गार्ग्य, धृत, कौशिक, माण्डव्य, वैशम्पायन
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(3)

बीजी पुरुष — हरिकृष्ण झा
मूलग्राम — वसेह वसांव
ऋषि गोत्र — गार्ग्य
प्रवर — 5 गार्ग्य, धृत, कौशिक, माण्डव्य, वैशम्पायन
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(4)

बीजी पुरुष — रघुनाथ झा
मूलग्राम — वसेह वसांव
ऋषि गोत्र — गार्ग्य
प्रवर — 5 गार्ग्य, धृत, कौशिक, माण्डव्य, वैशम्पायन
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(5)

बीजी पुरुष — उमेश झा
मूलग्राम — वसेह वसांव
ऋषि गोत्र — गार्ग्य
प्रवर — 5 गार्ग्य, धृत, कौशिक, माण्डव्य, वैशम्पायन
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अम्बा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

मौदगल्य गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — सुधाकर झा
मूलग्राम — मलिछबार—भरोछ
ऋषि गोत्र — मौदगल्य
प्रवर — 3 मौदगल्य, वार्हस्पत्य, अंगिरस
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — अन्नपूर्णा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

विष्णु वृद्धि गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — ग्रहपाणि झा
मूलग्राम — कोंथुए—तुमोल
ऋषि गोत्र — विष्णु वृद्धि
प्रवर — 3 विष्णुवृद्धि, कौरूप, क्षत्रासहस्य
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

कौण्डिल्य गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — रजनीनाथ झा
मूलग्राम — परिसडे, नरोंछ
ऋषि गोत्र — कौण्डिल्य
प्रवर — 3 कौण्डिल्य, आस्तीक, कौशिक
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — शिवदत्त झा
मूलग्राम — परिसडे, नरोंछ
ऋषि गोत्र — कौण्डिल्य
प्रवर — 3 कौण्डिल्य, आस्तीक, कौशिक
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

पराशर गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — हरिकान्त झा
मूलग्राम — सक्करापुर
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — देवी झा
मूलग्राम — सोलनी
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(3)

बीजी पुरुष — मधुसुदन झा
मूलग्राम — हरनाडीह
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(4)

बीजी पुरुष — विद्याधर झा
मूलग्राम — सक्करामपुर
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(5)

बीजी पुरुष — रमणदेव झा
मूलग्राम — पिलोखर
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(6)

बीजी पुरुष — चन्द्रकान्त चौधरी
मूलग्राम — बस्तवार
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(7)

बीजी पुरुष — पूरनदवे झा
मूलग्राम — लोआम
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(8)

बीजी पुरुष — उमापति झा
मूलग्राम — पिलोखर
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(9)

बीजी पुरुष — मेघराज झा
मूलग्राम — ओझोल
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(10)

बीजी पुरुष — ऋषिदेव झा
मूलग्राम — सक्तरापुर
ऋषि गोत्र — पराशर
प्रवर — 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

गौतम गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — दिगम्बर झा
मूलग्राम — ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र — गौतम
प्रवर — 3 अंगिरा, बार्हस्पत्य, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा, पाठक

(2)

बीजी पुरुष — गोकुलनाथ झा
मूलग्राम — पचाड़ी
ऋषि गोत्र — गौतम
प्रवर — 3 अंगिरा, बार्हस्पत्य, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(3)

बीजी पुरुष — महेश झा
मूलग्राम — बुसबाड़ी
ऋषि गोत्र — गौतम
प्रवर — 3 अंगिरा, बार्हस्पत्य, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(4)

बीजी पुरुष — नारायण झा
मूलग्राम — ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र — गौतम
प्रवर — 3 अंगिरा, बार्हस्पत्य, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

कौशिक गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — हासानन्द ठाकुर
मूलग्राम — बरही
ऋषि गोत्र — कौशिक
प्रवर — 3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — तप्तेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(2)

बीजी पुरुष — दयानन्द ठाकुर

मूलग्राम — वरही
ऋषि गोत्र — कौशिक
प्रवर — 3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — तप्तेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(3)

बीजी पुरुष — विद्यानन्द ठाकुर
मूलग्राम — बरही
ऋषि गोत्र — कौशिक
प्रवर — 3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — तप्तेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(4)

बीजी पुरुष — श्रीनाथ ठाकुर
मूलग्राम — निकुती
ऋषि गोत्र — कौशिक
प्रवर — 3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — तप्तेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(5)

बीजी पुरुष — चिन्तामणि ठाकुर
मूलग्राम — निकुती
ऋषि गोत्र — कौशिक
प्रवर — 3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — तप्तेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(6)

बीजी पुरुष — ब्रह्मानन्द झा
मूलग्राम — ब्रह्मपुर
ऋषि गोत्र — कौशिक
प्रवर — 3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — तप्तेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(7)

बीजी पुरुष — महीनाथ ठाकुर
मूलग्राम — बरही
ऋषि गोत्र — कौशिक
प्रवर — 3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद

देवता — तप्तेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(8)

बीजी पुरुष — दिगम्बर ठाकुर
मूलग्राम — बरही
ऋषि गोत्र — कौशिक
प्रवर — 3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — तप्तेश्वरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

कात्यायन गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — श्रीदेव झा
मूलग्राम — कुन्जोली
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — शंकरदेव झा
मूलग्राम — कुन्जोली
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(3)

बीजी पुरुष — धीरनाथा झा
मूलग्राम — रतिग्राम
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(4)

बीजी पुरुष — जानकी झा
मूलग्राम — भकरोली
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(5)

बीजी पुरुष — हरिदेव झा
मूलग्राम — लोआम
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(6)

बीजी पुरुष — शिवराम झा
मूलग्राम — दिगोन
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायंन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(7)

बीजी पुरुष — श्रीपति ठाकुर
मूलग्राम — उल्लू
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — ठाकुर

(8)

बीजी पुरुष — उमानाथ झा
मूलग्राम — सतेड़
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(9)

बीजी पुरुष — शंकरदेव झा
मूलग्राम — रिसीगभा
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(10)

बीजी पुरुष — मुखपाणि झा
मूलग्राम — यलगिया
ऋषि गोत्र — कात्यायन
प्रवर — 3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा — माध्यन्दिनीय

सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — क्षेमप्रदा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

कृष्णात्रेय

(1)

बीजी पुरुष — केशव झा
मूलग्राम — मूसवड़े—राजे
ऋषि गोत्र — कृष्णात्रेय
प्रवर — 3 कृष्णात्रेय, आप्लावन, सास्वत
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

(2)

बीजी पुरुष — रुद्रमाल झा
मूलग्राम — मूसवड़े, अदौली
ऋषि गोत्र — कृष्णात्रेय
प्रवर — 3 कृष्णात्रेय, आप्लावन, सास्वत
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — उमा
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — झा

वशिष्ठ गोत्र

(1)

बीजी पुरुष — राघवानन्द मिश्र
मूलग्राम — वरबे—पण्डोली
ऋषि गोत्र — वशिष्ठ
प्रवर — 3 शक्ति, पराशर, वशिष्ठ
शाखा — माध्यन्दिनीय
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी
चरण — वाम
शिखा — वाम
आस्पद — मिश्र

□□

कान्यकुब्ज ब्राह्मणोत्पत्ति

महोदयपुर के राजा का नाम कुशनाभ था। उनकी पत्नी का नाम घृताक्षी था। उसकी एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या थी। रूप यौवन सम्पन्न कन्या बाग में अपनी सहेलियों के साथ घूमने गयी। सहेलियों के साथ राजकुमारी का सांस्कृतिक कार्यक्रम (गाना-बजाना आदि) प्रारम्भ हो गया।

सर्वगुण सम्पन्न, रूप-यौवनोपशालिनी राजकुमारी को देखकर सर्वात्मा वायु देवता मनुष्य रूप में प्रकट हो गये। उन्होंने राजकुमारी से विवाह की इच्छा व्यक्त की और अपना परिचय भी दिया कि तुम्हारा मानुषी भाव समाप्त हो जायेगा और तुम अजर-अमर हो जाओगी।

कन्या ने वायु देवता के प्रस्ताव का तिरस्कार करते हुए कहा कि हमारे पिता हमारे ईश्वर हैं। वे हमें जिसके हाथ में देना चाहेंगे, वे हमारे स्वामी होंगे।

यह सुनकर वायु देवता कुपित हो गये और वह राजकुमारी तत्काल कुब्जा हो गयी।

दुखित कन्या सहेलियों के साथ घर आयी और पिता से सारी घटना कही। राजा ने शुभ मुहुर्त में महर्षि ब्रह्मदत्त के हाथ में राजकुमारी का हाथ सौंप दिया। ऋषि के पाणिग्रहण करते ही कुपित वायु दूर हो गया और कन्या सर्वांग सुन्दरी हो गयी। जिस देश में वह कन्या कुब्जा हुई थी, उसे कान्यकुब्ज कहते हैं। इसी क्षेत्र में विश्वामित्र ने इन्द्र के साथ सोमपान किया था और राजर्षि से ब्रह्मर्षि हो गये।

कान्यकुब्ज क्षेत्र

अयोध्या के दक्षिण में शृगीरामपुर से दालभ्य ऋषि के आश्रम पर्यन्त कान्यकुब्ज देश कहलाता था। यद्यपि इस समय कानपुर, फतेहपुर, फर्रुखाबाद, इटावा, लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव, रायबरेली, हरदोई, शाहजहांपुर, भगवन्त नगर आदि स्थानों में कन्याकुब्ज ब्राह्मणों का विस्तार हो गया है।

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में कुल मर्यादा मान आदि का विशेष ध्यान रहता है। इनकी उपाधियां बहुधा कर्म से सम्बन्ध रखती हैं।

गोत्रों और कुलों का वर्णन

1. कश्यप, 2. भारद्वाज, 3. शाण्डिल्य, 4. सांकृत, 5. कात्यायन, 6. उपमन्यु, 7. गार्ग्य, 8. धनञ्जय, 9. कविस्त, 10. गौतम, 11. गर्ग, 12. कृष्णात्रेय, 13. कौशिक, 14. वसिष्ठ, 15. वत्स और 16. पराशर। ये 16 गोत्र कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में बहुत प्रसिद्ध हैं। इनमें प्रथम 6 गोत्र बहुत प्रसिद्ध हैं।

1. कात्यायन, 2. उपमन्यु, 3. भारद्वाज, 4. कश्यप, 5. शाण्डिल्य और 6. सांकृत्य। इन्हें षटकुल के नाम से जाना जाता है। इनकी दूसरी शाखा धाकर कहलाती है।

इनके आस्पद (उपाधियां) निम्नलिखित हैं

पाण्डेय, पाठक, त्रिपाठी, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, अवस्थी, दीक्षित, शुक्ल, मिश्र, उपाध्याय,

भट्टाचार्य, अग्निहोत्री, वाजपेई आदि।

इनकी उपाधियां कर्मों के आधार पर हैं

1. वेद पढ़ने से—द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि
2. अध्यापन करने से—उपाध्याय, पाठक, भट्टाचार्य आदि
3. यज्ञादि अनुष्ठान करने से—वाजपेई, अग्निहोत्री, अवस्थी और दीक्षित आदि
4. स्मार्त्त कर्मानुष्ठान से—मिश्र
5. शुद्ध निर्मल गुण कर्मों के अनुष्ठान से—शुक्ल

षटकुली कान्यकुब्ज ब्राह्मण

क्र०	गोत्र	उपाधियां
1.	कात्यायन	मिश्र, दुबे
2.	शाण्डिल्य	तिवारी, अवस्थी, दीक्षित, अग्निहोत्री
3.	भारद्वाज	दीक्षित, शुक्ल, त्रिवेदी, अग्निहोत्री
4.	उपमन्यु	दीक्षित, अग्निहोत्री, दुबे, बाल्मीकि, पाठक
5.	सांकृत	अवस्थी, त्रिवेदी, वाजपेई, शर्मा, चूड़ामणि
6.	कश्यप	तिवारी, अवस्थी, दीक्षित, अग्निहोत्री, मिश्र, त्रिपाठी, मीठे, शुक्ल, पाण्डे, भट्टाचार्य

कान्यकुब्जों के 16 गोत्र, प्रवर, आस्पद आदि

क्र०सं०	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	आस्पद
1.	भारद्वाज	अंगिरा	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	दीक्षित
2.	कृष्णात्रेय	अत्रेय, ओर्वच्य	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	अवस्थी
3.	उपमन्यु	वशिष्ठ, भारद्वाज	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	दीक्षित
4.	कौशिक	विश्वामित्र, उद्दालक	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	तिवारी
5.	कश्यप	कश्यप, वत्स, नैध्रुव	यजुर्वेद	कौथुसी	अग्निहोत्री
6.	सांकृत	आगिरस, शाक्य	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	शुक्ल
7.	वत्स	भार्गवच्य, ओर्वच्य	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	त्रिपाठी
8.	गार्ग्य	आंगिरस, गार्ग्य	सामवेद	कौथुनी	तिवारी
9.	गौतम	वृहस्पत्य	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	पाठक
10.	शाण्डिल्य	असित देवल	सामवेद	कौथुमी	दीक्षित
11.	वशिष्ठ	पाराशर	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	तिवारी
12.	धनंजय	अत्रेय, घनंजयेति	सामवेद	कौथुमी	दीक्षित
13.	पाराशर	वशिष्ठ	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	त्रिपाठी
14.	ब्रह्म	वशिष्ठ	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	तिवारी
15.	कात्यायन	अंगिरस, गार्ग्य	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	दीक्षित
16.	काविस्त	ब्रह्मा	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	दीक्षित

कश्यप गोत्र

ब्रह्माजी के पुत्र मरीचि ऋषि, इनके पुत्र कश्यपजी। इन्हीं कश्यपजी के पुत्र देवल थे।

देवल के पुत्र आशादत्तजी को शिवराज पुर के राजा ने अपना पुरोहित बनाया और चिंगीसपुर में एक यज्ञ कराया। दक्षिणा में शिवराजपुर सहित साढ़े दस ग्राम दिये और आधा चिंगीसपुर में अपनी राजधानी बनायी।

उन गांवों के नाम हैं—1. मनोह, 2. वरुआ, 3. सखरेज, 4. गौरी, 5. शिवराजपुर, 6. पचोर, 7. उमरी, 8. शिवली, 9. हरिवंशपुर, 10. गूदरपुर, 11. चिंगीसपुर आधा गांव। इस प्रकार से साढ़े दस गांव कश्यप गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के हैं।

मनोह गांव का वंश विस्तार

ग्राम	आस्पद
मनोह	तिवारी
ख्यूरा	तिवारी, अग्निहोत्री
करिंग	तिवारी
शिवराजपुर	तिवारी
औनहा	अवस्थी
ख्यूरा	आशादत्ती तिवारी
मनोह	वामनग्रन्थी तिवारी
चिंचोली	तिवारी
रतनपुर	तिवारी
वदरका	दीक्षित
शिवली	अवस्थी
करुलुआ	अग्निहोत्री
लक्ष्मणपुर	मिश्र
ओहाग	तिवारी
नागरमऊ	दुबे
नवाये	अवस्थी
खखरेज	तिवारी
कलुआ	अग्निहोत्री
कोड़ा	अग्निहोत्री
कठेरुआ	अग्निहोत्री
नगरा	मिश्र
रामपुर	गौतमाचार्य मिश्र
आटी	दुबे

वीठलपुर	दीक्षित	
पिहानी	अवस्थी	
नवाये	अवस्थी	10 विश्वे
रतनपुर	तिवारी	5 विश्वे
चांदीपुर	तिवारी	7 विश्वे
बकसीर	तिवारी	9 विश्वे
मोरंग	तिवारी	7 विश्वे
सिरोज	अग्निहोत्री	8 विश्वे
वांगर	दुबे	5 विश्वे
शिवरामपुर	दुबे	5 विश्वे
लांथे	दुबे	5 विश्वे
हडहा	दीक्षित	20 विश्वे
उमू	दीक्षित	20 विश्वे
नौगांव	दीक्षित	15 विश्वे
नोदलपुर	दीक्षित	15 विश्वे
भगवन्तनगर	दीक्षित	
खखरेज	दीक्षित	
विराह	दीक्षित	
टेढ़ाग्राम	दीक्षित	20 विश्वे
खेड़े	दीक्षित	20 विश्वे

वरुआ ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	सुगनापुर	दुबे	5 विश्वे
2.	नागपुर	दुबे	5 विश्वे
3.	आंटीपुर	दुबे	5 विश्वे
4.	वरुआ	तिवारी	7 विश्वे
5.	गोपालपुर	तिवारी	7 विश्वे
6.	वांगरमऊ	तिवारी	7 विश्वे

खखरेज ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	एकड़ा	तिवारी	10 विश्वे
2.	इदरा	तिवारी	9 विश्वे
3.	आविनहार	तिवारी	8 विश्वे

4.	सांपेपुर	तिवारी	8 विश्वे
5.	ऊंख्पुर	तिवारी	8 विश्वे
6.	असनी	तिवारी	5 विश्वे
7.	अर्चितपुर	तिवारी	8 विश्वे

गौरी ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	गौरी गांव	तिवारी	5 विश्वे
		पंचभइया तिवारी	5 विश्वे
2.	जनकपुर	तिवारी	5 विश्वे
3.	विद्वानपुर	पंचभइया तिवारी	6 विश्वे
4.	विहारपुर गांव	पंचभइया तिवारी	6 विश्वे
5.	मिथोली	अवस्थी	5 विश्वे
	खिर्मीपुर	अवस्थी	3 विश्वे

शिवराजपुर ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	शिवराजपुर	तिवारी	15 विश्वे
2.	पंचभइया	पंचभइया तिवारी	10 विश्वे
3.	बरहमपुर	तिवारी	8 विश्वे

शिवली ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	शिवली	तिवारी	9 विश्वे
2.	पकहापुर	तिवारी	9 विश्वे
3.	दिलीपपुर	तिवारी	10 विश्वे
4.	ककरदही	तिवारी	10 विश्वे
5.	पुरवा	तिवारी	3 विश्वे
6.	विहारपुर	तिवारी	3 विश्वे
7.	चढ़ीक	तिवारी	6 विश्वे
8.	शाहबाद	तिवारी	3 विश्वे
9.	नौवस्ता	तिवारी	7 विश्वे
10.	वरूआ	तिवारी	5 विश्वे
11.	वीरपुर	तिवारी	5 विश्वे
12.	विहारपुर	तिवारी	5 विश्वे
13.	गूदरपुर	तिवारी	8 विश्वे

14.	विदारी	तिवारी	5 विश्वे
15.	दयालपुर	तिवारी	5 विश्वे

उमरी ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	उमरीगांव	तिवारी	5 विश्वे
2.	चंचौली	तिवारी	8 विश्वे
3.	वरगदपुर	तिवारी	6 विश्वे
4.	धतूरा	तिवारी	5 विश्वे
5.	नैनी कुम्हराव गांव	तिवारी	5 विश्वे
6.	महोली	तिवारी	4 विश्वे
7.	मगेर	तिवारी	8 विश्वे
8.	शिवपुर	तिवारी	8 विश्वे

पचोर ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	दयालपुर	तिवारी	10 विश्वे
2.	श्रीपतिपुर	तिवारी	10 विश्वे
3.	रतनपुर	तिवारी	10 विश्वे
4.	चिंचोली	तिवारी	7 विश्वे
5.	पचोर	तिवारी	5 विश्वे
6.	विरामपुर	तिवारी	5 विश्वे

हरिवंश पुर ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	हरिवंशपुर	तिवारी	8 विश्वे
2.	छीतरपुर	तिवारी	8 विश्वे
3.	बोधीपुर	तिवारी	5 विश्वे
4.	गड़रीपुर	तिवारी	5 विश्वे
5.	हरवाई	तिवारी	5 विश्वे
6.	सपरीपुर	तिवारी	5 विश्वे
7.	घरवाईपुर	तिवारी	4 विश्वे

गूदरपुर ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	गूदरपुर गांव	तिवारी	10 विश्वे
2.	करुआ	तिवारी	7 विश्वे

3.	कठेरे	तिवारी	14 विश्वे
4.	महंगूपुर	तिवारी	11 विश्वे
5.	अनंगपुर	तिवारी	14 विश्वे
6.	छितावले	तिवारी	4 विश्वे
7.	झगड़गांव	तिवारी	4 विश्वे
8.	सिदुडा	तिवारी	4 विश्वे
9.	वरुआ	तिवारी	10 विश्वे
10.	सपई	तिवारी	10 विश्वे
11.	पड़री	तिवारी	16 विश्वे
12.	कठेरुआ	तिवारी	19 विश्वे
13.	जहांगोराबाद	तिवारी	20 विश्वे
14.	वीरवली	तिवारी	2 विश्वे
15.	चचू	तिवारी	18 विश्वे

चिंगीसपुर ग्रामवासियों का वंश विस्तार

क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	चिगिंसपुर	तिवारी	5 विश्वे
2.	जहांगीराबाद	तिवारी	5 विश्वे

शाण्डिल्य गोत्र की व्याख्या

ब्रह्माजी के पुत्र मरीचि ऋषि, उनके पुत्र कश्यपजी। कश्यपजी ने यज्ञ द्वारा शाण्डिल्य ऋषि को प्रकट किया। ये अग्नि-जैसे तेजस्वी थे। कहते हैं कि अग्नि का भी गोत्र शाण्डिल्य ही है।

शाण्डिल्य वंश में एक पुरुष महाप्रतापी हुआ। उसका नाम हुतासन था। हुतासन के वंश में मनोरथ तिवारी नामक एक उद्‌भट विद्वान् हुए। बुन्देलखण्ड के राजा को कोई पुत्र नहीं था। इन्होंने पुत्रेष्टि करायी। राजा का नाम अमरसिंह था। उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। राजपुरोहित का नाम विश्वनाथ था। उन्होंने प्रभावित होकर मनोरथ तिवारी से अपनी बेटी की शादी कर दी।

कुछ समय बाद दतिया, उडैसा और महावर के राजाओं ने उन्हें बुलाया और तीनों उनके शिष्य हो गये। कुछ दिनों बाद वे हमीरपुर के पुरोहित बने और राजपुरोहित गंगाराम की बेटी से दूसरा विवाह किया। उस समय से ये तिवारी से मिश्र हो गये। इनकी निवास भूमि धतूरा थी, इसलिए वे धतूरा के मिश्र कहलाये।

पहली पत्नी से कमलनाभि नामक पुत्र हुआ। वह माता के साथ मऊ गांव में रहा, इसलिए मऊ का मिश्र कहलाया।

यहीं से शाण्डिल्य गोत्र का विस्तार हुआ। इनके वंशज विभिन्न गांवों में भिन्न-भिन्न उपाधियों से प्रसिद्ध हुए। कुछ गांव और शाण्डिल्य गोत्री ब्राह्मणों की उपाधियां आगे दी गयी हैं।

ग्राम	अस्पद	विश्वे
हमीरपुर	मिश्र	7 विश्वे
हमरीपुर	उपाध्याय	3 विश्वे
कपिला	मिश्र	10 विश्वे
योगपुर	मिश्र	5 विश्वे
योगपुर	दीक्षित	5 विश्वे
खानीपुर	मिश्र	7 विश्वे
असनी	शुक्ल	4 विश्वे
अंठेर	दीक्षित	15 विश्वे
नौगांव	मिश्र	10 विश्वे
अटेरी	दीक्षित	4 विश्वे
खानीपुर	मिश्र	20 विश्वे
भटेडरा	मिश्र	19 विश्वे
अंटेरा	मिश्र	15 विश्वे
असजी	मिश्र	15, 10 विश्वे
अंटेर	दीक्षित	20 विश्वे
वटपुर	दीक्षित	20 विश्वे
अेटेर	दीक्षित	18, 18, 19 विश्वे
वीरेश्वर	दीक्षित	20 विश्वे
वटपुर	दीक्षित	20 विश्वे
खानीपुर	मिश्र	20 विश्वे
कनौज	मिश्र	17 विश्वे
धोविहा	मिश्र	18 विश्वे
वटेश्वर	दीक्षित	18 विश्वे
वटपुरा	समाधान दीक्षित	67, 8, 7 विश्वे
वटपुर	दीक्षित	18 विश्वे
परसुपुर	मिश्र	20 विश्वे
गोपालपुर	मिश्र	15 विश्वे
वीरेश्वर	दीक्षित	6, 15, 14, 15 विश्वे
परसू	मिश्र	
धतुरा	तिवारी	3 विश्वे
कठौता	तिवारी	3 विश्वे
कठौता	अवस्थी	3 विश्वे

बटपुर	अग्निहोत्री	3 विश्वे
लखनऊ	उपाध्याय	3 विश्वे
चिंचोली	उपाध्याय	3 विश्वे

इस प्रकार शाण्डिल्य गोत्र में 17 पीढ़ी और 130 पुरुषों के वंश कर्त्ता पाये जाते हैं।

उपमन्यु गोत्र का वर्णन

ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ठजी, इनके व्याघ्रपाद और व्याघ्रपाद के पुत्र का नाम था महर्षि उपमन्यु। महर्षि उपमन्यु के पुत्र का नाम था सिंघुप्रद। बहुत दिन बाद इसी कुल में 'भूप' नामक एक विद्वान् पैदा हुए। इन्होंने पिनाक पुर के राजा धर्मपाल को अपना शिष्य बनाया। राजपुरोहित ने इनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर अपनी पुत्री के साथ इनका विवाह कर दिया। पं० भूपजी ने जुजुहूतपुर में एक महायज्ञ किया था। तब से ये जुजुहूतपुर के दीक्षित हो गये। यहीं से इनका वंश विस्तार हुआ। इनके वंशज विभिन्न गांवों में विभिन्न उपाधियों से (आस्पद) से सम्बोधित होने लगे। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

गांव	उपाधियां	गांव	उपाधियां
नागपुर	पाइक	त्योरासी	अवस्थी
यज्ञपुर	दुबे	सरमऊ	मिश्र
दरियाबाद	अवस्थी	मखपुरा	मिश्र
सेठपुर	पाइक	परसुहा	मिश्र
विसोरा	अवस्थी	मुर्दवान	मिश्र
एकडला	त्रिवेदी	पहुआं	थलई के दीक्षित
चन्दनपुर	वाजपेयी	भैसई	दुबे
निसुरा	पाठक	जोनपुर	अग्निहोत्री
जानापुर	पाठक	गौरा	वाजपेयी
अंगई	पाठक	कदरी	वाजपेयी
ओमीपुर	अवस्थी	रायपुर	वाजपेयी
चन्दनपुर	वाजपेयी	लखनऊ	वाजपेयी
शाहाबाद	पाइक	खपेलहा	वाजपेयी
मौराये	पाठक	त्योरासी	अवस्थी
वेनभामऊ	पाइक	एकडला	त्रिवेदी
मौराये	अवस्थी	इटावा	घरवास के दुबे
सरवन	अवस्थी	नेमिष	दीक्षित
जयगांव	अवस्थी	उज्जैन	अग्निहोत्री
दरियाबाद	अवस्थी	ऊंगू	अग्निहोत्री
मतिपुर	अवस्थी	लखनऊ	वाजपेयी

गोरागांव	अवस्थी	वटेश्वर	महामुनि के वाजपेई
मौराये	अवस्थी	चिल्लोली	दुबे
मौराये	मिश्र	भैसई	दुबे
मौराये	दुबे	सेपई	दुबे
मौराये	वाजपेयी	भोजपुर	दुबे
सिंहपुर	अवस्थी	उन्नाव	दुबे
एकडला	अठमइया अवस्थी	ओमीपुर	अवस्थी
वेनमामऊ	पाठक	पिनोरी	अवस्थी
पसिगावां	दुबे	मीठापुर	उपाध्याय
रिकड़ी	अग्निहोत्री		

इस प्रकार उपमन्यु गोत्र में 20 पीढ़ी और 204 पुरुष वंशवृद्धिकर्त्ता हुए।

कात्यायन गोत्र का वर्णन

ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के गोत्र में महर्षि कात्यायन का जन्म हुआ था। इनके गोत्र में चतुर्भुज द्विवेदी बड़े विद्वान् और प्रसिद्ध हुए। उन्हीं से कात्यायन गोत्र का वंश विस्तार हुआ। उनके वंशज विभिन्न गांवों में विभिन्न उपाधियों से प्रसिद्ध हुए। कुछ गांवों और उनमें बसने वाले कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मणों की उपाधियां निम्नलिखित हैं।

टिकरिया	दुबे	5 विश्वे
कंजपुर	मिश्र	10 विश्वे
वदरिका	मिश्र	10 विश्वे
सिरकिटा	दुबे	10 विश्वे
ववनाटोला	मिश्र	15, 10 विश्वे
वैजगांव	मिश्र	15 विश्वे
पासीखेरे	मिश्र	14 विश्वे
गलेथें	मिश्र	11 विश्वे
राजपुर	अग्निहोत्री	10 विश्वे
ववनाटोला	मिश्र	13, 14, 14 विश्वे
वरुआ	मिश्र	14 विश्वे
पत्योना	दुबे	7 विश्वे
नलहारपुर	मिश्र	7 विश्वे
पासीखेरे	मिश्र	15 विश्वे
मलौथे	मिश्र	13, 14, 14 विश्वे
वदरिका	अग्निहोत्री	3 विश्वे
रामनुर	मिश्र	14 विश्वे

हड़हा	वैजगांव के मिश्र	10 विश्वे
विहगांव	अग्निहोत्री	10 विश्वे
मोतीपुर	अग्निहोत्री	3 विश्वे
चोदीपुर	अग्निहोत्री	8 विश्वे
रामपुर	मिश्र	5 विश्वे
मुठिया	मिश्र	20 विश्वे
आंकन	मिश्र	19 विश्वे
मैदान	मिश्र	14 विश्वे
बदरिका	आंकिव के मिश्र	20 विश्वे
मझगांव	मिश्र	20 विश्वे
निवादा	मिश्र	18 विश्वे
कन्नौज ग्वाल मैदान	अनिरुद्ध मिश्र	20 विश्वे
बांकीपुर	मिश्र	1 विश्वे
नौगांव	सुठिया के मिश्र	17 विश्वे
मुरादाबाद	आंकिन के मिश्र	20 विश्वे
मांझागांव	मिश्र	20 विश्वे
निवादा	आंकिन के मिश्र	16, 17, 16, 18 विश्वे
गोपाभऊ	मिश्र	10 विश्वे
कांकोरी	मझगांव के मिश्र	20 विश्वे
कांकोरा	मझगांव के मिश्र	18, 18 विश्वे
पिहानी	मिश्र	10 विश्वे

महर्षि कात्यायन के वंश में 10 पीढ़ी और 116 पुरुष वंशकर्त्ता हुए।

भारद्वाज गोत्र का वर्णन

ब्रह्माजी के पुत्र अंगिरा ऋषि। इनके बृहस्पतिजी। इनके भारद्वाजजी, भारद्वाज के द्रोणाचार्य और द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वथामा हुए। इसी वंश में बहुत दिनों के बाद सत्याधर, वामदेव लोकप्रसिद्ध परम विद्वान् हुए। इनका घर तरी गांव में था, इसलिए ये 'तरी के शुक्ल' कहलाये। यहीं से इनका वंश विस्तार हुआ और इनके वंशज विभिन्न गांवों, विभिन्न उपाधियों (आस्पदों) से विभूषित हुए।

गांवों के नाम	आस्पद (उपाधि)
विहगपुर	शुक्ल
नवाये	शुक्ल
मणिकण्ठपुरवा	शुक्ल
गूदरपुर	शुक्ल
चन्द्रपुर	शुक्ल

ऊंचेगांव	शुक्ल
वनस्थी	पाण्डेय
पाटन	शुक्ल
चौसा	शुक्ल
चन्दनपुर	शुक्ल
गौरा	पाण्डेय
कपिल	पाण्डेय
पटियारी	पाण्डेय
दीलीपपुर	शुक्ल
चौसा	मिश्र और शुक्ल भानु शुक्ल
गौड़हा	शुक्ल
भीष्मपुर	पाण्डेय
लखनऊ	पाण्डेय

(गली) खोरी में रहने के कारण भैरव—खोरी के पाण्डे कहलाये

वेला	पाण्डेय	हरिदासपुर	पाण्डेय
डोडियाखेरे	पाण्डेय	मुखीमनुर	पाण्डेय
गोडिहा	शुक्ल	बररी	पाण्डेय
महोली	शुक्ल	जहानावाद	पाण्डेय
सिकटिया	शुक्ल	गामेथे	शुक्ल
गलेंथे	शुक्ल	हफजाबाद	शुक्ल
विहगपुर	शुक्ल	वागीस	
दिलीपपुर	शुक्ल	(न्याय शास्त्र में श्रृगार महाचार्य की उपाधि पायी)	
सांढ़	त्रिवेदी	महाचार्य कन्नौज	
अधमपुर	शुक्ल	भइसईं	शुक्ल
कान्हा	त्रिवेदी	सनसलपुरी	पाण्डेय
संगोसो	पाण्डेय	पहतिया	पाण्डेय
विहगपुर	शुक्ल	हफीजाबाद	शुक्ल
लहुरी गांव	त्रिवेदी	वागीश	शुक्ल
तोधकपुर	त्रिवेदी	साहनपुर	शुक्ल
उधनपुर	शुक्ल	मिवाद	शुक्ल
भैंसोई	शुक्ल	सकूराबाद	शुक्ल
पाटन	शुक्ल	छन्नी	शुक्ल

विगहपुरी	मकरन्द के शुक्ल	निवाहा	शुक्ल
लखनऊ	महाचार्या	वसई	शुक्ल
असनी	पाण्डेय	वरौली	शुक्ल
बिहारीयोरा	पाण्डेय	पतिहा	शुक्ल
इटौजा	पाण्डेय	बेका	पाण्डेय
वागीशपुर	पाण्डेय	सुसौरा	पाण्डेय
वनगांव	पाण्डेय	मौराव	पाण्डेय
मनोह	पाण्डेय		
नाथपुर	पाण्डेय		

इस प्रकार भारद्वाज गोत्र में सत्याधर से गिरवर तक 16 पीढ़ियों में 265 पुरुष वंशकर्त्ता हुए।

सांकृत गोत्र का वर्णन

ब्रह्माजी के पुत्र भृगु ऋषि के वंश में सांख्यायन ऋषि हुए। इनके पुत्र गगन को गौर्वे कहा जाता है। इन्हीं गगन ऋषि के पुत्र का नाम था सांकृत। सांकृत के पुत्र जीवाश्व महान् विद्वान् और लोकप्रसिद्ध हुए। इन्हीं के पुत्र पृथ्वीधर थे। इनसे कौशिकपुर के राजा ने 'आवस्थ्य' नामक यज्ञ कराया और पृथ्वीधरजी को अवस्थी कहा। तब से ये कौशीकपुर के अवस्थी कहलाये।

इनसे ही सांकृत गोत्र का वंश विस्तार हुआ। ये विभिन्न गांवों में विभिन्न उपाधियों से सम्बोधित होने लगे।

गांव	उपाधियां	गांव	उपाधियां
कौशिकपुर	शुक्ल	गहिरी	शुक्ल
कौशिकपुर	त्रिगुणायत अवस्थी	फतेहाबाद	पुरैनिया के शुक्ल
पुरैनिया	नवेले के शुक्ल	कौशिकपुर	मिश्र
गौरा	शुक्ल	विजौली	दुबे
गहेरी	शुक्ल	जाजमऊ	मिश्र
डोमनपुर	शुक्ल	चचंडी	मिश्र
इटावा	मिश्र	नमेला	शुक्ल

इस प्रकार सांकृत गोत्र में 8 पीढ़ी और 42 पुरुष वंशकर्त्ता हुए।

उस्तरे और कटोरे पूजक कश्यप गोत्र का विवरण

संवत् 1564 विक्रमी में भदारपुर के अधिपति ब्राह्मण थे। एक बार ब्राह्मणों और यवनों में भयानक युद्ध हुआ। युद्ध में सारे ब्राह्मण औरत-मर्द सभी मारे गये। संयोग से पं० अनन्तराम की पत्नी बच गयी। वह गर्भवती थी। उस अनाथ गर्भवती महिला को स्योना नाम का एक नाई, जो मदारपुर गांव के ब्राह्मणों का भक्त था, अपने ससुराल कुतमऊ नामक गांव में ले गया।

पं० अनन्तराम की पत्नी के सभी सगे-सम्बन्धी युद्ध में मारे गये थे, इसलिए वह महिला बहुत ही दुखी रहती थी और बहुत कमजोर हो गयी थी। फलतः बच्चे के जन्म के साथ ही उसकी मृत्यु हो गयी।

स्योना नाई ने उस बालक को अपने पुरोहित कश्यप गोत्रीय चिंचोली के तिवारी को पुत्र रूप में दे दिया और इन्हीं सुखमणि तिवारी से उस ब्राह्मणी की अन्त्य क्रिया भी करवायी तथा बालक का जात कर्म आदि संस्कार कराया। बालक का नाम गर्भू रखा गया। पुत्रहीन सुखमणि तिवारी ने उस बालक को पुत्र रूप में अपना लिया। उसको भली-भांति वेदाध्ययन कराया। गर्भू के कुल में नाई के उपकार को ध्यान में रखकर आज भी 'उस्तरे और कटोरे' की पूजा होती है।

इसी गर्भू से 'उस्तरे और कटोरे' पूजक कश्यप गोत्र का वंश विस्तार हुआ, जो निम्न प्रकार से है।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
मदारपुर	कुतुमौवा के तिवारी	रिवाड़ी	शुक्ल
वितोरे	अग्निहोत्री	मदारपुर	क्यूना के दीक्षित
वड़ेरा	तिवारी	कुतमऊ	दीक्षित
तिरोली	तिवारी	कोड़री	दीक्षित
गल्हैया	दुबे	विहारपुर	दीक्षित
नागापुर	दुबे	शाहाबाद	दीक्षित
सगुनापुर	दुबे	सेहुंणा	दीक्षित
विनहारपुर	दुबे	खरमुआ	अवस्थी
मगरायलपुर	दुबे	गरहा	दीक्षित
कृपालपुर	मिश्र	ककुहा	अग्निहोत्री
भागीरथी	दीक्षित	खिरोली	अवस्थी
निवोली	शुक्ल	ख्यूरा	अवस्थी
मिगलानी	अवस्थी	महनिहार	दुबे
विठूर	दुबे	ठाठविलार	दुबे
अग्निपुर	अग्निहोत्री	इच्छावर	दुबे
कठेरुआ	अग्निहोत्री	लहुरीपुर	दुबे
नगरा	मिश्र	तिवारीपुर	तिवारी
क्यूनापुर	दीक्षित	नगरा	मिश्र

गर्ग गोत्र का विवरण

श्री गर्गाचार्यजी यदुवंशियों के पुरोहित थे। उनके वंश में महानन्द चौबे लोकप्रसिद्ध विद्वान् हुए। इनसे ही गर्ग गोत्र का विस्तार है। विभिन्न गांवों में विभिन्न आस्पदों से ये सम्बोधित होते हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
डोडियाखेरे	चौबे	संतर	अग्निहोत्री
पिहानी	चौबे	धोकली	उपाध्याय
अगकी	चौबे	त्रिपुरारीपुर	पाठक
जिनखीपुर	चौबे	उन्नवा	दुबे

शिवराजपुर	अवस्थी	गरगैया गांव	चौबे
पचोरे	पाण्डे	सिरौनी	पाठक
पिहाने	पाण्डे	गुदरीपुर	पाठक
कन्नौज	पाण्डे	अमहारा	पाठक
पड़री	पाण्डे	सांपी	तिवारी
खिऊलिहा	दुबे	छीटपुर	पाठक
सदनिया	दुबे		

गौतम गोत्र का वर्णन

महर्षि गौतम न्यायशास्त्र के आचार्य थे। उनके वंश में गौतमी गंगा के तट पर धनावली ग्राम में माधवानन्द शुक्ल उद्‌भट विद्वान् और लोकप्रसिद्ध हुए। उनके 5वीं पीढ़ी में त्रिपुर मर्दन नामक तेजस्वी विद्वान् हुए। इन्हीं से गौतम गोत्र का वंश विस्तार हुआ, जो विभिन्न गांवों में विभिन्न उपाधियों से सम्बोधित होते हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
धनावली	शुक्ल	चिलौली	पाण्डेय
त्रिपुरारिपुर	शुक्ल	गुलोली	पाण्डेय
गहख	तिवारी	गूंगरपुर	मिश्र
बाढ़पुर	तिवारी	पोखरा	मिश्र
विसनहार	तिवारी	त्रिपुरारि	अवस्थी
चकलापुर	अग्निहोत्री	गूगरपुर	अवस्थी
सुकुनपुर	अग्निहोत्री	नवलपुर	अवस्थी
भदेश्वरी	दुबे	वीरमपुर	दुबे
दीनगलौली	दुबे	भोगीपुर	अवस्थी

भारद्वाज गोत्र का वर्णन

भारद्वाज संहिता में लिखा है कि बाण विद्या का प्रचार करने वाले भारद्वाजजी बड़े तपस्वी थे। उनके शिष्य तपोधन नामक ब्रह्मचारी ने गुरु की आज्ञा से चित्रकूट के राजा महिपाल अभिवंशोत्पन्न की सौभाग्यवती नामक कन्या से विवाह किया।

तपोधन ने अंगेठ नामक गांव में बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को आमन्त्रित कर अग्निहोत्र यज्ञ किया। ऋषियों ने प्रसन्न् होकर तपोधन को अग्निहोत्री कहा और उनका गोत्र भारद्वाज बताया। इन्हीं तपोधन की 7वीं पीढ़ी में धीरधर नामक लोकविख्यात विद्वान् हुए। यहीं से भारद्वाज गोत्र का विस्तार हुआ। ये अनेक गांवों में विविध उपाधियों से सम्बोधित होते हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
अंगेठा	अग्निहोत्री	राधी	पाण्डेय
ऐधीपुर	तिवारी	सपडेल	दीक्षित

तिवारीपुर	तिवारी	ख्यूरा	दीक्षित
चौसा	दुबे	जहानाबाद	दीक्षित
गिहोनी	दुबे	डोडियाखेरे	दीक्षित
स्थूला	दुबे	कल्हारी	दीक्षित
रोधनपुर	शुक्ल	हडाडे	दीक्षित
गड्डुमऊ	दीक्षित	गडमऊ	दीक्षित
पहितिया	पाण्डेय	भसौरा, सनहा	शुक्ल
खोरिहा	तिवारी	पहितिया	पाण्डेय
इच्छावर	उपाध्याय	शान्तिपुर	पाण्डेय
वरुआ	दुबे	शिविसहायपुखा	तिवारी
इच्छावर	दुबे	ऐन	पराशर दुबे, ऐनी
रेगांव	दुबे	पठोरे	मिश्र
उनैया	दुबे	भदेश्वर	दुबे
अंगेठा	अग्निहोत्री	मलोहावादी	उपाध्याय
सगुनापुर	आध्वर्यू	सोनिहा	पाठक
सोनिहा	पाठक	नागपुर	पाठक
भमरायल	पाठक	नवरतन	पाठक
चौसा	पाठक	जहानाबाद	पाठक

इसमें 9 पीढ़ी और 52 पुरुष वंशवृद्धिकर्त्ता हुए।

धनञ्जय गोत्र का वर्णन

श्रीमद् भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध के उत्तरार्द्ध में एक कथा आती है—

द्वारिकापुरी में एक ब्राह्मण रहता था। उसके बच्चे जब होते थे, तो पैदा होते ही मर जाते थे। पुत्र शोक से पीड़ित वह ब्राह्मण बालक के शव को ले जाकर राजा उग्रसेन की सभा में रख देता था और राजा को बुरा-भला कहकर घर आ जाता था। उसकी मान्यता थी कि राजा के पाप से ही प्रजा दुखी होती है।

इस प्रकार जब नौवें बच्चे के शव को उग्रसेन की राजसभा में रखा और पूर्ववत अपशब्द कहने लगा, तो उस समय वहां अर्जुन बैठे हुए थे। उन्होंने कहा, "ब्राह्मण देवता! आपके अगले पुत्र को मैं मरने नहीं दूंगा। आप प्रसन्न होकर जाइये।" ब्राह्मण ने तिरस्कार का भाव व्यक्त करते हुए कहा, "क्या प्रलाप कर रहे हो। जिस काम को साक्षात् नारायण स्वरूप भगवान् कृष्ण नहीं कर सकते, उस काम को करने की डींग हांकने वाला तू कौन है?" अर्जुन ने कहा, "ब्राह्मण देवता! मैं अर्जुन बोल रहा हूं। गाण्डीवधारी अर्जुन, और बोल ही नहीं रहा हूं, बल्कि प्रतिज्ञा भी कर रहा हूं कि यदि बालक को नहीं बचा सका, तो अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगा।"

ब्राह्मण लौट आया और जब दसवें पुत्र के प्रसव का समय आया, तो अर्जुन को सूचित किया।

अर्जुन अपने गाण्डीव के साथ पहुंचे और सूतिका गृह को चारों ओर से दिव्यास्त्रों से आच्छादित कर दिया।

हर बार तो शव मिल भी जाता था, इस बार तो शव ही गायब हो गया। क्रोधी और दुखी ब्राह्मण अर्जुन के अभिमान को धिक्कारने लगा। अर्जुन ने कहा, ''विप्रवर! आप घबरायें नहीं। मैं कहीं से भी आपका बालक लाकर दूंगा।''

अर्जुन अपनी गति और ज्ञान के अनुसार अनेक दिव्य लोकों में गये, किन्तु निराशा ही हाथ लगी। अन्त में जब आत्मदाह की तैयारी की, तो भगवान् कृष्ण उनको रोकते हुए महानारायण के गोलोक में लेकर गये और वहां से ब्राह्मण के दसों पुत्रों को लेकर आये। ब्राह्मण सारे मरे हुए पुत्रों को जीवितावस्था में पाकर परम प्रसन्न हुआ। अर्जुन ने उन दस लड़कों में से एक लड़के को मांगा। ब्राह्मण ने सहर्ष एक पुत्र को अर्जुन के हाथ में सुपुर्द कर दिया।

अर्जुन ने उस बालक का नाम कृष्णानन्द रखा। भगवान् कृष्ण ने कहा, ''तुमने हमारे नाम के अनुसार इस बालक का नाम रखा है, इसलिए मैं वरदान देता हूं कि तुम्हारे नाम पर इसका गोत्र चलेगा।'' धनञ्जय नाम से गोत्र विख्यात हुआ। महर्षि गर्गाचार्य ने बालक का उपनयन संस्कार किया और अर्जुन ने उसे महर्षि संदीपनी ऋषि के पास पढ़ने के लिए भेज दिया। उनके वंश में पुष्करानन्द और पुष्पानन्द नामक दो भाई बड़े उद्भट्ट विद्वान् हुए। ये धनञ्जय वंश के विस्तारक हैं। इनके गांव और आस्पद निम्नलिखित हैं।

गांव	आस्पद
नौरंगाबाद	तिवारी
मन्मथारिपुर	दीक्षित
सुन्दरपुर	दुबे
पाली	अवस्थी
तलेसरा	अवस्थी
अम्बरसर	अवस्थी

इस प्रकार धनञ्जय गोत्र में तीन पीढ़ी और 12 पुरुषों से वंशवृद्धि हुई।

वत्स गोत्र का वर्णन

ब्रह्माजी के वंश में वत्स मुनि एक उद्भट्ट तपस्वी थे। उनके वंश में कई पीढ़ियों के बाद माध्वानन्द लोकप्रसिद्ध विद्वान् हुए। उन्हीं से वत्स गोत्र का विस्तार हुआ। इनके गांव और उन गांवों में रहने वालों के विविध आस्पद निम्नलिखित हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
सांपनी	तिवारी	अर्गलापुर	तिवारी
रोतापुर	तिवारी	रायपुर	तिवारी
माकनपुर	तिवारी	आकापुर	पाण्डे
सत्सरपुर	मिश्र	हिंगुजपुर	मिश्र

सिमौनी	शुक्ल	हथमरिया	दीक्षित
पटना	दुबे	रायपुर	दुबे
धोकली	दुबे	हिलोरी	शुक्ल
जवापुर	पाठक	जानाबकी	पाण्डेय
भदरसी	पाण्डेय	सेढ़रपुर	पाण्डेय
भगवानपुर	पाण्डेय	धोकली	अग्निहोत्री
कोसरिहा	दुबे	ख्यूरा	दुबे
ख्यूलिहा	दुबे	शिवराजपुर	दुबे
फफुन्द	रावत	रावतपुर	पाण्डेय
नेवाला	पाण्डेय	धोकली	पाण्डेय
धोकली	उपाध्याय	ठकुरिया	पाण्डेय
बन्धना	पाठक	हरिदासपुर	पाण्डेय
मियागंज	पाठक	सिमौनी	दुबे
बर्गलपुर	दुबे		

इस प्रकार वत्स गोत्र में 7 पीढ़ी और 38 पुरुष वंशवृद्धिकर्त्ता हुए।

वशिष्ठ गोत्र का वर्णन

महर्षि वशिष्ठजी ब्रह्माजी के पुत्र और सूर्यवंश के पुरोहित थे। इनके वंश में महानन्द नामक एक विश्वविख्यात विद्वान् पैदा हुए। उन्हीं से वशिष्ठ गोत्र का विस्तार हुआ। इनके ग्राम और उन ग्रामों में रहने वालों की विभिन्न प्रकार की उपाधियां निम्नलिखित हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
मौराये	एकावशिष्ठी चौबे	हन्नूपुर	तिवारी
मोतीपुर	चौबे	ख्यूरा	चौबे
मोधनी	चौबे	ख्यूरा	पाठक
मितपुर	चौबे	ब्रह्मशील	दीक्षित
जालारी	दुबे	वगीरया	दीक्षित
लहरपुर	दुबे	सगुनापुर	दीक्षित
आंटीपुर	चौबे	डोडियाखेरे	चौबे
रामपुर	अवस्थी	संगुनापुर	दुबे
कन्नौज	चौबे		

इस प्रकार वशिष्ठ गोत्र में 7 पीढ़ी और 17 पुरुषों द्वारा वंश विस्तार हुआ।

कौशिक गोत्र का वर्णन

महाराज कौशिक गोत्री राजा गाधि के पुत्र महर्षि विश्वामित्र ने तपस्या के बल से ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया। विश्वामित्र का एक नाम कौशिक भी है। इसी वंश में कालान्तर में देवकीनन्दन नामक एक

विद्वान् हुए, जो दो वेदों में पारंगत थे। ये मदेसी गांव में रहते थे। इनकी कोई औलाद नहीं थी। विद्वान् ब्राह्मणों को बलुाकर इन्होंने पुत्रष्टि किया।

ब्राह्मणों ने इन्हें पुत्रवान होने के आशीर्वाद के साथ अवस्थी की उपाधि से विभूषित किया। उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और उसका नाम शोभादत्त रखा गया।

यहीं से कौशिक गोत्र का विस्तार हुआ। विभिन्न गांवों के अनुसार उपाधियों का विवरण निम्नलिखित है।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
भदेसी	अवस्थी	कपूरथला	पाइक
मुचापुर	अवस्थी	कुंजुकलिंग	दीक्षित
पिहानी	अवस्थी	जिलहपुर	दीक्षित
कपिला	त्रिगुणपाल	इटावा	दुबे
ऐठान	तिवारी	संकेतपुर	मिश्र
बहरामपुर	मिश्र	शिवराजपुर	रावत
ख्यूरा	अग्निहोत्री		

इस प्रकार कौशिक गोत्र में छह पीढ़ी और 18 पुरुषों द्वारा वंश का विस्तार हुआ है।

कविस्त गोत्र का वर्णन

महर्षि कविस्त ब्रह्माजी के वंशज हैं। इस वंश में पण्डित योगराज एक लोकप्रसिद्ध विद्वान् हुए हैं। इन्हीं योगराज से कविस्त गोत्र का वंश विस्तार हुआ है। जिनके गांत्र और आस्पद निम्नलिखित हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
नसुराले	दुबे	विलखारी	पाठक
धामपुर	पाठक	विलखारी	पाठक
नानामऊ	पाण्डेय	किनावा	त्रिगुणापत
गुगुरुहा	दुबे	चेंचेडी	चौबे
विट्ठलपुर	चौबे	कजरी	अवस्थी
मटपुरा	दुबे	मंगलपुर	मिश्र
चिंचोली	दुबे	शीतल	अग्निहोत्री

इस प्रकार कविस्त गोत्र में 5 पीढ़ी और 14 पुरुष गोत्रकर्त्ता हुए।

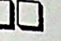
पराशर गोत्र का वर्णन

महर्षि पराशर के वंश में शक्तिधर नामक विश्वविख्यात विद्वान् हुए। इनसे पराशर गोत्र का विस्तार हुआ। इनके गांव और आस्पद निम्नलिखित हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
नागपुर	नागपुरी पराशरी दुबे	नागपुर	नागपुरी शुक्ल
नागपुर	तिवारी	सिमोनी	पराशरी दुबे

नरवरपुर	दुबे	वसई	दुबे
सिमोनी	अवस्थी	सिमोनी	मिश्र
सिमोनी	पराशरी दीक्षित	गुदरियापुर	शुक्ल
पहाड़पुर	तिवारी	पटना	मिश्र
सिमोनी	पाठक		

इस प्रकार महर्षि पराशर के गोत्र में 5 पीढ़ी और 15 पुरुष वंशवृद्धिकर्त्ता हुए।



सरयू पारीण ब्राह्मणोत्पत्ति

लंका विजय करके जब भगवान् राम अयोध्या लौटे, तो उन्हें जितनी विजयी होने की प्रसन्नता थी, उससे अधिक दुःख इस बात का था कि मैंने एक विद्वान्, तपस्वी और कुलीन ब्राह्मण की हत्या की है, तो हमें ब्रह्महत्या का दोष तो लगा ही होगा। इसलिए उन्होंने देश को बड़े-बड़े ऋषियों से अपनी पीड़ा बतायी और ब्रह्महत्या से निवृत्ति का मार्ग पूछा। ऋषियों ने भगवान् राम की बातों का समर्थन करते हुए उन्हें अश्वमेध यज्ञ करने की सलाह दी।

यज्ञ का आयोजन हुआ। देश के उद्भट्ट विद्वान् और तपस्वी पधारे। यज्ञ में कन्नौज के दो महान् विद्वान् और तपस्वी कान्य और कुब्ज भी पधारे। ये दोनों भाई थे। कान्य छोटे और कुब्ज बड़े। यज्ञ में इनका प्रमुख स्थान था। जब यज्ञ समाप्त हो गया, तो कुब्ज ने सोचा, 'अब तो भगवान् राम दक्षिणा का वितरण करेंगे। राम एक राजा हैं। राजा का प्रतिग्रह तो ऐसे ही दूषित होता है; क्योंकि वह सम्पत्ति पसीने की कमाई की नहीं होती। वह जनता से वैध-अवैध तरीके से उगाही सम्पत्ति होती है। इसलिए ऐसे राजा का दान भी नहीं लेना चाहिए। यदि राजा प्रायश्चित कर रहा हो और वह भी साधारण पाप का नहीं, बल्कि एक विद्वान्, कुलीन और तपस्वी ब्राह्मण की हत्या का, तो वह कितना भयानक दान होगा ? यह सोचा जा सकता है।'

महर्षि कुब्ज दान-दक्षिणा लेने के भय से चुपचाप अयोध्या से सरयू नदी पारकर सरयू से उत्तर की दिशा में चले गये। उनके पीछे-पीछे और भी बहुत सारे ब्राह्मण चले आये। ये ब्राह्मण सरयू नदी पार करके दक्षिणा लेने के भय से भागे थे, इसलिए इनको सरयू पारीण या सरजू-पारी या सरबरिया कहते हैं।

सरयू पारीण ब्राह्मणों का ऋषि गोत्र

सरयू पारीण ब्राह्मणों में निम्नलिखित ऋषियों के गोत्र मिलते हैं—

1. गर्ग, 2. गौतम, 3. शाण्डिल्य, 4. पराशर, 5. सावर्णि, 6. कश्यप, 7. वत्स, 8. भारद्वाज, 9. कोशिक, 10. उपमन्यु, 11. वशिष्ठ, 12. घृत कौशिक, 13. गार्ग्य, 14. गर्दभीमुख, 15. भृगु, 16. भार्गव, 17. अगस्त्य, 18. कौण्डिन्य आदि।

सरयूपारी ब्राह्मणों के भेद

सरयू पारीण ब्राह्मणों में तीन श्रेणियां मिलती हैं—

1. त्रिकुल (प्रथम श्रेणी)
2. त्रयोदश कुल (द्वितीय श्रेणी)
3. तीसरी श्रेणी

त्रिकुल को तीन और त्रयोदश कुल को तेरह कहते हैं। त्रिकुल वाले गर्ग, गौतम और शाण्डिल्य

गोत्री ब्राह्मण अपने को श्रेष्ठ ब्राह्मण मानते हैं।

नोट—कुल से कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। छोटा-बड़ा बनाने वाला अपना चरित्र होता है। कहा है—

ऊंचे कुल का जनमियां करनी उच्च न होय।
सुवरन कलश सुरा भरा साधु निन्दै सोय।

तो ये त्रिकुल, त्रयोदश कुल और एक तृतीय श्रेणी भी मात्र सम्बोधन के लिए है।

1. गर्ग, 2. गौतम, 3. शाण्डिल्य, 4. भारद्वाज, 5. वत्स, 6. घृत कौशिक, 7. गार्ग्य, 8. सावर्ण्य, 9. गर्दभीमुख, 10. सांकृत, 11. कश्यप।

11 गोत्रों से तीन और तेरह, अर्थात् सोलह घर इन ब्राह्मणों के भेद कहे गये हैं। गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य—इन तीन कुलों की संतति त्रिकुल या प्रथम श्रेणी में गिनी जाती है।

1. पयासी, 2. समुदार, 3. धर्मपुरा, 4. चौरा कांचनी, 5. गुर्दवान, 6. बृहदग्राम, 7. माला, 8. पाला, 9. पीण्डी, 10. नागचोरी, 11. इटाये, 12. त्रिफला तथा 13. इटिया।

ये ही तेरह स्थान हैं। ये द्वितीय श्रेणी के कहे जाते हैं।

अगस्त्य, कौन्डन्य, पराशर, वशिष्ठ, भार्ग, कात्यायन, गार्ग्य, उपमन्यु, कौशिक तथा भृगु और इनके अतिरिक्त अन्य गोत्र वाले सरयूपारीण तीसरी श्रेणी के हैं।

निम्नलिखित ग्राम इनके स्थान हैं—

खोरिया, कोंडरिया, अगस्त्पार, सिंघनजोड़ी, नैपुरा, करैली, हस्तग्राम, गुरौली, चारपानी, मीठाबेल, सोनोरा, मार्जनी, पोहिम, कोडिग्राम, कुसौरा और पिपरासी—ये इन तृतीय श्रेणी वालों के मूल स्थान हैं।

विभिन्न उपाधियों से सम्बोधित होने वाले गांव

मिश्र—वयसी, मधुवनी, मार्जनी, धरमा, भरसी, पयासी ग्रामों के ब्राह्मण मिश्र कहे जाते हैं।

त्रिवेदी और द्विवेदी—सरया, सोहगौरा, धतुरा, गुरौली, पाला, टाडा, पिण्डी, नदौली, पोहिल, खैरा, सिघनजोड़ी ग्रामों के ब्राह्मण द्विवेदी और त्रिवेदी कहे जाते हैं।

पाण्डेय—इटिया, माला, नागचौरी, हस्तग्राम, धमौली, चारपानी, त्रिफ़ला, इटार और अगस्तपार ग्रामों के ब्राह्मण पाण्डेय कहलाते हैं।

द्विवेदी—कांचनी, अर्थात् गुर्दवान्, बृहद्ग्राम, अर्थात् बड़गो, मीठावेल, कोढारी, समुदार और सरार ग्रामों के ब्राह्मण द्विवेदी कहलाते हैं।

चतुर्वेदी—नेपुरा और पिपरासी गांव के ब्राह्मण चौबे कहलाते हैं।

पाठक—सोनार गांव के ब्राह्मण पाठक हैं।

उपाध्याय—खोदिया और लखिमा गांव के ब्राह्मण उपाध्याय हैं।

ओझा—करेली गांव के ब्राह्मण ओझा हैं।

नोट—कौडिन्य गोत्र के ब्राह्मण शुक्ल, मिश्र और त्रिवेदी उपाधियों से सम्बोधित होते हैं।

प्रथम श्रेणी के ब्राह्मण—प्रथम श्रेणी के ब्राह्मण वे हैं, जिनका मूल गोत्र एक ही ऋषि का चला

आ रहा हो।

द्वितीय श्रेणी के ब्राह्मण—द्वितीय श्रेणी के ब्राह्मण वे हैं, जिनमें द्वामुष्यायण मिल गये हों, जैसे किसी की सन्तान नहीं है, उसने दूसरे गोत्र वाले किसी रिश्तेदार के बालक को या किसी अन्य गोत्रीय ब्राह्मण बालक को गोद लेकर या किसी अन्य ऋषि गोत्रीय बच्चे का क्रय करके अपना पुत्र बना लिया हो, उसे द्वामुष्यायण कहते हैं। उसके सम्मिश्र कुल हो जाने से द्वितीय श्रेणी के कहे जाते हैं।

पंक्ति पावन—एक तीसरी श्रेणी है—पंक्ति पावन ब्राह्मणों की। जिनकी उपस्थिति से दूषित ब्राह्मणों की पंक्ति भी पवित्र हो जाती है। ये पंक्ति पावन ब्राह्मण वेद वेदान्त के पारगामी और सदाचारनिष्ठ होते हैं।

ये वेद के छहों अंगों के ज्ञाता, विनयी, योगी और ययावर, यानि एक रात्रि से अधिक एक स्थान में न रहने वाले होते हैं। इनको पंक्ति पावन कहते हैं।

सरयू पारीण ब्राह्मणों के गोत्र प्रवरादि

गर्ग

आस्पद—शुक्ल
प्रवर—आंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज, श्येन, गार्ग्य
वेद—यजुर्वेद
शाखा—माध्यन्दिनीय
सूत्र—कात्यायन
उपवेद—धनुर्वेद
शिखा—दाहिनी
पाद—दक्षिण
उपास्य देव—शिव
मूल स्थान—भेड़ी, मामखोर, बकरुआ, करज्जही, कनइल, मझगवां, महसो, बरेही, करहुचिया, लखनौरा, पांक्तेय, महलियार, असौंजा, नगहरा, शुक्लपुरा अपांगतेय है।

गार्ग्य और गार्गेय भी इसी के अन्तर्गत हैं। इन गांवों के भी कई भेद हो गये हैं। जैसे—

मामखोर से—सीयर, खखाइचखोर, सरांव, रुदाइन, परसा, भण्टोली, छोटा सोरांव, कनइल, तलहा आदि।

महसों से—मुडेरा, बकैना, बसौढ़ी, कटारि, झौवा, रुद्रपुर, अकौलिया, खोरीपाकर, गोपालपुर, मेहरा, सिलहटाह आदि आदि।

गौतम

आस्पद—मिश्र; द्विवेदी
वेद—यजुर्वेद
शाखा—माध्यन्दिन
सूत्र—कात्यायन

उपवेद—धनुर्वेद

शिखा—दक्षिण

पाद—दक्षिण

उपास्य देव—शिव

प्रवर—अंगिरस, वार्हस्पत्य, गौतम

मूल स्थान—मिश्र वंश का—बइसी, कारौडीह, मधुबनी, मटियारी, पिपरा, भर्सी, भउडीह, ममया, रापतपुर, जिगिना आदि।

द्विवेदी लोगों का मूल गांव—बरपार, सहुवा, बडयापार, गोपालपुर, गड़री, रजहटा, कांचनी, गुर्दवान, धनौली, मझौरा तथा पटियारी।

शाण्डिल्य

इनके दो भेद 1. श्री मुख
2. गर्धमुख

आस्पद—तिवारी

वेद—सामवेद

शाखा—कौथुमी

सूत्र—गोभिल

उपवेद—गन्धर्व

शिखा—वाम

पाद—वाम

छन्द—जगती

उपास्य देव—विष्णु

प्रवर—शाण्डिल्य, असित, कश्यप

श्रीमुख शाण्डिल्य

गोरख पुर में सरयां, सौहगौरा, झुड़िया, देउरवा, मलुवा, सिरजम, धानी, सोपरी, चेतिया और परतावल। इन गांवों के तिवांरी परिवार में पंक्ति भेद है। इनके नाम के साथ राम, कृष्ण, नाथ तथा मणि शब्द लगाते हैं।

सरसा, सोहगौरा, उनवलिया, अतरौली, रुद्रपुर, झड़िया, बहुवारी आदि के निवासी अपने नाम के साथ मणि शब्द लगाते हैं।

निम्नलिखित गांवों में भी शाण्डिल्य गोत्री तिवारी मिलते हैं, किन्तु इनका प्रवर भिन्न है।

कदहा, गोपीकान्ध, यंगेरा और घोड़नर के तिवारी लोगों का गोत्र तो शाण्डिल्य है, किन्तु प्रवर शाण्डिल्य, कौलव तथा बाल्मीक है।

देउरिया, खोरभा, गानौरा, नेवास, नकौझा, बुढ़ियावारी, धतुरा, पाला, सेमरी, चौरा, गुरौली, हथियामरास के तिवारी लोगों का प्रवर शाण्डिल्य, असित एवं कश्यप है।

गर्धमुख शाण्डिल्य

आस्पद—तिवारी
गोत्र—शाण्डिल्य
प्रवर—शाण्डिल्य, असित, देवल
वेद—सामवेद
उपवेद—गान्धर्व वेद
शाखा—कौथुमी
सूत्र—गोमिल
शिखा—वाम
पाद—वाम
छन्द—जगती
देवता—विष्णु

इनका आदि स्थान नदौली कहा जाता है। यहीं से पिण्डी स्थान भी सम्बद्ध है। अन्तर केवल इतना है कि नदौली के लोग 'नाथ' शब्दान्त तथा पिण्डी के 'पति' शब्दान्त नामों से कहे जाते हैं। इसी गोत्र में कीलपुर के दीक्षित लोग भी हैं, किन्तु उनमें पंक्ति नहीं है।

पराशर

आस्पद—पाण्डेय, उपाध्याय तथा शुक्ल
प्रवर—शक्ति, पराशर, वशिष्ठ
मूल स्थान—सिलावट, वामपुरा, धमौली, सोहनहार गांवों में पाण्डेय हैं। धनैती, नदुवा, चौखरी गांवों में उपाध्याय हैं। परसा, बूड़ा, परहसा, कन्तित तथा नगवा बरौछा में शुक्ल लोग रहते हैं।

भारद्वाज

आस्पद—द्विवेदी, पाण्डेय, चतुर्वेदी, पाठक, उपाध्याय
वेद—यजुर्वेद
उपवेद—धनुर्वेद
शाखा—माध्यन्दिनीय, कात्यायन
शिखा—दाहिनी
पाद—दाहिनी
देवता—शिव
प्रवर—अंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज
मूल गांव—द्विवेदी—बड़गों, शरारि, बढ़या, रमवापुर, बदगदी, मझौंवा, जलालपुर, बड़मैया, पटवरियां, मुडवरिया आदि ग्रामों को अपना मुख्य स्थान मानते हैं।
पाण्डेय लोगों में—सिसवां, पुरैना तथा कौसड़—ये मचैयां के अन्तर्गत हैं। बलुवा, बाबू मठियारी तथा पगड़ों के लोग अध्वर्यु (अघुर्य) अधुर्य कहे जाते हैं। बलुवा बाबू और मलौली में इसी गोत्र के

चतुर्वेदी भी हैं।

कश्यप

वेद—सामवेद
उपवेद—गन्धर्व वेद
शाखा—कौथुमी
सूत्र—गोमिल
पाद—वाम
शिखा—वाम
उपास्य देव—विष्णु
प्रवर—कश्यप, असित, देवल
आस्पद—पाण्डेय, द्विवेदी, चौबे, मिश्र, ओझा, उपाध्याय

मूल गांव—पाण्डेय—त्रिफला, बनगां़व, फरेदा, जगदीशपुर, नाथपुर, बिसनैया, गौरा तथा नदुला में अधिकांश पाण्डेय लोगों की आबादी है।

द्विवेदी—काश्जनी (परवा कन्तित) में दुबे लोग हैं।
चौबे—सोनवर्ष, विष्णुपुर में चौबे लोग हैं।
उपाध्याय—पकड़ी, बरौली तथा भरसांड
मिश्र—राढ़ी, मिश्रोलिया, परमेश्वरपुर तथा रभौली में भारद्वाज गोत्री मिश्र लोग मिलते हैं।
पाठक—सोनौरा

अत्रि (कृष्णात्रि गोत्र)

वेद—ऋगवेद
उपवेद—आयुर्वेद
शाखा—शाकल्य
सूत्र—आश्रलायन
प्रवर—अर्चि, अचनिनस, श्यावाश्र
शिखा—वाम
पाद—वाम
आस्पद—दुबे, शुक्ल
उपास्य देव—ब्रह्मा

मूल गांव—डुमरीगंज तहसील में डुमरिया के दुबे लोग तथा पिछौरासत्यकर कन्तित में शुक्ल लोग मिलते हैं।

वत्स गोत्र

वेद—सामवेद
उपवेद—गन्धर्व

शाखा—कौथुमी

सूत्र—गोभिल

पाद—वाम

शिखा—वाम

उपास्य देव—विष्णु

प्रवर—वत्स, च्यवन, आप्लवान, और्च एवं जामद्ग्न्य 5 प्रवर होते हैं।

आस्पद—पाण्डेय, दुबे, मिश्र, तिवारी, ओझा लोग मिलते हैं।

मूल गांव—पाण्डेय—नागचौरी, बेलवा, सोनफेरवा, वनहा, परसिया तथा बिठौला में मिलते हैं।

द्विवेदी—ये सनदरिया, भरौली, बकुलारी तथा विमटी में मिलते हैं।

मिश्र—ये मुख्यतः पयासी, रतनमाला, नरगहा, बनकटा, करिहैया, मणिकटा, वाना, बेलौरा तथा दोगारि में मिलते हैं।

पयासी में रतनमाला, भरवलिया, गोपालपुर, बीजापुर, जिगना, भिटह, छपिया, बिजरा, कतरारी, बैरिया, परसिया, भुड़िसा तथा रानीपुरी हैं।

बनवटा या नगरहा में—अधैला, सुंखई, तिलकपुर, सलेमपुर, रेवली तथा चैनपुर आते हैं।

करिहैयां में—करिहांव, दियावाती तथा मेंहदावल हैं।

मणिकढ़ा से—खुदिया, बघौरा, चिमखा तथा बैनुवा हैं।

गाना में—गाना, त्योंठा, बरवरिया, बैरिया तथा चकदहा सम्मिलित हैं।

बेलोरा में—पानन, चिनरवा, बंधोरा, मझौलिया, सुलजामपुर तथा पकरिया सम्मिलित हैं।

तिवारी—फूदा गाजर, धुरियामार, बिरई तथा पोहिला में इस गोत्र के तिवारी रहते हैं।

ओझा—ककुवा, रजौली तथा खैरी में वत्स गोत्री ओझा लोग रहते हैं।

वात्स्यायन गोत्र

वेद—यजुर्वेद

शाखा—माध्यन्दिन

सूत्र—कात्यायन

पाद—दक्षिण

शिखा—दक्षिण

उपास्य देव—शिव

प्रवर—विश्वामित्र, किल, कात्यायन

आस्पद—चौबे

मूल गांव—नैपुरा, कुसौरा

सांकृत गोत्र

वेद—यजुर्वेद

शिखा—दक्षिण

शाखा—माध्यन्दिन

पाद—दक्षिण

सूत्र—कात्यायन

उपास्य देव—शिव

प्रवर—सांकृत, सांख्यायन, मिश्र

आस्पद—पाण्डेय, तिवारी, चौबे

पाण्डेय—मलांव में पाण्डेय लोग मिलते हैं।

तिवारी—नाउरदेउर, मिलौर सरया

चौबे—भभुआ पार, नगवा, उनबलि, देउगर, सरसैया, तेलियाडीह तथा सिधैंया में मुख्य रूप से चौबे लोग मिलते हैं।

सावर्ण्य गोत्र

वेद—सामवेद

उपवेद—गान्धर्व वेद

शाखा—कौथुमी

सूत्र—गोभिल

शिखा—वाम

पाद—वाम

प्रवर—भार्गव, च्यवन, आप्नवाल, और्व, सावर्ण्य

आस्पद—मिश्र, पाण्डेय

देव—विष्णु

मूल गांव—पाण्डेय—इटारि, रैकहट, पट्टीदिलीपपुर, वंशीधरपुरवा, मझगंवा, चारपानि, लसेहरी, साहुकोल तथा भसमा ये मूल स्थान हैं।

सखरुआ, इमली डांड, भरोसा के परखपाण्डे, इन्द्रपुर, वारघाट, भट्टाचारी तथा टिकरा के पाण्डे भी इसी गोत्र के हैं।

मिश्र—सिसैया के मिश्र भी इसी गोत्र के हैं।

भार्गव

वेद—सामवेद

उपवेद—गान्धर्व वेद

शाखा—कौथुमी

सूत्र—गोभिल

उपास्य देव—विष्णु

शिखा—वाम

पाद—वाम

आस्पद—तिवारी

प्रवर—भार्गव, च्यवन, आप्लवान, और्व, जामदग्न्य 5 प्रवर

मूल गांव—भार्गवपुर, मदनपुर, सोढ़ा चक्र सिंहन जोरी, रखुआ खोर तथा चर्नार इनके मुख्य स्थान हैं।

उपमन्यु गोत्र

वेद—यजुर्वेद

उपवेद—धनुर्वेद

शाखा—माध्यन्दिनीय

सूत्र—कात्यायन

उपास्य देव—शिव

शिखा—दक्षिण

पाद—दक्षिण

प्रवर—वशिष्ठ, इन्द्रप्रमद तथा उपमन्यु

आस्पद—ओझा, पाठक

मूल गांव—ओझा—करैली, ओझवली, अजांप तथा मलांव इनके मुख्य स्थान हैं।

पाठक—मगदरिया में इसी गोत्र के पाठक मिलते हैं।

वशिष्ठ गोत्र

वेद—यजुर्वेद

उपवेद—धनुर्वेद

शाखा—माध्यन्दिनीय

सूत्र—कात्यायन

प्रवर—वशिष्ठ, शक्ति, पराशर

उपास्य देव—शिव

शिखा—दक्षिण

पाद—दक्षिण

आस्पद—तिवारी, पाण्डे, मिश्र, चौबे

मूल स्थान—

1. मार्जनी तथा वट्टापुर—इन गांवों में मिश्र लोग रहते हैं।
2. मणिकण्ठवंकिवा तथा हरिना में तिवारी लोग इसी गोत्र के हैं।
3. नार्जनी में चौबे।
4. अम्बा, कोंहड़ा गांव के पाण्डेय लोग वशिष्ठ गोत्री हैं।

घृतकोशिक

वेद—यजुर्वेद

उपवेद—धनुर्वेद

शाखा—माध्यन्दिनीय
सूत्र—कात्यायन
प्रवर—विश्वामित्र, कौशिक, घृतकौशिक
शिखा—दक्षिण
पाद—दक्षिण
उपास्य देव—शिव
आस्पद—मिश्र
मूल गांव—धर्मपुरा, लगुनहीं, हरदिया, मझौना तथा कुशहरा इनके मूल स्थान हैं।

कौशिक गोत्र

वेद—यजुर्वेद
उपवेद—धनुर्वेद
शाखा—माध्यन्दिनीय
सूत्र—कात्यायन
प्रवर—विश्वामित्र, कौशिक तथा अघमर्षण
शिखा—दक्षिण
पाद—दक्षिण
अस्पद—मिश्र, दुबे
उपास्य देव—शिव
मूल गांव—द्विवेदी—मीठवेल, ब्रह्मपुर। मिश्र—सुगौटी।

कुशिक

वेद—यजुर्वेद
उपवेद—धनुर्वेद
शाखा—माध्यन्दिनीय
सूत्र—कात्यायन
प्रवर—विश्वामित्र, कौशिक, अघमर्षण
उपास्य देव—शिव
आस्पद—चौबे
शिखा—दक्षिण
पाद—दक्षिण
मूल गांव—1. अलीनगर तथा 2. हरगढ़

कौण्डिन्य

वेद—अथर्ववेद
उपवेद—स्थापत्य वेद

शाखा—शौनकी

सूत्र—बोधायन

शिखा—वाम

पाद—वाम

प्रवर—वशिष्ठ, मित्रावरुण, कौण्डिन्य

उपास्य देव—इन्द्र

आस्पद—मिश्र और पाण्डेय

मूल गांव—मिश्र—बभनौली, नगरहा। पाण्डेय—पलामू, बेलौजा।

सरयू पारीण ब्राह्मणों में उपरोक्त गोत्रों के अतिरिक्त भी गोत्र मिलते हैं।

नाम गोत्र	**आस्पद**	**ग्राम**
1. चन्द्रायण	पाण्डेय	वेलौंजा
2. वरतन्तु	त्रिपाठी	धर्महरि
3. कश्यप	दुबे	सिंगेला
4. कण्व	दुबे	निरौली

सरयू पारीण ब्राह्मणों के गोत्र का और भी विस्तार है।

सरयूपारी ब्राह्मणों की कुछ विशेषताएं

1. शाण्डिल्य गोत्री कुछ त्रिपाठी लोगों में पंक्तियां हैं। इनके पीछे एक इतिहास है।

सरार गांव ताप्ती नदी के किनारे है। एक बार एक कुटुम्ब में राजयक्ष्मा प्रविष्ट हो गया। यह संक्रामक रोग है। धीरे-धीरे पूरां परिवार इससे ग्रसित हो गया और सभी कालकवलित हो गये।

सौभाग्य से एक महिला मायके गयी हुई थी। उसके पेट में बच्चा था। उसका प्रसव नाना के घर में हुआ और वहीं उसका पालन-पोषण भी होने लगा। जब बच्चा कुछ बड़ा हो गया, तो उसने माताजी से अपने पिता के विषय में पूछा। मां ने रो-रोकर कुल के सत्यानाश की पूरी कहानी सुना दी। बालक अपनी पितृभूमि देखने के लिए व्याकुल हो गया और अपने एक ग्वाले मित्र के साथ सरार गांव को चल दिया।

ताप्ती के तट पर बसी अपनी पितृभूमि को देखकर रो पड़ा और अपने मित्र ग्वाले से कहा, ''इस भूमि पर हमारे पूर्वजों ने जान दी है। हम भी यहीं प्राण त्यागेंगे।'' ग्वाले ने उसे बहुत समझाया, किन्तु वह नहीं माना। अन्त में ग्वाले ने कहा, ''जाओ, पहले स्नान करके तो आओ। उसके बाद जो चाहो करना।'' वह लड़का ताप्ती नदी में स्नान करने के लिए उतरा। ग्वाले को लगा वह तो डूब गया। अब पीड़ित ग्वाले ने आत्महत्या कर ली।

जब ब्राह्मण बालक नहाकर आया, तो उसने ग्वाले के शव को देखा। बड़ा दुखी हुआ। उसके बाद वह सरार गांव में गया। गांव के लोगों ने उसके पूर्वजों की जमीन उसे दे दी और उसका नाम उस दिन से धरणीधर हो गया। उस बालक के कुल के लोग अपने नाम के साथ धर लगाते हैं। इनके कुल में साधु नामक ग्वाले की पूजा होती है।

गौरक्षा नाम के एक ब्राह्मण थे। उनके चार लड़के थे। उनके नाम राम, कृष्ण, नाथ और मणि थे। ये विभिन्न गांवों में जाकर बस गये। जो जहां बसा, वह अपने नाम के साथ अपने पितरों का नाम लगाने लगा। जैसे—सरार गांव के वंशज अपने नाम के साथ राम लगाते हैं। सोहगौरा के वंशज अपने नाम के साथ कृष्ण लगाते हैं। धतुरा के ब्राह्मण अपने नाम के अन्त में मणि लगाते हैं। इसी प्रकार चेतिया ग्राम के वंशज अपने नाम के अन्त में नाथ शब्द लगाते हैं।

उपरोक्त चारों गांवों के ब्राह्मण अपने को श्रीमुख शाण्डिल्य बतलाते हैं।

इसी प्रकार नदौली ग्राम में एक नन्ददत्त नामक ब्राह्मण रहते थे। उनके मेरु, फेरु और सुखपति तीन पुत्र हुए। मेरु और फेरु के वंशज अपने नाम के साथ नाथ लगाते हैं, किन्तु सुखपति और सभापति के वंशज पिण्डी ग्राम वासी अपने नाम के साथ पति शब्द का प्रयोग करते हैं। जबकि प्रामाणिक शास्त्रीय ग्रन्थों में न तो कहीं श्रीमुख की चर्चा है और न गर्दमुख की। राम, कृष्ण, नाथ, पति तो बहुत दूर की बात है।

पिण्डी नाम पड़ने का कारण

एक दिन गौतम गोत्र के एक पंक्ति पावन ब्राह्मण ने सभापति के हाथ का पानी में सानी हुई सत्तू की पिण्डी खा लिया, तब से सभापति पंक्ति में मिला लिये गये और उस गांव का नाम पिण्डी हो गया। नदौली वासी ब्राह्मणों का गोत्र गर्दभी मुख है।

गर्दभी मुख नाम के पांच गोत्रकार ऋषि विभिन्न समयों में उत्पन्न हुए हैं। जैसे—

भृगुवंश में गर्दभी मुख, वशिष्ठ वंश में गर्दभीमुख, विश्वामित्र वंश में गर्दभीमुख, अंगिरस वंश में गर्दभीमुख और कश्यप वंश में गर्दभीमुख।

(2)

1. ये जिस गांव में अपनी बेटी की शादी करते हैं, उस गांव में बेटे की शादी नहीं करते।

2. विवाह सम्बन्ध में ये गोत्र निर्णय में बहुत सावधान रहते हैं।

3. गोत्र भिन्न होने पर भी यदि प्रवर समान हो, तो विवाह वर्जित माना जाता है। जैसे—शाण्डिल्य, कश्यप और गर्दभीमुख के गोत्र भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु प्रवर समान होने से विवाह सम्बन्ध वर्जित है।

4. अंगिरस और भृगु के सिवा अगर एक भी प्रवरर्षि समान दिख पड़े, तो उसे सगोत्र कहते हैं।

5. भरद्वाज, गर्ग, रौक्षायण और और्व—ये चारों भारद्वाज कहे जाते हैं। इनका परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं होता है।

6. हारित, संकृति, कण्व, रथीतर, मुद्गल, विष्णु, वृद्ध—ये छह ऋषि अंगिरस पक्ष के हैं। इसलिए इनमें विवाह सम्बन्ध वर्जित है।

7. वितहव्य, मिश्रयु, शुनक तथा वेणु—ये चार ऋषि भृगु पक्ष के होने से भार्गव कहलाते हैं। इनका भी परस्पर विवाह वर्जित है।

8. भृगु, सावर्णि और वत्स गोत्रों के पंच प्रवर भार्गव, च्यवन, आप्लवान, और्व और जामदग्न्य हैं। इसलिए इनका भी परस्पर विवाह सम्बन्ध वर्जित है।

9. माण्डव्य, दर्भ, रैवत के साथ भृगु और जमदग्नादि का विवाह सम्बन्ध नहीं होता है।

शकद्वीपीय ब्राह्मण या शाकलद्वीपीय ब्राह्मण

भगवान् कृष्ण के एक पुत्र थे। उनका नाम था साम्ब। उनकी माता जाम्वती थी। साम्ब ने भगवान् सूर्य का एक बड़ा मन्दिर बनवाया और उसमें भगवान् सूर्य की प्रतिमा की स्थापना की। पूजा करने के लिए उन्होंने गौरमुख ऋषि से निवेदन किया। ऋषि ने कहा, ''मैं पूजा का प्रतिग्रह नहीं ले सकता।''

तब साम्ब ने भगवान् सूर्य की ही आराधना की। भगवान् सूर्य ने साम्ब से कहा, ''इस देश में हमारी पूजा करने का अधिकारी कोई नहीं है। शक द्वीप में चार वर्ण मग, मगस, मानस और मन्दग निवास करते हैं। उनको तुम यहां लाकर बसाओ।''

साम्ब शक द्वीप गये और अट्ठारह कुलों के कुमारों को लाकर चन्द्रभागा नदी के किनारे बसाया। वे भगवान् सूर्य की नित्य पूजा करने लगे।

उन 18 कुलों में 8 कुल मन्दग वर्णों के शूद्र थे और 10 कुल मग वर्ण के ब्राह्मण थे। साम्ब ने भोजवंश की कन्याओं से उन ब्राह्मण कुमारों का विधिपूर्वक विवाह कर दिया।

उन कुमारों के जो बालक हुए, वे भोजक कहलाये। वे सब ब्राह्मणों जैसा काम करते थे। ऋषियों के समान दाढ़ी रखते थे। सूर्य की पूजा करते थे। ये सांप की केचुली जैसा वस्त्र, जो भीतर से पोला होता था, जनेऊ जैसा धारण करते। तीनों व्याहृति सहित सूर्य गायत्री का जप करते हैं और अग्निहोत्र करते हैं।



जांगिड़ और पांचाल ब्राह्मण

देवताओं के गुरु बृहस्पति की बहन का नाम भुवन और वरस्त्री था। वह आठवें वसु प्रभास की पत्नी थीं। उनसे देवताओं के शिल्पी महाभाग प्रजापति विश्वकर्मा का जन्म हुआ। उनके चार पुत्र हुए—अजैक पाद, अहिर्बुघन्य, त्वष्टा और रुद्र। प्रजापति विश्वकर्मा ने जगदीश की आज्ञा से चौदह भुवन और चार मनुओं की सृष्टि की। स्वायम्भु मनु के ऋक् यजुः साम, अथर्व, वेदव्यास और प्रियव्रत छह पुत्र हुए। ये मुख्य ब्राह्मण हैं। इनके पीछे चार उपब्राह्मण हुए। इनका नाम था—शिल्पायन, गौरवायन, कायस्थायन और मागधायन। उपरोक्त छह ब्राह्मण ऋषि वेद मन्त्रों को पढ़ने के अधिकारी हैं।

शिल्पायन आदि चार पुत्र उपब्राह्मण उपवेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद, गान्धर्व वेद और शिल्प वेद (स्थापत्य कला) पढ़ने के अधिकारी हैं। उप पांचालों में शिल्पायन के पुत्र—लोहकार (लोहार), सूत्रधार, प्रस्तरारि (पत्थर पर नकाशी करने वाले), ताम्रकार और सुवर्णकार हुए। इन सभी की शाखा वैश्वकर्म, सूत्र कौडिन्य, आत्रेय, भारद्वाज, बौधायन, दाक्षायण और कात्यायन है। देवता रुद्र हैं। छन्द त्रिष्टुप और मन्त्र रुद्र गायत्री हैं।

इनको शिल्पवेद की पांच संहिता पढ़नी चाहिए। शिल्पायन के बड़े पुत्र ने मनु का शिष्य बनकर उनसे धनुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की।

सूत्राधार ने मय का शिष्य बनकर सूत्रधार संहिता पढ़ी, तक्ष ने शिल्पी का शिष्य बनकर शैल संहिता पढ़ी, ताम्रकार ने त्वष्टा का शिष्य बनकर ताम्र संहिता पढ़ी। स्वर्णकार ने दैवज्ञ का शिष्य बनकर सुवर्ण संहिता पढ़ी। इस प्रकार इन पांचों ने 5 शिल्प संहिताएं पढ़ीं।

पंचाल ब्राह्मणों को षटकर्म करने का अधिकार है—

1. पढ़ना पढ़ाना, 2. यज्ञ करना कराना, 3. दान देना, दान लेना। नित्य नैमितिक कार्य पांचालों को करना चाहिए।

1. पितृयज्ञ 2. भूत यज्ञ 3. देव यज्ञ, 4. जप यज्ञ, 5. ब्रह्म यज्ञ (वेद पाठ)।

उपब्राह्मणों को पुराणोक्त काम करना चाहिए।

भोजदेव ने अपने वास्तुशास्त्र पर लिखे ग्रन्थ में अपने इष्ट की प्रशस्ति में निम्नलिखित श्लोक लिखा है।

तदेषः त्रिदशाचार्य सर्वसिद्धि प्रवर्तकः।
सुतः प्रभासस्य विभोः स्वस्त्रीयश्च बृहस्पते॥

ये विश्वकर्मा देवताओं के आचार्य हैं। सिद्धियों के प्रवर्तक हैं। प्रभास ऋषि के पुत्र और देव गुरु बृहस्पति के भांजे हैं।

जांगिड़ ब्राह्मण

मूलतः जांगिड़ नहीं, जंगिड़ शब्द है। जंगिड़ शब्द अथर्ववेद के दूसरे और उन्नीसवें काण्ड में दर्जनों बार आया है। वहां प्रसंग के अनुसार जंगिड़ के विभिन्न अर्थ हैं।

1. जंगिड़ एक मणि का नाम है, जो पुरोहित द्वारा बालक की भुजा में बांधी जाती है।

2. जंगिड़ एक वृक्ष का नाम है, जिसे अर्जुन कहते हैं।

3. कुछ विद्वानों ने इसे पिलखग वृक्ष भी बताया है। इसका रस औषधि के काम आता है।

4. आयुर्वेद शास्त्र में जंगिड़ एक देश विशेष को कहा गया है। जहां करील के वृक्ष और काला मृग होते हैं।

5. गुड़गांवा से लेकर बीकानेर तक का क्षेत्र जांगिड़ या जांगल कहलाता था। इसीलिए वहां के राजा को जंगलधर महाराज कहते थे।

6. महाभारत काल में कुछ देश, जांगल और कुरुपांचाल नाम से विख्यात थे। जो आजकल राजस्थान में हैं।

भारत में जांगिड़ ब्राह्मणों की संख्या भी इसी क्षेत्र राजस्थान में निवास करती है।

7. जांगिड़ नाम के एक ऋषि भी थे, जिनका नाम अंगिरा है। अथर्ववेद के 19वें काण्ड के 34वें सूत्र में कहा गया है—**अंगिरा असि जंगिड़**—अंगिरा का ही नाम जांगिड़ है। **परोक्ष प्रियो देवाः**, हमारे देश में विद्वानों को ही देव कहा गया है, जैसे—'**विद्वांसो हि देवाः**'

तो ये विद्वान् लोग शब्दों की परोक्ष वृत्ति को ही श्रेष्ठ मानते हैं, इसके प्रति उनकी जो भी मनसा हो। जैसे—पति-पत्नी की जोड़ी को 'जायापति' कहा गया है। विद्वानों ने इसे परोक्ष करने के लिए जम्पत्ति कहा। फिर अति परोक्ष करने के लिए उसे दम्पत्ति कहा और यह 'दम्पत्ति' शब्द ही लोक में विख्यात हुआ न कि जायापति।

विश्वकर्मा, जो शिल्प विज्ञान के प्रवर्तक माने जाते हैं, जांगिड़, पांचाल धीमान्, रामगढ़िया सुनार, लोहार, पत्थरकार, चित्रकार ये सभी उन्हीं को अपना पूर्वज मानते हैं।

अथर्ववेद का उपवेद, शिल्प वेद है। इसीलिए शिल्पी ब्राह्मण अथर्ववेदी या अथर्वण कहलाते हैं। शिल्प शास्त्र के कर्त्ता विश्वकर्माजी हैं। महिर्षी अंगिरा के 8 पुत्र थे। उनमें एक पुत्र का नाम सुधन्वा था। उन्हीं को विश्वकर्मा भी कहते हैं: विश्वकर्मा के 3 पुत्र हुए—1. ऋभु, 2. वाज 3. विभ्वा। ये तीनों रक्षकार कहलाते थे। इस ऋभु गणों की स्तुति में ऋग्वेद में 11 सूत्र हैं।

इस प्रकार महर्षि अंगिरा ऋषि का शिल्प विद्या से सीधा सम्बन्ध हो गया। विश्वकर्मा वंशज जांगिड़ ब्राह्मणों के 20 ऋषि गोत्र हैं। यथा—भृगु, अंगिरा, भारद्वाज, उपमन्यु, वशिष्ठ, कश्यप, मुद्गल, जातुकर्ण, शाण्डिल्य, कौडिन्य, गौतम, अघमर्षण, वत्स, वामदेव, ऋक्ष, लौंगाक्षि, गविष्टर, विद, दीर्घतमा, भृग्वांगिरस।

अथर्ववेद शिल्प विज्ञान प्रधान है, अतः विश्वकर्मा वंशज जांगिड़, धीमान, पांचाल आदि ब्राह्मणों को अपना परिचय अथर्ववेदीय बताकर देना चाहिए तथा शौनक और पिप्लाद शाखाएं बतानी चाहिए।

जांगिड़ ब्राह्मणों के वेदादि

1. वर्ण	ब्राह्मण
2. कुल	जांगिड़
3. वेद	अथर्ववेद
4. शाखा	पिप्पलाद
5. सूत्र	अंगिरस
6. गोत्र	भारद्वाजादि उपास्य 20
7. शासन	1885 गांवों में से कोई एक
8. प्रवर	तीन
9. देवी	सावित्री
10. मन्त्र	रुद्रगायत्री
11. कर्म	विज्ञान और शिल्प कर्म
12. देश	जांगल देश
13. सूक्त	विश्वकर्मा सूक्त



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

* ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड—खेमराज श्री कृष्णदास
* जाति भास्कर—खेमराज श्री कृष्णदास
* भारत में जाति प्रथा—मोतीलाल बनारसीदास
* ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण—नीता प्रकाशन
* भारतीय ब्राह्मण की गोत्रावली—पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा (पानीपत वाले)
* जगिड ब्राह्मण गोत्रावली—सुकृति प्रकाशन

उपरोक्त सभी पुस्तकें 'डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स', 110, चावड़ी बाजार से प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष नोट

जो ब्राह्मण सज्जन अपने परिवार व मित्रगण में पुस्तक वितरण या मांगलिक उत्सव में बांटना चाहें, तो आप हमसे सम्पर्क करें व पुस्तकें लागत मूल्य पर प्राप्त करें।

आश्वलायना-ऽऽपस्तम्ब-बोधायन-कात्यायन-लौगाक्षि-सत्याषाढ-मत्स्योक्ताः प्रवरदर्पणकार-दर्शिताश्च गोत्रप्रवरर्षयः

गोत्राणामग्रे ग्रन्थप्रमाणविषये साङ्केतिकाक्षराणि लिखितानि, तेषामाशयः निम्नभागे द्रष्टव्यः।

प्रमाणग्रन्थाः	साङ्केतिकं	प्रमाणग्रन्थाः	साङ्केतिकं
आश्वलायनः	आ.	लौगाक्षिः	लौ.
आपस्तम्बः	आप.		
बोधायनः	बो.	सत्याषाढः	स.
कात्यायनः	का.	मत्स्यः	म.

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः		
1	अगस्तिः	आप.	1	अगस्त्यः		
2	अगस्तिः	बो.	3	आगस्त्यः	दार्ढ्यच्युतः	एध्मवाहः
3	अगस्तिः	का.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
4	अगस्त्यः	म.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
5	अघमर्षणः	बो.	3	वैश्वामित्रः	आघमर्षणः	कौशिकः
6	अजः	का.लौ.	3	वैश्वामित्रः	माधुच्छन्दसः	आजः
7	आजमीढः	आप.	3	आङ्गिरसः	आजमीढः	काण्वः
8	अत्रिः	म.बो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्यावाश्वः
9	अनूपः	का.लौ.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
10	अप्नवानः	म.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
11	अयास्यः	का.लौ.	3	आङ्गिरसः	आयास्यः	गौतमः
12	अरुणपराशरः	बो.म.	3	वासिष्ठः	शाक्त्यः	पाराशर्यः
13	आगस्त्यः	म.	3	आगस्त्यः	दार्ढ्यच्युतः	ऐध्मवाहः
14	आत्रेयः	का.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्यावाश्वः
15	आपस्तम्बः	बो.म.	3	आङ्गिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः
16	आपस्तम्बिः	लौ.का.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः आर्ष्टिषेणः	आनूपः
17	आयास्यः	बो.	3	आङ्गिरसः	आयास्यः	गौतमः
18	अर्ष्टिषेणः	बो.आप.म.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः आर्ष्टिषेणः	आनूपः
19	आर्ष्टिषेणः	आप.	3	भार्गवः	आर्ष्टिषेणः	आनूपः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः		
20	आश्वलायनः	लौ.का.	3	भार्गवः	वाध्यश्वः	दैवोदासः
21	आश्वलायनः	आप.	3	वासिष्ठः	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
22	आश्वलायनः	बो.	1	वासिष्ठः		
23	उच (त) थ्यः	म.	3	आङ्गिरसः	औच (त) थ्यः	औशिजः
24	उच (त) थ्यः	आ.का.	3	आङ्गिरसः	औच (त) थ्यः	गौतमः
25	उच (त) थ्यः	आ.	5	आङ्गिरसःऔच(त) थ्यः	गौतमः	औशिजः काक्षीवतः
26	उद्वाहः	म.	3	वासिष्ठः	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
27	उद्दालकः	म.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्वाश्वः
28	उपमन्युः	बो.म.	3	वासिष्ठः	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
29	और्वः	म.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः	और्वः जामदग्न्यः
30	औशिजः	आप.	3	आङ्गिरसः	औशिजः	काक्षीवतः
31	कण्वः	बो.का.लौ.	3	आङ्गिरसः	आजमीढः	काण्वः
32	कण्वः	म.	3	आङ्गिरसः	आ (सा)महीयवः	औरुक्षयः
33	कण्वः	आ.	3	आङ्गिरसः	घौरः	काण्वः
34	काण्वः	म.	3	वासिष्ठः	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
35	कर्णः	म.	3	आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः वान्दनः	मातवचसः
36	कर्दमः	म.	3	काश्यपः	आसितः	दैवलः
37	कश्यपः	बो.आप.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
38	कश्यपः	म.	3	काश्यपः आसितः	दैवलः	(शाण्डिलः)
39	कश्यपः	आ.	3	काश्यपः	आवत्सारः	आसितः
40	कश्यपिः	म.	3	भार्गवः	वैतहव्यः	सावेदासः
41	क्रतुः	म.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
42	कात्यायनः	म.	3	आंगिरसः	आ (सा) महीयवः	औरुक्षयः
43	कात्यायनः	आप.का.	3	वैश्वामित्रः	कात्यः	आक्षीलः
44	कात्यायनः	बो.का.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः आर्ष्टिषेणः	आनूपः
45	कात्यायनः	आप.	3	भार्गवः	आर्ष्टिषेणः	आनूपः
46	काविष्टिरः	बो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्यावाश्वः
47	कावेपावः	आप.	3	वैश्वामित्रः	दैवरातः	औदलः
48	काश्यपिः	मः	3	भार्गवः	वैतहव्यः	रैवसः
49	काश्यपेयः	म.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
50	कुण्डिनः	बो.आ.	3	वासिष्ठः	मैत्रावरुणः	कौण्डिन्यः
51	कुत्सः	आ.	3	आंगिरसः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः				
52	कुत्सः	आप.	3	आंगिरसः		मान्धात्रः		कोत्सः
53	कुशिकः	बो.का.लौ.	3	वैश्वामित्रः		दैवरातः		औदलः
54	कुशिकः	आप.	3	वैश्वामित्रः		आघमर्षणः		कौशिकः
55	कृष्णपराशरः	बो.म.	3	वासिष्ठः		शाक्त्यः		पराशर्यः
56	कृष्णात्रेयः	बो.	3	आत्रेयः		आर्चनानसः		श्यावाश्वः
57	कौण्डिन्यः	बो.	3	आंगिरसः		बार्हस्पत्यः		भारद्वाजः
58	कौथयः	म.	5	आङ्गिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः	वान्दनः	मातवचसः
59	कौथुमः	का.लौ.	5	आङ्गिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः	वान्दनः	मातवचसः
60	कौशिकः	म.	3	वैश्वामित्रः		आश्मरथ्यः		वाघुलः
61	गर्गः	का.लो.बो.	5	आङ्गिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः	शैन्यः	गार्ग्यः
62	गर्गः	आ.	5	आङ्गिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः	गार्ग्यः	शैन्यः
63	गर्गः	आ.	3	आङ्गिरसः		शैन्यः		गार्ग्यः
64	गर्दभ्यः	का.लौ.	5	भार्गवः	च्यावनः	आप्नवानः	आर्ष्टिषेणः	आनूपः
65	गर्दभीमुखः	का.लौ.	3	काश्यपः		आवत्सारः		वासिष्ठः
66	गर्दभः	म.	3	आङ्गिरसः		आजमीढः		काण्वः
67	गर्दभः	आ.	3	आङ्गिरसः		घौरः		काण्वः
68	गर्दभीमुखः	का.लौ.म.	3	काश्यपः		आसितः		दैवलः
69	गर्दभीमुखः	का.लौ.	3	शाण्डिलः		आसितः		दैवलः
70	गविष्ठिरः	आप.बो.	3	आत्रेयः		आर्चनानसः		पौर्वातिथिः
71	गविष्ठिरः	म.का.लौ.	3	आत्रेयः		गविष्ठिरः		पौर्वातिथिः
72	गविष्ठिरः	आप.	3	आत्रेयः		आर्चनानसः		गविष्ठिरः
73	गाधिनः	आप.	3	वैश्वामित्रः		गाधिनः		रैवणः
74	गार्गीयः	म.	3	भार्गवः		वैतहव्यः		रैवसः
75	गार्ग्यः	म.	3	आङ्गिरसः		तैत्तिरः		कापिभुवः
76	गार्ग्यः	बो.	5	आङ्गिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः	शैन्यः	गार्ग्यः
77	गार्ग्यः	आ.	3	आङ्गिरसः		शैन्यः		गार्ग्यः
78	गार्त्समदः	बो.	1	शौनकः				
79	गार्त्समदः	बो.	1	गार्त्समदः				
80	गार्दभ्यः	म.	5	भार्गवः	च्यावनः	आप्नवानः	आर्ष्टिषेणः	आनूपः
81	गालवः	म.	5	भार्गवः	च्यावनः	आप्नवानः	और्वः	जामदग्न्यः
82	गालवः	का.लौ.	3	वैश्वामित्रः		दैवरातः		औदलः
83	गृत्समदः	आ.	3	भार्गवः		शौनहोत्रः		गार्त्समदः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः		
84	गृत्समदः	लौ.का.म.	2	भार्गवः	गार्त्समदः	
85	गृत्समदः	लो.का.	1	गार्त्समदः		
86	गोभिलः	म.	3	काश्यपः	आसितः	दैवलः
87	गौतमः	आ.	3	आंगिरसः	आयास्यः	गौतमः
88	गौतमः	म.	3	आंगिरसः	औच (त) थ्यः	ओशिजः
89	गौतमः	का.	3	आंगिरसः	औच (त) थ्यः	गौतमः
90	गौरपराशरः	बो.म.	3	वासिष्ठः	शाक्त्यः	पाराशर्यः
91	गौरिवीतः	बो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	पौर्वातिथिः
92	घृतकौशिकः		2	वैश्वामित्रः	कापातरसः	
93	घोरः	आ.	3	आंगिरसः	घौरः	काण्वः
94	चान्द्रायणः	बो.	3	आंगिरसः	गौरुवीतः	साङ्कृत्यः
95	चैकः	का.लो.	3	वासिष्ठः	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
96	च्यवनः	म.	5	भार्गवः च्यवनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
97	जमदग्निः (वत्सः)	लो.का.म.	5	भार्गवः च्यवनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
98	जमदग्निः (अवत्सः)	म.	3	भार्गवः	च्यावनः	आप्नवानः
99	जातूकर्ण्यः	म.	3	वासिष्ठः	आत्रेयः	जातूकर्ण्यः
100	जातूकर्ण्यः	बो.	1	वासिष्ठः		
101	जातूकर्ण्यः	का.लो.	3	वासिष्ठः	आत्रेयः	जातूकर्ण्यः
102	जातूकर्ण्यः	आप.	3	वासिष्ठः	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
103	जाबालः	का.लो.	3	वैश्वामित्रः	दैवरातः	औदलः
104	जाबालिः	बो.	3	वैश्वामित्रः	दैवरातः	औदलः
105	जाबालिः	म.	3	भार्गवः	वैतभव्यः	रैवसः
106	जाबालिः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
107	जामदग्न्यः	आप.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
108	जामदग्न्यः	आप.	3	भार्गवः	और्वः	जामदग्न्यः
109	जैमिनिः	आ.	3	भार्गवः	वैतहव्यः	सावेदासः
110	दक्षः	का.लो.	3	आत्रेयः	गाविष्ठिरः	पौर्वातिथिः
111	दत्तात्रेयः	बो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्यावाश्वः
112	दार्ढच्युतः	बो.	3	आगस्त्यः	दार्ढ्यच्युतः	ऐध्मवाहः
113	दालभ्यः	का.लो.	3	आंगिरसः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
114	दालभ्यः	का.ल.	3	मान्धात्रः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
115	दिवावसिष्ठः	म.	3	काश्यपः	आवत्सारः	वासिष्ठः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः		
116	दिवोदासः	म.	3	भार्गवः	वाघ्रयश्वः	दैवोदासः
117	दीर्घतमसः	बो.	5	आंगिरसः	औच (त) थ्यः काक्षीवतः	गौतमः दैर्घतमसः
118	दीर्घतमसः	आ.	5	आंगिरसः	औच (त) थ्यः काक्षीवतः	गौतमः दैर्घतमसः
119	देवरातः	आ.प.	3	वैश्वामित्रः	दैवरातः	औदलः
120	देवरातः	का.लो.	3	वैश्वामित्रः	दैवश्रवसः	दैवतरसः
121	धनञ्जयः	आप.स.	3	वैश्वामित्रः	माधुच्छन्दसः	धानञ्जयः
122	धनञ्जयः	म.	3	वैश्वामित्रः	माधुच्छन्दसः	आघमर्षणः
123	धन्वन्तरिः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	शाण्डिल्यः
124	धन्वन्तरिः	बो.	3	शाण्डिलः	आसितः	दैवलः
125	धूम्रपाराशरः	बो.म.	3	वासिष्ठः	शाक्त्यः	पाराशर्यः
126	निध्रुवः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
127	नैध्रुवः	आ.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
128	पतञ्जनः	का.लो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्यताश्वः
129	पतञ्जलः	का.लो.बो.	3	आंगिरसः	आ (सा)महीयवः	औरुक्षयः
130	पराशरः	आप.बो.म.	3	वसिष्ठः	शाक्त्यः	पाराशर्यः
131	पाणिनिः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
132	पाणिनिः	स.का.लो.	3	वैश्वामित्रः	माधुच्छन्दसः	धानञ्जयः
133	पाणिनिः	म.	3	वैश्वामित्रः	माधुच्छन्दसः	आघमर्षणः
134	पारणः	म.	3	आगस्त्यः	पौर्णमासः	पाराणः
135	पार्थः	बो.	3	भार्गवः	वैन्यः	पार्थः
136	पुलस्तिः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	वैदः
137	पुलस्तिः	का.म.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
138	पुलहः	म.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
139	पौर्णमासः	म.	3	आगस्त्यः	पौर्णमासः	पारणः
140	पौलस्तिः	लो.का.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
141	पौलस्त्यः	म.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
142	पौलस्त्यः	म.	3	भार्गवः	च्यावनः	आप्नवानः
143	पौलस्त्यः	लो.का.म.	3	भार्गवः	और्वः	जामदग्न्यः
144	पौलहः	म.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
145	विदः	आ.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	बैदः
146	विदः	म.	3	भार्गवः	च्यावनः	आप्नवानः
147	बृहदुक्थः	आ.	3	आंगिरसः	बार्हदुक्थः	गौतमः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः		
148	बृहदुक्थः	का.लो.	3	आंगिरसः	बार्हदुक्थः	वामदेवः
149	बोधायनः	का.लो.	3	वासिष्ठः	आत्रेयः	जातूकर्ण्यः
150	ब्रौधायनः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	बैदः
151	भरद्वाजः	का.लो.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः शौङ्गः	शैशिरः
152	भरद्वाजः	म.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः मान्त्रवरः	आत्मभुवः
153	भरद्वाजः	बो.आप.	3	आंगिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः
154	भरद्वाजाग्निवेश्यः	आ.	3	आंगिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः
155	भार्गः	म.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
156	भारद्वाजः	म.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः मौद्गल्यः	शैशिरः
157	भारद्वाजायनिः	बो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्यावाश्वः
158	भारद्वाजायनः	बो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्यावाश्वः
159	भृगुः	लो.का.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
160	भृगवः	म.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
161	मयोभुवः	लो.का.म.	3	आगस्त्यः	माहेन्द्रः	मायोभुवः
162	माण्डव्यः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
163	माधुच्छन्दसः	का.लो.	3	वैश्वामित्रः	माधुच्छन्दसः	आजः
164	माध्यन्दिनिः	बो.	3	वासिष्ठः	मैत्रावरुणः	कौण्डिन्यः
165	मान्धाता	आ.	3	मान्धात्रः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
166	मान्धाता	बो.	3	आंगिरसः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
167	मान्धातुः	बो.	3	आंगिरसः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
168	मारीचः	म.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
169	मार्कण्डेयः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
170	माहुलः	बो.	3	वैश्वामित्रः	साहुलः	माहुलः
171	माहुलिः	बो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	श्यावाश्वः
172	मित्रयुः	बो.	3	भार्गवः	वाध्रयश्वः	दैवोदासः
173	मित्रावरुणः	का.लो.	3	वासिष्ठः	मैत्रावरुणः	कौण्डिन्यः
174	मुद्गलः	म.आ.	3	आंगिरसः	भार्म्यश्वः	मौद्गल्यः
175	मुद्गलः	बो.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	पौर्वातिथिः
176	मैत्रेयः	का.	3	काश्यपः	आवत्सारः	रैभ्यः
177	मौद्गलः	लो.का.	3	भार्गवः	वैतहव्यः	सावेदासः
178	मौद्गलः	लो.का.	3	आंगिरसः	भार्म्यश्वः	मौद्गल्यः
179	मौद्गलः	लो.का.	3	वासिष्ठः	मैत्रावरुणः	कौण्डिन्यः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः		
180	मौद्गल्यः	आप.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्व	जामदग्न्यः
181	याज्ञवल्क्यः	म.	1	वासिष्ठः		
182	यस्कः	बो.	3	भार्गवः	वैतहव्यः	सावेदासः
183	याज्ञवल्क्यः	का.	1	वासिष्ठः		
184	याज्ञवल्क्यः	आप.	3	वासिष्ठः	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
185	याज्ञवल्क्यः	आप.	3	वैश्वामित्रः	देवरातः	औदलः
186	रथीतरः	का.लो.	3	भार्गवः	वैतहव्यः	सावेदासः
187	रथीतरः	बो.	3	आंगिरसः	वैरूपः	रथीतरः
188	रहूगणः	आ.	3	आंगिरसः	वैरूपः	पार्षदश्वः
189	रहूगणः	बो.	3	आंगिरसः	राहूगण्यः	गौतमः
190	रेणुः	बो.	3	आंगिरसः	गौतमः	शारद्वन्तः
191	रेणुः	आ.	3	वैश्वामित्रः	गधिनः	रैणवः
192	रिभः	का.आप.आ.	3	काश्यपः	आवत्सारः	रैभ्यः
193	लौगाक्षिः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	वासिष्ठः
194	लौगाक्षिः	का.लो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	वासिष्ठः
195	लौगाक्षिः	का.लो.	3	आंगिरसः	औच (त) थ्यः	गौतमः
196	वत्सः	आप.	3	भार्गवः	और्वः	जामदग्न्यः
197	वत्सः	आप.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
198	वसिष्ठः	आ.म.बो.	1	वासिष्ठः		
199	वसिष्ठः	म.	3	वासिष्ठः	आत्रेयः	जातूकर्ण्यः
200	वात्सायनः	आप.	3	भार्गवः	और्वः	जामदग्न्यः
201	वात्सायनः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
202	वात्स्यः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्व	जामदग्न्यः
203	वात्स्यः	का.लो.	3	भार्गवः	च्यावनः	आप्नवानः
204	वात्स्यः	का.लो.	3	आंगिरसः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
205	वात्स्यः	लो.का.	3	मान्धात्रः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
206	वात्स्यः	का.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
207	वात्स्यायनः	म.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
208	वात्स्यायनः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
209	वात्स्यायनः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	शाण्डिल्यः
210	वात्स्यायनः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	दैवलः
211	वात्स्यायनः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	आसितः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः		
212	वात्स्यायनः	बो.	3	शाण्डिल्यः	आसितः	दैवलः
213	वाध्र्यश्वः	आप.	1	वाध्र्यश्वः		
214	वाध्र्यश्वः	आ.	3	भार्गवः	वाध्र्यश्वः	दैवोदासः
215	वाधूलः	बो.	3	भार्गवः	वैतहव्यः	सावेदासः
216	वामदेवः	आप.	3	आंगिरसः	वामदेवः	बार्हदुक्थः
217	वालखिल्यः	आप.	3	वैश्वामित्रः	दैवरातः	औदलः
218	वाल्मीकिः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
219	वासिष्ठः	बो.	1	वासिष्ठः		
220	वासिष्ठः	आप.	3	वासिष्ठः	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
221	बिदः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	वैदः
222	बिदः	लो.का.	3	भार्गवः	और्वः	जामदग्न्यः
223	विश्वामित्रः	का.लो.	3	वैश्वामित्रः	दैवरातः	औदलः
224	विश्वामित्रः	बो.	3	वैश्वामित्रः	माधुच्छन्दसः	आजः
225	विश्वामित्रः	का.	3	वैश्वामित्रः	आश्मरथ्यः	वाधुलः
226	विष्णुवृद्धः	म.आ.	3	आंगिरसः	पौरुकुत्सः	त्रासदस्यवः
227	विष्णुवृद्धः	का.लो.	3	आंगिरसः	पार्षदश्वः	राथीतरः
228	वीतहव्यः	आप.	3	भार्गवः	वेतहव्यः	सावेदासः
229	वीतहव्यः	म.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
230	वेणुः	आ.	3	वैश्वामित्रः	गाधिनः	वैणवः
231	वैन्यः	बो.	3	भार्गवः	वैन्यः	पार्थः
232	वैरूपः	बो.	3	आंगिरसः	वैरूपः	राथीतरः
233	वैरूपः	बो.	3	आंगिरसः	पार्षदश्वः	वैरूपः
234	वैरूपः	आप.	3	आष्टादंष्ट्रः	पार्षदश्वः	वैरूपः
235	शक्तिः	का.लो.	3	आंगिरसः	आ (सा) महीयवः	औरुक्षयः
236	शक्तिः	आ.	3	शाक्त्यः	गौरुवीतः	सांकृत्यः
237	शाण्डिलः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	शाण्डिल्यः
238	शाण्डिलः	वो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	दैवलः
239	शाण्डिलः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	आसितः
240	शाण्डिलः	आ.	3	काश्यपः	आसितः	दैवलः
241	शाण्डिलः	आ.बो.	3	शाण्डिल्यः	आसितः	दैवलः
242	शरद्वन्तः	बो.	3	आंगिरसः	गौतमः	शारद्वन्तः
243	शरद्वन्तः	बो.का.	3	काश्यपः	आवत्सारः	वासिष्ठः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	प्रवरर्षयः		
244	शरद्वन्तः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	आसितः
245	शाक्त्यः	आ.	3	शाक्त्यः	गौरुवीतः	सांकृत्यः
246	शाण्डिल्यः	आ.प.म.	3	काश्यपः	आसितः	दैवलः
247	शाण्डिल्यः	आप.	2	आसितः	दैवलः	
248	शाण्डिलिः	म.	1	वासिष्ठः		
249	शिशिरः	बो.	3	वैश्वामित्रः	कात्त्यः	आक्षीलः
250	शुङ्गशैशिरः	आप.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः कात्त्यः	आक्षीलः
251	शुनकः	बो.आप.	1	गार्त्समदः		
252	शुनकः	आ.	3	भार्गवः	शौनहोत्रः	गार्त्समदः
253	शुनकः	बो.	1	शौनकः		
254	शृङ्गः	बो.	3	आंगिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः
255	शैशिरः	का.लो.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः शौङ्गः	शैशिरः
256	शैशिरः	म.	3	काश्यपः	आवत्सारः	वासिष्ठः
257	श्यामपराशरः	बो.म.	3	वासिष्ठः	शाक्त्यः	पाराशर्यः
258	श्वेतपराशरः	बो.म.	3	वासिष्ठः	शाक्त्यः	पाराशर्यः
259	सङ्कृतिः	का.लो.बो.	3	आंगिरसः	सांकृत्यः	गौरुवीतः
260	साङ्कृत्यः	लो.का.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
261	सावर्णिः	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
262	सावर्णिः	आ.	3	भार्गवः	वैतहव्यः	सावेदासः
263	साहुलः		3	वैश्वामित्रः	साहुलः	माहुलः
264	सुवर्णरेतसः		2	वैश्वामित्रः	कापातरसः	
265	सोमवाहः	बो.आप.	3	आगस्त्यः	दार्ढ्यच्युतः	सौमवाहः
266	सोमराजकः	आ.	3	आंगिरसः	सौमराजः	गोतमः
267	हरितः	बो.	3	आंगिरसः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
268	हरितः	आ.	3	मान्धात्रः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
269	हरितः	बो.	1	वासिष्ठः		
270	हरितयः	का.लो.	1	वासिष्ठः		
271	हरित्यः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः
272	हिरण्यः	म.	3	आत्रेयः	आर्चनानसः	गाविष्ठिरः
273	हिरण्यः	का.	3	आत्रेयः	गाविष्ठिरः	पौर्वातिथिः
274	हिरण्यरेतसः		2	वैश्वामित्रः	हैरण्यरेतसः	
275	होता	बो.	3	काश्यपः	आवत्सारः	नैध्रुवः

अत्यावश्यक धर्मशास्त्रकारों ने—

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः। सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने॥

अर्थात् माता की असपिण्डा (मातृतः पञ्च-माता की पांच पीढ़ी के भीतर की न हो) साथ ही पिता की असगोत्रा (पितृतः सप्त-पिता की सात पीढ़ी के भीतर न हो, पिता के समान गोत्र की न हो) ऐसी कन्या से ही द्विजातियों को विवाह करना चाहिए। इसी प्रकार समान गोत्र, प्रवर में भी विवाह-सम्बन्ध नहीं करना चाहिए, अन्यथा वह सम्बन्ध बड़ा ही गर्हित होगा। इस प्रकार के वचन अनेक मिलते हैं। बड़ा ही खेद होता है कि आज इसका विचार विवाह के समय लोग नहीं करते। शास्त्रकार तो यहां तक लिखते हैं कि—

आरूढपतितापत्यं ब्राह्मण्यां यक्ष शूद्रजः। सगोत्रोढा सुतश्चैव चाण्डालास्त्रय ईरिताः॥

अर्थात् समान गोत्रवाली विवाहिता में उत्पादित सन्तान चाण्डाल होती है।

आज सम्पूर्ण भारत में अपनी सुविधानुसार निवास करने वाले सरयूपारीण ब्राह्मणों की संख्या का पता लगाना बहुत कठिन कार्य है। सन् 1891 ई. की उत्तरप्रदेशीय शासन द्वारा एक तालिका सरयूपारीण महासभा प्रयाग को मिली थी, उसे हम प्रकाशित कर रहे हैं। परन्तु इस बीच लगभग 107 वर्ष के अन्दर यह संख्या कहां तक पहुंची, इसका अनुमान पाठकगण स्वयं लगायें। साथ ही अन्य प्रदेशों की संख्या अलग होगी।

जिला	संख्या	जिला	संख्या	जिला	संख्या
देहरादून	291	तराई	17	हमीरपुर	27
मुजफ्फरनगर	108	उन्नाव	303	झांसी	251
बुलन्दशहर	38	सीतापुर	636	ललितपुर	64
मथुरा	209	खीरी	474	मिर्जापुर	152341
फरूखाबाद	807	गोंडा	197932	गाजीपुर	29936
इटावा	104	सुलतानपुर	155534	गोरखपुर	103728
बरेली	235	बाराबंकी	18565	आजमगढ़	1932
बदायूं	73	सहारनपुर	273	लखनऊ	23144
शाहजहांपुर	218	मेरठ	255	रायबरेली	29936
कानपुर	835	अलीगढ़	615	हरदोई	
बांदा	57392	आगरा	111	फैजाबाद	199937
इलाहाबाद	177975	मैनपुरी	239	बहराइच	41322
जालौन	28	एटा		प्रतापगढ़	123039
वाराणसी	77196	बिजनौर	120	पूर्णयोग	1909277
जौनपुर	146345	मुरादाबाद	79	उन्नीस लाख नौ हजार दो सौ	
बलिया	12630	पीलीभीत	355	सतहत्तर	
बस्ती	185086	फतेहपुर	6436		

हमारे समाज में जिन ग्रामों अथवा स्थानों के नाम से वंशों की प्रसिद्धि है, वे ही आस्पद कहे जाते हैं। जैसे—मामखोर ग्राम के पुरातन निवास से मामखोर के शुक्ल आदि। नीचे हम उपलब्ध वंशों-आस्पदों तथा उनके गोत्रों की तालिका दे रहे हैं।

शुक्ल वंश

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
अजनौरा	गर्ग	परसा पंक्ति	गर्ग
अमचाना पांक्तेय	गर्ग	परिगांवां पंक्ति	गर्ग
उमरहर	गर्ग	पिछौरा	कृष्णात्रि
ककनाही	गर्ग	बकवा	गर्ग
कनैल	गर्ग	वकरुआ	गर्ग
कुरमौल	गर्ग	बनगाईं	गर्ग
कौहाली	कौण्डिन्य	बयपोखरि पंक्ति	गर्ग
गढ़	गर्ग	बभनी	गर्ग
गंगौली पंक्ति	गर्ग	बहेरी	गर्ग
चान्दागढ़	गर्ग	बदिड़ा	गर्ग
अकोहरिया	गर्ग	बागापार	गर्ग
उचहरिया	गर्ग	छीछापार	गर्ग
एकला पैंक्ति	गर्ग	जिनवां	गर्ग
कटार पंक्ति	गर्ग	जंजन	गर्ग
करञ्जही	गर्ग	झौवा पंक्ति	गर्ग
कोल्हुवा	गर्ग	ढड़ोआ पंक्ति	गर्ग
खखाइजखोर पंक्ति	गर्ग	थरौली पंक्ति	पराशर
गौर	गर्ग	नगवा	गर्ग
धोरहटा पंक्ति	गर्ग	नेवारी	गर्ग
छितहा पंक्ति	गर्ग	पारसडीह	गर्ग
छिलहर	गर्ग	पिकौरा	गर्ग
छिवरा पंक्ति	गर्ग	पिपरा पंक्ति	गर्ग
जोरहरिया	गर्ग	बनकटा	गर्ग
ठांकर	गर्ग	बनगवां पंक्ति	गर्ग
तुर्कौलिया	गर्ग	बरहुचिया	गर्ग
घरहट	गर्ग	बडहरा	गर्ग
नमरहा	गर्ग	बसौढ़ी पंक्ति	गर्ग
नइफरिता	गर्ग	बांसपार	गर्ग

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
बिलौंड़ी	गर्ग	भादी	गर्ग
बुड़हरी	गर्ग	भेलखा पंक्ति	गर्ग
बेलौंड़ी	गर्ग	मगहरिया	गर्ग
बेलपोखरि	गर्ग	मामखोर पंक्ति	गर्ग
भरौलिया	गर्ग	मटियारी	गर्ग
भेंड़ी पंक्ति	गर्ग	महुली	गर्ग
भेलौजी	गर्ग	महुलियार	गर्ग
मझगवां पंक्ति	गर्ग	मुडा	गर्ग
महसों	गर्ग	मेहरा	गर्ग
महरिया	गर्ग	रुदायन	गर्ग
मलेन	गर्ग	लखनखोरी	गर्ग
मुड़फेकरा	गर्ग	लखनौरी	गर्ग
मुड़ेरी पंक्ति	गर्ग	सरांव बड़ा	गर्ग
रामनगर	गर्ग	सरदहा पंक्ति	गर्ग
रुद्रपुर पंक्ति	गर्ग	सियरापार	गर्ग
सथरी पंक्ति	गर्ग	सिरसा पंक्ति	गर्ग
सरांव छोटा पंक्ति	गर्ग	सुकुरौटी	कश्यप
सत्यकर	गर्ग	सरदापार	कश्यप
बिहरा	गर्ग	सिलहटा पंक्ति	गर्ग
बुड़हट मामखोर	गर्ग	सुकुलपुरी	गर्ग
बेपा पंक्ति	गर्ग	सुकुरौली	कश्यप
भखनौरा	गर्ग	सेखुई	कश्यप

मिश्र

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
अखरचन्दा	गौतम	गाना पंक्ति	वत्स
अमिहा	वत्स	गोवड़ौरा	वत्स
कटगैय्यां	गौतम	गौतम	वत्स
कपास गौतम	गौतम	चकौडा पंक्ति	गौतम
करोडीह	गौतम	चउरहा	गौतम
कोटवां	गौतम	अघैला पंक्ति	गौतम
खरडरगांव	गौतम	उमरी	वत्स
खेसी	वशिष्ठ	कविसा	गौतम

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
कारीगांव पंक्ति	गौतम	डुमरी पंक्ति	गौतम
कोहाली	कौण्डिन्य	तिलकपुर	गौतम
खेउसी	वशिष्ठ	धर्मपुरा	घृ. कौ.
खोली	वशिष्ठ	धोती गांव	गौतम
गैती	वत्स	नगवा	वत्स
गोपालपुर पंक्ति	वत्स	नवापार	वत्स
चकदहा	वत्स	नरईपुर पंक्ति	गौतम
चतरी	गौतम	पतिलाड पंक्ति	कश्यप
चम्पारन	गौतम	परसौनी	वत्स
चमुखा पंक्ति	गौतम	प्योली	वत्स
चमुआ पंक्ति	गौतम	पिडिया पयासी	गौतम
चचाई पंक्ति	गौतम	फरिया	गौतम
जिगिना	वत्स	बघौरा पंक्ति	वत्स
पिपरा	वत्स	बढ़नी	वशिष्ठ
डलिहा	वत्स	बनपखा पिपरा	वत्स
डोमरांव पंक्ति	गौतम	बस्ती पंक्ति	गौतम
दियावती	गौतम	बरई पार पंक्ति	गौतम
धरम मऊ	वत्स	बाऊ डीह	गौतम
धौरहा	पराशर	बांसगांव पंक्ति	गौतम
नगरहा पयासी	वत्स	बिजरा	वशिष्ठ
पड़रहा	कश्यप	वेइसी	गौतम
पयासी पंक्ति	वत्स	भभया	गौतम
प्रमानिका	वत्स	भार्गव पंक्ति	गौतम
पिपरा गौतम	गौतम	भैरवपुर	गौतम
गरियैयां	गौतम	मंझरिया पंक्ति	भारद्वाज
बखरियां	वत्स	मझौलिया पयासी पंक्ति	वत्स
बहोपुर	वशिष्ठ	मधुबनी पंक्ति	गौतम
बनकटा पयासी	वत्स	महावन	गौतम
बसन्तपुर	गौतम	ममिआरी	वत्स
चारडीह	गौतम	मामखोर	गर्ग
छपिया पयासी पंक्ति	वत्स	मिसिरमऊ	पराशर
टिउटा	वत्स	रतनपुर पंक्ति	गौतम

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
रामपुर	गौतम	मटियारी	गौतम
लगुनी	घृतकौशिक	मठिया पंक्ति	गौतम
सिसई	सावर्ण्य	मड़कड़ा	वत्स
ऐंदुरिया पंक्ति	गौतम	मलपुरा पंक्ति	वत्स
हरदिया	घृतकौशिक	महुई पंक्ति	गौतम
बालेडीहा	गौतम	मार्जनी मधुबनी	वशिष्ठ
ब्रह्मपुर	गौतम	मिश्रौलिया पंक्ति	गौतम
वेलउरा पयासी	वशिष्ठ	रत्नमाला पयासी पंक्ति	गौतम
भजया	गौतम	राल्ही	कश्यप
भरौलिया पंक्ति	गौतम	सुगौटी	कश्यप
भिटहा	वत्स	सिंहपुर पंक्ति	गौतम
भौरहा	भारद्वाज	सोनाखार	गौतम
मझौनी	घृतकौशिक	हथियाखार	गौतम

उपाध्याय

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
खोरिया	भारद्वाज	हरैयां	भारद्वाज
गौर	भारद्वाज	गजिपुरिहा	भारद्वाज
चौखरि	पराशर	चिकनियां	भारद्वाज
जोरहरिया	गर्ग	चौमुख	पराशर
दबयां	वत्स	बेसवा टोसवा	भारद्वाज
नहफरिया मंगा	वत्स	नयपुरा	भारद्वाज
व.शु.	गर्ग	निपनियां शु.	गर्ग
पीपरडीहा पंक्ति	गर्ग	पड़ैया डांड	गर्ग
विष्णुपुर	गर्ग	बरौली	गर्ग
मसौली	गर्ग	अड़सार	गर्ग
रुद्रपुर	गर्ग	रायमऊ	गर्ग
लखिमा	गर्ग	रेवली पयासी	वत्स
हड़गड़ी	गर्ग	लमकुरा	गर्ग
पकड़ी	भारद्वाज	हत्यरवा पिपरा	गर्ग

दीक्षित

कीलपुर	शाण्डिल्य

ओझा

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
असबन पार	उपमन्यु	ओझवली	उपमन्यु
ककुवा	उपमन्यु	करेली	उपमन्यु
खैरी	उपमन्यु	निर्मेज	उपमन्यु
निपनियां	कश्यप	बारीगांव	उपमन्यु
वेनुआं टीकर	कश्यप	रामडीह	उपमन्यु
मलावं	उपमन्यु	हरजानपुर	उपमन्यु
लगुनी	उपमन्यु	भैसढ़िया	कश्यप

द्विवेदी

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
अमवां	गर्ग	बेलवां	भारद्वाज
कूंचेला	भारद्वाज	मानघटी पंक्ति	भारद्वाज
करेइया	कृ. अ.	मरसडा	भारद्वाज
फोड़बरिया	गार्गेया	मुडहा	भारद्वाज
कंचनियां	गौतम	रजहठा	भारद्वाज
गुर्दवान	गौतम	रुपहुलिया	गौतम
छपवा	मौनस	लेजुरिहा	वत्स
कठकुआं	गर्ग	सरारि पंक्ति	भारद्वाज
कटुरिहा	कृष्णात्रि	सझवा	भारद्वाज
खरखदियां	गौतम	हड़गड़ी	भारद्वाज
गौरा पंक्ति	गौतम	सिंगेला	कश्यप
जलालपुर	गौतम	तिलसरा	भारद्वाज
कोड़रिहा	गर्ग	धाराधरी पंक्ति	भारद्वाज
तिवती	गौतम	नींवी	भारद्वाज
तेलौराकरण	गौतम	पड़रिहा	भारद्वाज
नकाही पंक्ति	भारद्वाज	पुंछेला	भारद्वाज
परवा	कश्यप	बढ़यापार पंक्ति	भारद्वाज
बड़गों	भारद्वाज	वत्सपार	कश्यप
बड़ा गांव	भारद्वाज	ब्रह्मी-ब्रह्मपुर	वत्स
बरपार	गौतम	बेलौंरा	भारद्वाज
ब्रह्मसारी	कश्यप	मझौवां पंक्ति	भारद्वाज

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
महुलिया	भारद्वाज	समदरिया	वत्स
मीठावेल	भारद्वाज	सभारी	भारद्वाज
रमलपुर पंक्ति	भारद्वाज	सहुआ	गौतम
लठियाही	भारद्वाज	सौरी रथ वर्ग	भारद्वाज

त्रिपाठी

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
अगोरी	शाण्डिल्य	कोठा	शाण्डिल्य
उनवलिया पंक्ति	शाण्डिल्य	कोहिला	शाण्डिल्य
भरुहिया	शाण्डिल्य	खजुली	वत्स
करवन पंक्ति	शाण्डिल्य	खोरमा	शाण्डिल्य
कपालगढ़ पंक्ति		पुरौली	भार्गव
कसिहारी	शाण्डिल्य	गौरखपुरिया	शाण्डिल्य
कुकुरगढ़िया	शाण्डिल्य	चरणारि	भार्गव
सोहगौरा		चेतिया पंक्ति	शाण्डिल्य
कोल्हुवा	कश्यप	चौरिहा	शाण्डिल्य
कोहाली	शाण्डिल्य	चौंसा	शाण्डिल्य
खमरौनी	भारद्वाज	छपरा	शाण्डिल्य
गुरम्ही	शाण्डिल्य	जोगिया	शाण्डिल्य
गोंगिया	शाण्डिल्य	झकही	शाण्डिल्य
गोण्डलिया	शाण्डिल्य	टांडा पंक्ति	शाण्डिल्य
चरथरि	शाण्डिल्य	डाइन वारी पंक्ति	शाण्डिल्य
चिउटहा	शाण्डिल्य	तिवारीपुर	शाण्डिल्य
चौका पंक्ति	शाण्डिल्य	दोसापार	शाण्डिल्य
चौधरी पट्टी	शाण्डिल्य	देउरवा पंक्ति	शाण्डिल्य
चन्द्रौटा पंक्ति	शाण्डिल्य	देवा	शाण्डिल्य
छितिउनी पंक्ति	शाण्डिल्य	धर्महरि	वर्त्तन्त
अतरौली	शाण्डिल्य	धानी पंक्ति	शाण्डिल्य
उकिना	शाण्डिल्य	निदिया	शाण्डिल्य
कलानी	शाण्डिल्य	नेवास छोटा बड़ा	शाण्डिल्य
कटियारी	शाण्डिल्य	नैया पार	शाण्डिल्य
कान्धापार	शाण्डिल्य	परसा पंक्ति	शाण्डिल्य

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
परतावल पंक्ति	शाण्डिल्य	भरुहिया पंक्ति	शाण्डिल्य
पींडी	शाण्डिल्य	भार्गव	शाण्डिल्य
पुहिला	वत्स	भांटी	शाण्डिल्य
पोरिहा	वत्स	भैंसहा	शाण्डिल्य
बदरा	शाण्डिल्य	मकदूमपुर पंक्ति	शाण्डिल्य
बसन्तपुरा पंक्ति	शाण्डिल्य	मणिकण्ठ	शाण्डिल्य
बसडाला पंक्ति	शाण्डिल्य	मदनपुर पंक्ति	शाण्डिल्य
झुनियां-झुंडिया पंक्ति	शाण्डिल्य	मुजौना पंक्ति	शाण्डिल्य
डारी डीहा पंक्ति	शाण्डिल्य	रणौली	शाण्डिल्य
डेहरा समार्जनी	शाण्डिल्य	रुद्रपुर पंक्ति	शाण्डिल्य
तुरहापट्टी	भार्गव	लोनापार	शाण्डिल्य
दुर्गौलिया	शाण्डिल्य	सुरया	शाण्डिल्य
देवरिया पंक्ति	शाण्डिल्य	सितिया	शाण्डिल्य
धतुरा	शाण्डिल्य	बारीडीहा	साङ्कृत्य
धर्मपुर पंक्ति	वर्त्तन्त	बिनवलिया पंक्ति	शाण्डिल्य
नदौली	शाण्डिल्य	बेदुवा	शाण्डिल्य
निर्मोहिया	शाण्डिल्य	भठवां	शाण्डिल्य
नैनसार	शाण्डिल्य	भरमहा	शाण्डिल्य
नौसड़िया	शाण्डिल्य	भाटपार	शाण्डिल्य
परसौनी	शाण्डिल्य	भार्गव परसौनी	भृगु
पहिला	शाण्डिल्य	भिटहा भाटी	शाण्डिल्य
पिपरपांति पंक्ति	शाण्डिल्य	भौआपार	शाण्डिल्य
पुरैना	वत्स	मगराइंच पंक्ति	शाण्डिल्य
बकिया	वशिष्ठ	महुलवार	शाण्डिल्य
बलुआ पंक्ति	शाण्डिल्य	माटे पंक्ति	शाण्डिल्य
बसानपुर पंक्ति	शाण्डिल्य	रखुवाखोर	शाण्डिल्य
पाला पंक्ति	शाण्डिल्य	रुइहा	शाण्डिल्य
बांसगांव	शाण्डिल्य	लखनापार	शाण्डिल्य
बिसुहिया	सांकृत्य	लोनाखार पंक्ति	शाण्डिल्य
बूढ़ीवारी पंक्ति	शाण्डिल्य	सिर्जम पंक्ति	शाण्डिल्य
बेदौलिया	कौशिक	सिसवां	शाण्डिल्य
भरवलिया	शाण्डिल्य	बसन्तपुर पंक्ति	शाण्डिल्य

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
इटिया पंक्ति	गर्ग	नथपुरा	सांकृत्य
सेमरी रथवर्ग	शाण्डिल्य	मसोढ़	कश्यप
सोनाई	शाण्डिल्य	हड़गड़ी	कश्यप
सोनौरी पंक्ति	शाण्डिल्य	तुर्कौलिया	उद्वाह
सोपरी	शाण्डिल्य	दुमटेकारी	सावर्ण्य
सोढ़ाचक	शाण्डिल्य	धमौली	पाराशर
शंकराचार्य दुर्गौलिया	शाण्डिल्य	नई	सांकृत्य
गजपुरीहा	शाण्डिल्य	नरहरिया	सावर्ण्य
धुरियापार	शाण्डिल्य	नागचौरी	वत्स
विष्णुपुर	गर्ग	नाउर देउर	सांकृत्य
मसौली	कश्यप	परसिया	कश्यप
तुलापुर	उद्वाह	पिपरा गौतम	भारद्वाज
दलीबपुर	सावर्ण्य	बनहां	वत्स
धर्महरि	वशिष्ठ	बधवा	सावर्ण्य
धवरहरा पंक्ति	पराशर	बड़हरिया	कौण्डिन्य
नकहट	सावर्ण्य	बारहगांव	कश्यप
नदुला पंक्ति	वत्स	वामपुर	कश्यप
नाथूपुर त्रिफला	वत्स	बिनछनैया	वत्स
इटोढ़ी पंक्ति	सावर्ण्य	बुढ़परिया	गौतम
इमलडीहा	वत्स	फरेंदा	सावर्ण्य
सेंवई	शाण्डिल्य	बतगैयां	कश्यप
सोनहुला	शाण्डिल्य	बड़हरा	भारद्वाज
सोहगौरा पंक्ति	शाण्डिल्य	वशिष्ठ	वशिष्ठ
साहरना पंक्ति	शाण्डिल्य	बारहसेनी पंक्ति	कश्यप
सौरेजी	शाण्डिल्य	बांसपार	वत्स
शेकनहां	शाण्डिल्य	विष्टवल	वत्स
चौमुखा	शाण्डिल्य		

चतुर्वेदी (चौबे)

आस्पद	गौत्र
कुशौरा	कात्यायन
एकौना	सावर्ण्य

पाण्डेय

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
अगस्तिया	अगस्त	जामडीह पिछौरा	सावर्ण्य
अष्ट कपाल	अ.सा.	जोरवा	सावर्ण्य
भटगवां पंक्ति	गौतम	खुटवा	कश्यप
भसमा	सावर्ण्य	तुरोया	उद्‌वाह
भेलौरा	सांकृत्य	त्रिफला पंक्ति	कश्यप
मड़रिहा	वत्स	साहुकोल	सावर्ण्य
मचइयां	भारद्वाज	सिसई	सावर्ण्य
अधुर्य्य	कश्यप	लहसड़ी	सावर्ण्य
आसापुरी	कश्यप	सखरुआ	सावर्ण्य
भट्टाचारी	सावर्ण्य	कटयां	सांकृत्य
भयुरहा	सावर्ण्य	कोहड़ा	सावर्ण्य
मझरिया	वत्स	गुंडेगांव	गर्ग
मलांव	सांकृत्य	चारपानी	सावर्ण्य
मैनछियां	शाण्डिल्य	जगदीशपुर	वत्स
रकहट	सावर्ण्य	तरयापार	पराशर
सरयां	सावर्ण्य	सावर्ण्यटिकरा	सावर्ण्य
सनफेरखा	वत्स	शिला	पराशर
ककेढ़ा	सावर्ण्य	हरदही	सांकृत्य
कोनी	सावर्ण्य	भिनहरी	वत्स
चमरूपट्टी	सावर्ण्य	धमौली	पराशर

पाठक

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
खरहटिया	कश्यप	देउवापार	भारद्वाज
बिजोर	कश्यप	बूढ़ीपार	भारद्वाज
मगहरिया	भारद्वाज	लखनापार	भारद्वाज
सोनौरा	भारद्वाज	मसोड़	भारद्वाज

सरयूपारीण ब्राह्मण कुल में ही पंक्तिपावन मिलते हैं, जिनके सम्बन्ध में भगवान् मनु ने तृतीयाध्याय में—

अपाङ्क्त्योपहता पंक्तिः पाल्यते यैर्द्विजोत्तमैः। तान्निबोधत कात्स्न्येंन द्विजाग्रान् पंक्तिपावनान्॥

इस श्लोक के द्वारा चर्चा की है। सरयूपार का ही अपभ्रंश सरवार शब्द से व्यवहृत होता है, जिसके प्रमाणस्वरूप मत्स्यपुराण में–

अयोध्या दक्षिणे यस्याः सरयूतटगः पुनः।
सारवावारदेशोऽयं गौडास्तदनु कीर्त्तिताः॥

अर्थात् अयोध्या वही नगरी है, जिसके दक्षिण भाग में सरयू नदी है, उससे सम्बद्ध भूखण्ड सरवार कहा जाता है, उसके अतिरिक्त गौड़ देश, गौड़ ब्राह्मणों की निवास भूमि है। सरयूपारीणों में परम्परावश–

गर्गश्च गौतमश्चैव शाण्डिल्यश्च पराशरः।
सावर्ण्यः कश्यपोऽत्रिश्च भरद्वाजोऽथ गालवः॥
कौशिको भार्गवश्चैव वत्सः कात्यायनोऽङ्गिराः।
शाङ्कृतो यामदग्न्यश्च षोडशैते प्रतिष्ठिताः॥

कहीं पर–

कौशिको भार्गवश्चैव वत्सो वात्स्यायनस्तथा।
अङ्गिराश्च्यवनश्चैव यमदग्निश्च षोडश॥

कहीं पर–

गर्गश्च गौतमश्चैव शाण्डिल्यश्च पराशरः।
सावर्णिः कश्यपो वत्सो भरद्वाजश्च कौशिकः॥
उपमन्युर्वशिष्ठश्च साङ्कृतो घृतकौशिकः।
गार्ग्यः कात्यायनश्चैव तथा स्याद् गर्दभीमुखः।
अगस्त्यो भृगुभर्गौ च कुण्डिन्यश्च तथैव हि॥

इस प्रकार प्रधान रूप से 16 गोत्रों की चर्चा मिलती है। परम्परावश हमारे समाज में यह तीन तथा 13 का भेद चला आ रहा है। परन्तु आज ऐसा समय नहीं है कि हम अपने चतुर्वेदी, पाठक तथा उपाध्याय बन्धुओं को शुक्ल, मिश्र, त्रिपाठी आदि की अपेक्षा नीच ब्राह्मण कहें। ये सभी अपने-अपने ब्राह्मकर्मानुसार, आचारानुसार, विद्यानुसार योग्य हैं। सबका परस्पर व्यवहार उचित है। उच्चता तथा नीचता स्वकर्मानुसार ही बन सकती है। इसमें किसी प्रकार का प्रमाण नहीं कि ये ब्राह्मण जन्मना उच्च हैं और ये नीचे हैं। अतः उस मूर्खतापूर्ण ईर्ष्या-द्वेष के जनक व्यवहार को छोड़कर समानरूप से व्यवहार ही उचित है।



वंशवृद्धिकरं वंशकवचम्

प्रस्तुत वंशवृद्धिकर वंशकवच सन्तान-प्राप्ति के लिए अत्यधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण कवच है। विश्वास और श्रद्धा-भक्तिपूर्वक इसका नित्यप्रति पाठ करने से किसी प्रकार की भी सन्तान-बाधा, भूत-प्रेतादि बाधा, ग्रह बाधा, देव बाधा एवं शत्रुकृत समस्त बाधाएं विनष्ट हो जाती हैं और शीघ्र ही दीर्घजीवी सन्तान की प्राप्ति होती है।

भगवन्! देव देवेश कृपया त्वं जगत्प्रभो।
वंशाख्यकवचं ब्रूहि मह्यं शिष्याय तेऽनघ।
यस्य प्रभावाद् देवेश वंशवृद्धिर्हि जायते॥1॥

सूर्य उवाच

शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि वंशाख्यं कवचं शुभम्।
सन्तानवृद्धिर्यत् पाठाद् गर्भरक्षा सदा नृणाम्॥2॥
वन्ध्याऽपि लभते पुत्रं काकवन्ध्या सुतैर्युता।
मृतवत्सा सपुत्रा स्यात् स्त्रवद्-गर्भा स्थिरप्रजा॥3॥
अपुत्रा पुष्पिणी यस्य धारणाच्च सुखप्रभुः।
कन्या प्रजा पुत्रिणी स्यादेतत् स्तोत्र-प्रभावतः॥4॥
भूत-प्रेतादिजा बाधा या बाधा कुलदोषजा।
ग्रहबाधा देवबाधा बाधा शत्रुकृता च या॥5॥
भस्मी भवन्ति सर्वास्ताः कवचस्य प्रभावतः।
सर्वे रोगा विनश्यन्ति सर्वे बालग्रहाश्च ये॥6॥
पूर्वे रक्षतु वाराही चाग्नेय्यामम्बिका स्वयम्।
दक्षिणे चण्डिका रक्षेन् नैर्ऋत्यां शववाहिनी॥7॥
वाराही पश्चिमे रक्षेद् वायव्यां च महेश्वरी।
उत्तरे वैष्णवी रक्षेदीशान्ये सिंहवाहिनी॥8॥
ऊर्ध्वं तु शारदा रक्षेदधो रक्षतु पार्वती।
शाकम्भरी शिरो रक्षेन् मुखं रक्षतु भैरवी॥9॥
कण्ठं रक्षतु चामुण्डा हृदयं रक्षताच्छिवा।
ईशानी च भुजौ रक्षेत् कुक्षिं नाभिं च कालिका॥10॥
अपर्णा ह्युदरं रक्षेत् कटिं वस्तिं शिवप्रिया।
ऊरू रक्षतु कौमारी जया जानुद्वयं तथा॥11॥

गुल्फौ पादौ सदा रक्षेद् ब्रह्माणी परमेश्वरी।
सर्वाङ्गानि सदा रक्षेद् दुर्गा दुर्गार्ति-नाशिनी ॥12॥
नमो देव्यै महादेव्यै दुर्गायै सततं नमः।
पुत्रसौख्यं देहि देहि गर्भरक्षां कुरुष्व नः ॥13॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ऐं ऐं ऐं महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीरूपायै नवकोटिमूर्त्यै दुर्गायै नमः, ह्रीं ह्रीं ह्रीं दुर्गार्तिनाशिनी सन्तानसौख्यं देहि देहि, वन्ध्यत्वं मृतवत्सत्वं च हर हर गर्भरक्षां कुरु कुरु, सकलां बाधां कुलजां बाह्यजां कृतामकृतां च, नाशय नाशय सर्वगात्राणि रक्ष गर्भं पोषय पोषय, सर्वोपद्रवं शोषय शोषय स्वाहा।

अनेन कवचेनाऽङ्गं सप्तवाराऽभिमन्त्रितम्।
ऋतुस्नाता जलं पीत्वा भवेद् गर्भवती ध्रुवम् ॥14॥
गर्भपातभये पीत्वा दृढगर्भा प्रजायते।
अनेन कवचेनाथ मार्जिताया निशागमे ॥15॥
सर्वबाधा-विनिर्मुक्ता गर्भिणी स्यान्न संशयः।
अनेन कवचेनेह ग्रन्थितं रक्तदोरकम् ॥16॥
कटिदेशे धारयन्ती सुपुत्रसुखभागिनी।
असूत पुत्रमिन्द्राणी जयन्तं यत्प्रभावतः ॥17॥
गुरूपदिष्टं वंशाख्यं कवचं तदिदं सखे।
गुह्याद् गुह्यतरं चेदं न प्रकाश्यं हि सर्वतः।
धारणात् पठनादस्य वंशच्छेदो न जायते ॥18॥
बाला विनश्यन्ति पतन्ति गर्भास्तत्राऽबलाः कष्टयुताश्च वन्ध्याः।
बालग्रहैर्भूतगणैश्च रोगैर्न यत्र धर्माचरणं गृहं स्यात् ॥19॥

इति श्रीज्ञानभास्करे वंशवृद्धिकरं वंशकवचं समाप्तम्।



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

* ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड—खेमराज श्री कृष्णदास
* जाति भास्कर—खेमराज श्री कृष्णदास
* भारत में जाति प्रथा—मोतीलाल बनारसीदास
* ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण—नीता प्रकाशन
* भारतीय ब्राह्मण की गोत्रावली—पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा (पानीपत वाले)
* जगिड ब्राह्मण गोत्रावली—सुकृति प्रकाशन

उपरोक्त सभी पुस्तकें 'डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स', 110, चावड़ी बाजार से प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष नोट

जो ब्राह्मण सज्जन अपने परिवार व मित्रगण में पुस्तक वितरण या मांगलिक उत्सव में बांटना चाहें, तो आप हमसे सम्पर्क करें व पुस्तकें लागत मूल्य पर प्राप्त करें।

प्राचीन

सामुद्रिक शास्त्र

(सम्पूर्ण दोनों भाग)

लेखक

प्रेम कुमार शर्मा

शरीर लक्षण एवं आकृति विज्ञान के साथ सम्पूर्ण हस्तक्षेप विज्ञान, जिसमें चित्रों द्वारा एक-एक रेखाओं एवं रेखाओं से बने योगों को समझाया गया है। सामुद्रिक विज्ञान की इन दोनों शाखाओं के समस्त विवरणों से युक्त एक सम्पूर्ण ग्रन्थ।

विश्व की प्रथम पुस्तक, जिसमें हाथ एवं शरीर के निर्माण और हस्तरेखाओं की उत्पत्ति के रहस्यों को भी बता रहे हैं प्रसिद्ध साधक प्रेम कुमार शर्मा। केवल एक ग्रन्थ को पढ़ने के बाद किसी भी जिज्ञासु को अन्य कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

प्रस्तुत पुस्तक में हस्तरेखा से भविष्य दर्शन और हस्तरेखा के प्राचीन विशिष्ट योगों का भी विस्तृत वर्णन है।

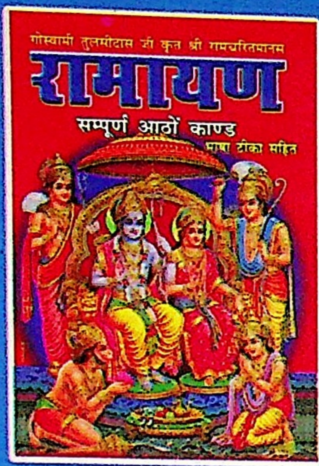
Set Rs 1500/-

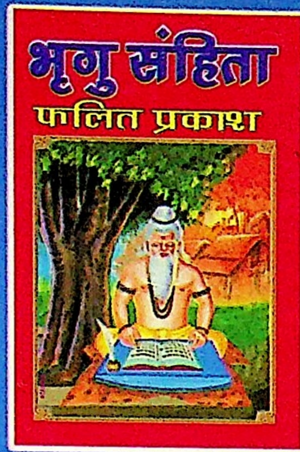
डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

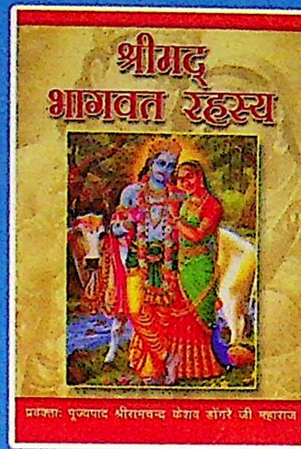
110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6

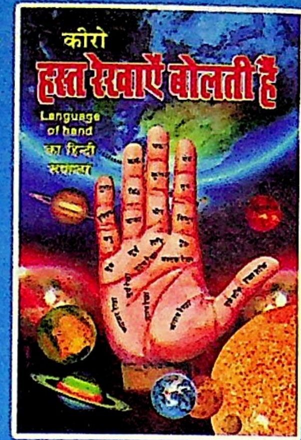
फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

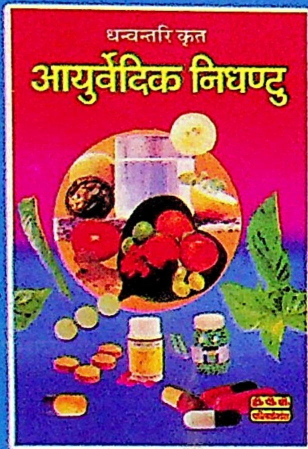
E-mail : dpbpublications@yahoo.in





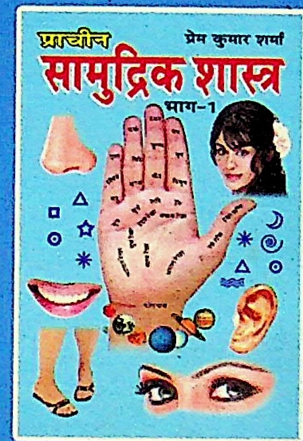


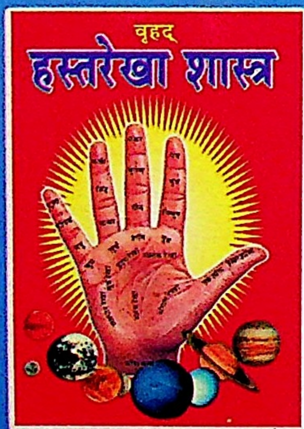


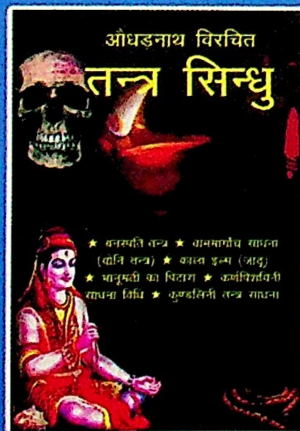


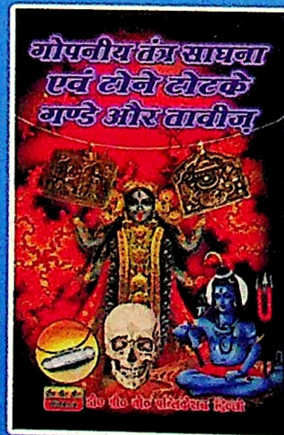


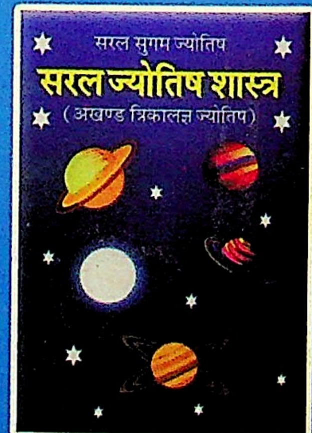












सभी प्रकार की धार्मिक, इण्डस्ट्रियल, टैक्नीकल, ज्योतिष एवम् ग्रंथ आदि की पुस्तके प्राप्त करने का एकमात्र स्थान

डी॰ पी॰ बी॰ पब्लिकेशंस

110 चौक बड़शाहबुल्ला, पो॰ बॉक्स 2037, चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006 फोन : 23273220, 23251630